गीतों और सुलेमान

के दृष्टान्त

की पुस्तक।

गीतों की पुस्तक।

पहिला गीत।

१ वह मनुष्य क्या ही धन्य है जो पापियों के मत पर
नहीं चला और अपराधियों के पथ पर नहीं खड़ा
२ हुआ और निन्दकों की सभा में नहीं बैठा है। परन्तु
परमेश्वर की व्यवस्था में उस की प्रसन्नता है और
उस की व्यवस्था पर वह दिन रात ध्यान करेगा।
३ और वह उस पेड़ के समान होगा जो जल की
धारों पर लगाया गया जो अपना फल अपने ऋतु
पर देगा और उस के पत्ते न मुरझायेंगे और जो वह
४ करेगा सब भाग्यमानी से करेगा। अधर्म्मी ऐसे नहीं
परन्तु उस भूसे के समान हैं जिसे बयार उड़ा ले
जाती है।
५ इस कारण से अधर्म्मी न्याय में और अपराधी
६ धर्म्मियों की सभा में खड़े न रहेंगे। क्योंकि परमेश्वर
धर्म्मियों का मार्ग जानता है पर अधर्म्मियों का मार्ग
नष्ट हो जायगा।

दूसरा गीत।

१ अन्यदेशी किस लिये हुल्लर मचाते हैं और लोग
२ अनर्थ चिन्ता करते हैं। जगत के राजा साम्हना करते
हैं और प्रधान परमेश्वर और उस के मसीह के बिरुद्ध
३ आपस में परामर्श करते हैं। कि आओ हम उन के

बंधनों को तोड़ डालें और उन की रस्सियों को अपने
पास से फेंक देवें।

स्वर्ग पर बैठा हुआ वह हंसेगा परमेश्वर उन्हें ४
ठट्ठों में उड़ावेगा। तब वह अपने कोप में उन से बातें ५
करेगा और अपने महा कोप से उन्हें कंपायेगा। और ६
मैं ने अपने राजा को अपने पवित्र पहाड़ सैहून पर
स्थिर किया है।

मैं नियम को वर्णन करूंगा परमेश्वर ने मुझ से ७
कहा कि तू मेरा पुत्र है मैं ने आज तुझे उत्पन्न किया।
मुझ से मांग और मैं अन्यदेशियों को तेरे बश में और ८
पृथिवी के सिवानों को तेरे अधिकार में देऊंगा। तू ९
उन्हें लोहे के राजदण्ड से तोड़ेगा कुम्हार के पात्र की
नाईं उन्हें चूर चूर कर डालेगा।

और अब हे राजाओ बुद्धिमान होओ हे पृथिवी के १०
न्याइयो उपदेश को ग्रहण करो। डर के साथ परमेश्वर ११
की सेवा करो और कांपते हुए आनन्द करो। पुत्र १२
को चूमो कि वह रिसिया न जाय और तुम बगद के
नाश हो क्योंकि उस का क्रोध शीघ्र भड़केगा उस के
समस्त भरोसा रखनेहारे क्या ही धन्य हैं।

तीसरा गीत।

दाऊद का गीत जब वह अपने बेटे अबिसलूम
के साम्हने से भागा।

हे परमेश्वर मेरे दुखदायक क्या ही बढ़ गये बहुतेरे
मेरे बिरुद्ध उठते हैं। बहुतेरे मेरे प्राण को कहते हैं कि
उस के लिये ईश्वर से कुछ मुक्ति नहीं है। सिलाह।

३ और तू हे परमेश्वर मेरे चहुंओर ढाल मेरी प्रतिष्ठा
४ और मेरा ऊंचा करनेहारा है। जब मैं अपने शब्द से
परमेश्वर को पुकारता हूं तब वह अपने पवित्र पहाड़
पर से मुझे उत्तर देता है। सिलाह।
५ मैं लेट गया और सो रहा और जाग उठा हूं
६ क्योंकि परमेश्वर मेरी रक्षा करता है। मैं जातिगण
के सहस्रों के सहस्र से न डरूंगा जिन्हें उन्हों ने चारों
ओर मेरे बिरोध में रक्खा है।
७ हे परमेश्वर उठ हे मेरे ईश्वर मुझे बचा क्योंकि
तू ने मेरे सारे बैरियों के गाल पर थपेड़े मारे हैं तू
८ ने अधर्म्मियों के दांत तोड़े हैं। परमेश्वर ही से मुक्ति
है तेरे लोगों पर तेरी आशीष हो। सिलाह।

चौथा गीत।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों पर
दाऊद का गीत।

१ हे मेरे धर्म्म के ईश्वर जब मैं पुकारूं तब मुझे उत्तर
दे कष्ट में तू ने मुझे छुड़ाया मुझ पर दया कर और
मेरी प्रार्थना सुन ले।
२ हे मनुष्य के पुत्रो कब लों मेरी प्रतिष्ठा लाज में
बदलती जायगी कब लों तुम बृथा को प्रीति करोगे
३ और झूठ के पीछे रहोगे। सिलाह। और जानो कि
परमेश्वर ने धर्म्मी को अपने लिये अलग कर लिया
है जब मैं परमेश्वर को पुकारूं तब वह सुन लेगा।
४ क्रोध करके पाप न करो अपने बिछौने पर अपने

मन में कहो और चुप रहो। सिलाह। धर्म्म के बलिदान ५
चढ़ाओ और परमेश्वर पर भरोसा करो।
बहुतेरे कहते हैं कि हमें कौन भलाई दिखावेगा हे ६
परमेश्वर अपने स्वरूप की ज्योति हम पर उदय कर।
जिस समय से उन का अनाज और उन की दाखरस ७
अधिक हो गई तू ने मेरे मन को अति आनन्द किया
है। चैन में मैं एकही साथ लेटूंगा और सो जाऊंगा ८
क्योंकि तू ही हे परमेश्वर अकेला मुझे चैन में रहने देगा।

पांचवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये अधिकारों के विषय में दाऊद का गीत।

हे परमेश्वर मेरी बातों पर कान धर मेरे सोच १
पर ध्यान रख। हे मेरे राजा और मेरे ईश्वर मेरी २
दोहाई के शब्द को सुन क्योंकि मैं तुझ ही से प्रार्थना
करूंगा। हे परमेश्वर तू बिहान को मेरा शब्द सुनेगा ३
बिहान को मैं अपनी प्रार्थना को सिद्ध करूंगा और
ताकता रहूंगा।

क्योंकि तू वह सर्बशक्तिमान नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न ४
हो दुष्ट तेरे साथ न रहेगा। घमंडी तेरी आंखों के ५
साम्हने खड़े न रहेंगे तू सारे कुकर्म्मियों से घिन करता
है। तू मिथ्यावादियों को नाश करेगा बधिक और ६
छली से परमेश्वर घिन रक्खेगा। और मैं तेरी दया ७
की बहुताई से तेरे घर में आऊंगा तेरे पवित्र मन्दिर
की ओर तेरे डर के साथ दण्डवत करूंगा।
हे परमेश्वर मेरे बैरियों के कारण से अपने धर्म्म ८

में मेरी अगुआई कर मेरे आगे अपने मार्ग को सीधा
९ कर। क्योंकि उस के मुंह में कुछ सच्चाई नहीं उन का
मन ही दुष्ट है उन का गला खुली हुई समाधि है वे
१० अपनी जीभ को चिकनी करते हैं। हे ईश्वर उन्हें दोषी
ठहरा वे अपने परामर्शों से आप ही गिर जायेंगे उन
के अपराधों की बहुताई में उन्हें धकिया दे क्योंकि
उन्हों ने तुझ से बिरोध किया है।
११ और तेरे सारे भरोसा रखनेहारे मगन होंगे वे
सदा आनन्द करेंगे और तू उन पर आड़ करेगा और
तेरे नाम के प्रीति रखनेहारे तुझ से आनन्दित होंगे।
१२ क्योंकि हे परमेश्वर तू ही धर्म्मी को आशीष देगा ढाल
की नाईं तू उसे कृपा से ढांपेगा।

छठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों के साथ
आठवीं पर गाया जाय दाऊद का गीत।

१ हे परमेश्वर अपनी रिस से मुझे मत दपट और
२ न अपने कोप की तपन से मुझे दण्ड दे। हे परमेश्वर
मुझ पर दया कर क्योंकि मैं कुम्हला गया हे परमे-
श्वर मुझे चंगा कर क्योंकि मेरी हड्डियां थर्थराती हैं।
३ और मेरा प्राण बहुत थर्थराता है और तू हे परमे-
४ श्वर कब लों। हे परमेश्वर फिर आ मेरे प्राण को
५ छुड़ा अपनी दया के कारण मुझे बचा। क्योंकि मृत्यु
में तेरा कुछ स्मरण नहीं समाधि में कौन तेरा धन्यबाद
६ करेगा। मैं अपने कराहने से थक गया हर रात अपने
बिछौने को भिगाऊंगा अपनी सेज अपने आंसुओं से

भिगाऊंगा । मेरी आंख खिजाहट से धुंधला गई मेरे ७
सारे बैरियों के कारण बुढ़ा गई ।
हे सारे कुकर्म्मियो मुझ से दूर होओ क्योंकि पर- ८
मेश्वर ने मेरे रोने का शब्द सुना है। परमेश्वर ने ९
मेरी बिनती सुनी है परमेश्वर मेरी प्रार्थना ग्रहण
करेगा । मेरे सारे बैरी लज्जित और अत्यन्त थर्थरा १०
जायेंगे वे पलट जायेंगे और अकस्मात् लज्जित होंगे।

सातवां गीत ।

दाऊद की डंवांडोली का गीत जो उस ने परमेश्वर के
लिये बिनयमीनी कूश के बचनों के विषय में गाया।

हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा १
रक्खा है मेरे सारे सतानेहारों से मुझे बचा और मुझे
छुड़ा । न होवे कि वह सिंह के नाईं मेरे प्राण को २
फाड़े टुकड़े टुकड़े करे और कोई छोड़वैया न हो ।
हे परमेश्वर मेरे ईश्वर यदि मैं ने यह किया हो ३
यदि मेरे हाथों में टेढ़ाई हो । यदि मैं ने अपने मित्र ४
से बुराई किई हो और जो अकारण मेरा बैरी था उसे
लूटा हो । तो बैरी मेरे प्राण का पीछा करे और ५
पकड़ ले और मेरे जीवन को पृथिवी पर लताड़े और
मेरी प्रतिष्ठा को धूल में मिलावे । सिलाह ।
हे परमेश्वर अपने क्रोध में उठ मेरे बैरियों के कोपों ६
के मध्य में आप को ऊंचा कर और मेरे लिये जाग
न्याय की आज्ञा तू ने किई है। और लोगों की मण्डली ७
तुझे घेरे और तू उस के ऊपर ऊंचे पर फिर जा ।
परमेश्वर लोगों का न्याय करेगा हे परमेश्वर मेरे ८

धर्म्म और मेरी खराई के समान जो मेरे ऊपर है मेरा
९ न्याय कर। हाय कि दुष्टों की बुराई नाश हो और
तू धर्म्मी को दृढ़ करे और हे धर्म्मी ईश्वर तू मनों
और अन्तःकरणों का जांचनेहारा है।
१० मेरी ढाल ईश्वर पर है जो खरे मनों का बचानेहारा
११ है। ईश्वर धर्म्मी का बिचार करता है और सर्वशक्ति-
१२ मान प्रतिदिन क्रोधित है। यदि वह न फिरे तो वह
अपनी तलवार पर बाढ़ धरेगा उस ने अपने धनुष
१३ को चढ़ाया और उसे लैस किया है। और उस ने उस
की ओर मृत्यु के हथियार साधे हैं वह अपने बाणों
को जलनेवाले बनावेगा।
१४ देखो उसे बुराई की पीड़ होगी और उसे अपकार
१५ का गर्भ रहेगा और झूठ को जनेगा। उस ने कुआ
खोदा और उसे गहिरा किया है और उस गड़हे में
१६ आपही गिरा है जिसे वह बनाता है। उस का अपकार
उस के सिर पर लौट आयेगा और उस की खोपड़ी
१७ पर उस का उपद्रव उतरेगा। मैं परमेश्वर की स्तुति
उस के धर्म्म के समान करूंगा और परमेश्वर अति
महान के नाम की स्तुति में गाऊंगा।

आठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये गित्तीत पर दाऊद का गीत।

१ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तेरा नाम सारी पृथिवी
पर क्या ही बिभवमय है अपनी इस महिमा को स्वर्गों
२ के ऊपर प्रकाश कर। तू ने अपने बैरियों के लिये

जिसतें बैरी और पलटालेनेहारे को चुप करे बालकों
और दूधपीवकों के मुंह से शक्ति की नेव डाली है।
जब मैं तेरे स्वर्गों तेरे हाथों की क्रिया चांद और ३
तारों को जिन्हें तू ने ठहराया है देखता हूं। तो मरणहार ४
मनुष्य क्या है कि तू उस का चेत करे और मनुष्य का
पुत्र क्या कि तू उस पर दृष्टि करे। और उसे ईश्वरता ५
से थोड़ा सा छोटा करे और बिभव और प्रतिष्ठा का
मुकुट उस पर रक्खे। और अपने हाथ के कार्य्यों पर ६
उसे प्रभुता देवे तू ने सब कुछ उस के पांवों के नीचे
रक्खा है। झुण्ड और गाय बैल सब के सब और जंगल ७
के बनपशु भी। आकाश के पक्षी और समुद्र की मछ- ८
लियां और जो समुद्र के पथों में चलते हैं।
हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तेरा नाम सारी पृथिवी ९
पर क्या ही बिभवमय है।

नवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये पुत्र की मृत्यु पर दाऊद का गीत।

मैं अपने सारे मन से परमेश्वर की स्तुति करूंगा १
तेरे सारे आश्चर्य्यों का बर्णन करूंगा। मैं तुझ में २
आनन्द और आल्हाद करूंगा हे अति महान मैं तेरे
नाम की स्तुति में गाऊंगा।
जब मेरे बैरी पलट जायेंगे तब वे तेरे आगे से ३
ठोकर खायेंगे और नाश होंगे। क्योंकि तू ने मेरा ४
झगड़ा और मेरा न्याय चुकाया है तू सच्चाई से न्याय
करते हुए सिंहासन पर बैठा है। तू ने अन्यदेशियों को ५

दपटा दुष्ट को नष्ट किया उन का नाम सदा के लिये
६ मिटा डाला है । बैरी की दुष्टतायें सर्बदा के लिये
समाप्त हुईं और तू ने उन के नगरों को उजाड़ा है
७ उन का स्मरण उन्हीं के साथ मिट गया । और परमेश्वर
सदा लों बिमान पर बैठा रहेगा उस ने न्याय के लिये
८ अपने सिंहासन को स्थापित किया है। और वही धर्म्म
के साथ संसार का बिचार करेगा खराई के साथ लोगों
९ का न्याय करेगा । और परमेश्वर सताये हुए के लिये
ऊंचा स्थान होगा ऊंचा स्थान दुख के समयों में ।
१० और तेरे नाम के जान्नेहारे तुझ पर भरोसा रक्खेंगे
क्योंकि हे परमेश्वर तू ने अपने खोजियों को नहीं
छोड़ा है ।

११ परमेश्वर जो सैहून में बास करता है उस की
स्तुति में गाओ लोगों में उस के बड़े कार्य्यों का बर्णन
१२ करो । क्योंकि लोहू का लेखा लेते हुए उस ने उस
का स्मरण किया है वह दुखियों की दोहाई को नहीं
भूला ।

१३ हे परमेश्वर मुझ पर दया कर मेरे दुख को जो मेरे
बैरियों से है देख तू कि मृत्यु के द्वारों से मेरा उठाने-
१४ हारा है । जिसते मैं सैहून की बेटी के द्वारों में तेरी
सारी स्तुति बर्णन करूं तेरी मुक्ति से आनन्दित होऊं ।
१५ अन्यदेशी उस गड़हे में जिसे उन्हों ने खोदा धंस गईं
उस फंदे में जिसे उन्हों ने छिपाया उन्हीं का पांव फंसा ।
१६ परमेश्वर जाना गया उस ने न्याय किया है दुष्ट अपने
ही हाथों के कार्य्य में फंस गया । हिग्गायून । सिलाह ।

दुष्ट समाधि लों पलट जायेंगे हां ईश्वर को भूलने- १७
हारे सारे जातिगण। क्योंकि कंगाल सदा भुलाया १८
न जायगा और न दीनों की आशा सदा लों नष्ट होगी।
उठ हे परमेश्वर मरणहार मनुष्य प्रबल न होने १९
पावे अन्यदेशियों का बिचार तेरे आगे किया जावे।
हे परमेश्वर उन्हें भय में डाल जातिगण जानें कि हम २०
मरणहार मनुष्य हैं। सिलाह।

दसवां गीत।

हे परमेश्वर तू किस लिये दूर खड़ा रहता है सकेती १
के समयों में अपने तईं छिपाता है। दुष्ट के अहङ्कार २
से दुखी जलता है वे उन जुगुतों में जो उन्हों ने
निकाली हैं फंस जाते हैं। क्योंकि दुष्ट अपने प्राण की ३
लालसा पर बड़ाई किया करता है और अपनी इच्छा
पूरी करके परमेश्वर को धन्य कहता और उस की
निन्दा करता है। दुष्ट अपने अहङ्कार में परमेश्वर ४
का खोजी न होगा उस की सारी चिन्तायें ये हैं कि
ईश्वर है ही नहीं। उस के मार्ग हर घड़ी स्थिर रहते ५
हैं तेरे न्याय उस की दृष्टि से ऊंचे हैं वह अपने सारे
बैरियों पर फूंक मारता है। उस ने अपने मन में ६
कहा है कि मैं न टलूंगा पीढ़ी से पीढ़ी लों मैं वही
हूं जो बिपत्ति में न पड़ूंगा। उस का मुंह धिक्कार और ७
कपट और अंधेर से भरा है उस की जीभ के तले
अपकार और बुराई हैं। वह गांव के दूकों में बैठता ८
है गुप्त स्थानों में निर्दोष को घात करता है उस की
आंखें दुखी के लिये छिपती हैं। वह सिंह की नाईं ९

जो अपनी झाड़ी में हो गुप्त स्थान में ढूके में रहता
है वह दुखी के पकड़ने के लिये ताक में रहता है दुखी
१० को अपने जाल में खेंचके पकड़ता है। और वह दबके
बैठ जाता है और उस के बलवन्तों से दुखी गिर पड़ते
११ हैं। उस ने अपने मन में कहा है कि सर्बशक्तिमान
भूल गया उस ने अपना मुंह छिपाया है उस ने कभी
नहीं देखा।

१२ हे परमेश्वर उठ हे सर्बशक्तिमान अपना हाथ बढ़ा
१३ दुखियों को न भूल। किस कारण से दुष्ट ने ईश्वर
को तुच्छ जाना और अपने मन में कहा है कि तू
१४ पूछ पाछ न करेगा। तू ने देखा है क्योंकि तू अपकार
और खिजाहट को देखता है जिसतें अपने हाथ में
रक्खे दुखी तुझ पर अपना बोझ छोड़ता है अनाथ
१५ का उपकारी तू ही हुआ है। दुष्ट की भुजा तोड़ और
बुरे मनुष्य की दुष्टता को तू ढूंढ़ेगा और उसे न पायेगा।
१६ परमेश्वर सनातन से सनातन लों राजा रहेगा
१७ जातिगण उस की भूमि से नष्ट हुये। हे परमेश्वर तू
ने दीनों की इच्छा सुनी है तू उन के मनों को दृढ़
१८ करेगा अपना कान धरके सुनेगा। जिसतें अनाथ और
सताये हुए का न्याय करे मरणहार मनुष्य जो पृथिवी
से है फिर बिरुद्ध न करेगा।

ग्यारहवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत।

१ मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है तुम क्योंकर
मेरे प्राण से कहोगे कि चिड़िया की नाईं तुम अपने

पहाड़ पर भाग जाओ। क्योंकि देखो दुष्ट धनुष को चढ़ाया चाहते हैं उन्हों ने अपना बाण पनच पर चढ़ाया है जिसतें खरे मनवालों को अंधेरे में मारें। क्योंकि खंभा गिरा चाहते हैं धर्म्मी ने क्या किया है।

परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में है परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग पर है उस की आंखें देखती हैं उस की पलकें मनुष्य के संतानों को परखती हैं। परमेश्वर धर्म्मी को जांचता है और दुष्ट और अंधेर के प्रेमी से उस का आत्मा घिन करता है। वह दुष्टों पर फंदे आग और गंधक बरसावेगा और भयङ्कर आंधी उन के कटोरे का भाग होगी। क्योंकि परमेश्वर धर्म्मी है वह धर्म्म को प्यार करता है उस का रूप खरे जन को देखता है।

बारहवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये आठवीं पर दाऊद का गीत।

हे परमेश्वर बचा क्योंकि साधु जन हो चुका क्योंकि बिश्वासी मनुष्य के संतान में से क्षीण हो गये। वे हर एक अपने परोसी से झूठ बोलते हैं चापलूसी के होंठ और दोहरे मन से बातें करते हैं। परमेश्वर सारे चापलूसी के होंठों को और उस जीभ को जो बड़ा बोल बोलती है काट डाले। जिन्हों ने कहा है कि हम अपनी जीभ से जीतेंगे हमारे होंठ हमारे साथ हैं कौन हमारा प्रभु है।

दुखियों की दरिद्रता से और कंगालों की ठंढी सांस से परमेश्वर बोला चाहता है कि अब मैं उठूंगा मैं

उसे जो उस के लिये हांफता है चैन में रक्खूंगा ।
६ परमेश्वर की बातें पवित्र बातें हैं पृथिवी के महान
मनुष्य के लिये ताई हुई हां सात बार निर्मल किई
७ हुई चांदी हैं । हे परमेश्वर तू ही उन्हें रक्षा में रक्खेगा
८ तू उसे इस पीढ़ी से सदा लों बचावेगा । दुष्ट चारों
ओर चलते फिरते हैं पर मनुष्य के संतान के लिये
उन की यह नीचाई मानो ऊंचाई है ।

तेरहवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ।

१ हे परमेश्वर तू कब लों मुझे सनातन लों भूला
२ रहेगा तू कब लों अपना मुंह मुझ से छिपावेगा । मैं
कब लों अपने प्राण में परामर्श और अपने मन में
शोक प्रतिदिन रक्खूंगा मेरा बैरी कब लों मुझ पर
ऊंचा रहेगा ।

३ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर दृष्टि कर मेरी सुन मेरी
आंखें उंजियाली कर कदाचित मैं मृत्यु में सोऊं ।
४ कदाचित मेरा बैरी कहे कि मैं ने उसे जीता और
मेरे बिरोधी जब मैं टल जाऊंगा आनन्द करें ।
५ और मैं ने तेरी दया पर भरोसा रक्खा है मेरा
६ मन तेरी मुक्ति से आनन्द करे । मैं परमेश्वर की
स्तुति गाऊंगा क्योंकि उस ने मुझ से अच्छा व्यवहार
किया है ।

चौदहवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ।

१ मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर है ही

नहीं उन्हों ने बिगाड़ किया घिनौने कार्य्य किये हैं
कोई सुकर्म्मी नहीं। परमेश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्य २
के संतान पर झांका जिसतें देखे कि कोई बुद्धिमान
है अर्थात् ईश्वर को ढूंढ़ता अथवा नहीं। वे सब के ३
सब भटक गये वे एक ही साथ बिगड़ गये कोई धर्म्मी
नहीं एक भी नहीं।

क्या यह सारे कुकर्म्मी नहीं जानते जो मेरे लोगों ४
को खाते जैसे रोटी खाते हैं और परमेश्वर का नाम
नहीं लेते। वहां वे बहुत ही डरे क्योंकि ईश्वर धर्म्मी ५
के बंश में है। तुम दुखी के परामर्श की निरादर ६
करोगे क्योंकि परमेश्वर उस का शरणस्थान है।

हाय कि परमेश्वर के अपने बंधुवे लोगों के पास ७
फिर आने में सैहून से इसराएल की मुक्ति हो तब
यअ़कूब आनन्दित और इसराएल मगन हो।

पंदरहवां गीत।

दाऊद का गीत।

हे परमेश्वर तेरे तंबू में कौन रहेगा तेरे पवित्र १
पहाड़ में कौन बास करेगा।

अपने मन से सीधा चलते हुए और धर्म्म करते २
हुए और सच बोलते हुए। उस ने अपनी जीभ से ३
चुगली नहीं किई अपने परोसी की हानि नहीं किई
और अपने परोसी पर अपबाद नहीं लगाया। निकम्मा ४
उस की आंखों में निन्दित है और वह परमेश्वर के
डरवैयों की प्रतिष्ठा करता है उस ने अपनी हानि
करनेहारी किरिया खाई और न पलटेगा। उस ने ५

अपना रोकड़ ब्याज के लिये नहीं दिया और न निर्दोषी
के लिये अकोर लिया है यही करते हुए वह सदा लों
न टलेगा ।

सोलहवां गीत ।

दाऊद का भेद ।

१ हे सर्वशक्तिमान मेरी रखवाली कर क्योंकि मैं ने
तुझ पर भरोसा रक्खा है ।
२ हे मेरे प्राण तू ने परमेश्वर से कहा है कि तू ही
३ प्रभु है मेरी भलाई तुझ बिना नहीं । उन साधुन के
संग जो पृथिवी पर हैं और उत्तमों के जिन में मेरा
सारा आनन्द है ।
४ उन के शोक बहुत होंगे जिन्हों ने आन देव के
संग गठिबंधन किया है उन के लोहू के तपावन मैं
न तपाऊंगा और न अपने होंठों से उन के नाम
५ लूंगा । परमेश्वर मेरा ठहराया हुआ भाग और मेरा
६ कटोरा है तू ही मेरे पासे को बढ़ती देगा । नापने
की रस्सियां मेरे लिये मनभावने स्थानों में पड़ी हैं
हां मेरा अधिकार सुथरा है ।
७ मैं परमेश्वर का धन्य मानूंगा जिस ने मुझे मंत्र
दिया है हां रात को मेरे अंतःकरण ने मुझे सिखाया
८ है । मैं ने परमेश्वर को सदा अपने साम्हने रक्खा
९ है क्योंकि वह मेरे दहिने हाथ है मैं न टलूंगा । इस
लिये मेरा मन मगन हुआ और मेरे बिभव ने
१० आनन्द किया हां मेरा शरीर चैन से रहेगा । क्योंकि
तू मेरा प्राण समाधि को न सौंपेगा तू अपने धर्म्ममय

को सड़ने न देगा । तू मुझे जीवन का मार्ग बतलावेगा ११
तेरे आगे आनन्द की भरपूरी है तेरे दहिने हाथ में
सनातन का बिलास है ।

सत्रहवां गीत ।

दाऊद की प्रार्थना ।

हे परमेश्वर धर्म्म को सुन मेरे उस चिल्लाने पर १
सुरत लगा मेरी उस प्रार्थना पर कान धर जो निष्कपट
होंठों से है । मेरा न्याय तेरे आगे से होगा तेरी आंखें २
खराइयों को देखेंगी । तू ने मेरे मन को परखा रात ३
को तू मेरे पास आया तू ने मुझे ताया तू कुछ न
पावेगा मेरा मुंह मेरे ध्यान से अधिक न बढ़ेगा । तेरे ४
होंठों के बचन के द्वारा से जो मनुष्य के संतान के
कार्य्यों के बिषय में है मैं ने अपने को नाशक के पथों
से बचा रक्खा है । मेरे डगों ने तेरे पथों को पकड़ा ५
मेरे पांव नहीं टले ।

मैं ने तुझे पुकारा है क्योंकि हे सर्वशक्तिमान तू ६
मुझे उत्तर देगा अपना कान मेरी ओर झुका मेरी
बात सुन । हे तू कि अपने दहिने हाथ से अपने आश्रितों ७
को उन के बैरियों से बचाता है उन पर अपनी दया
को मुख्य कर । आंख की पुतली की नाईं मेरी रक्षा ८
कर तू अपने पंखों के छाया तले मुझे छिपावेगा । दुष्टों ९
के साम्हने से जिन्हों ने मुझे बिगाड़ा है मेरे प्राण के
बैरी मुझे घेर लेंगे । वे अपनी चिकनाई में ढंप गये १०
उन्हों ने अपने मुंह से घमंड में शब्द उच्चारा है । अब ११
उन्हों ने हमारे हर डग पर हमें घेरा है वे अपनी

आंखें लगाये रहेंगे जिसतें भूमि पर सीधे मार्ग से हट
१२ जायें । उस की सादृश्य सिंह की सी है वह फाड़ने
चाहता है और युवा सिंह की सी जो गुप्त स्थानों में
१३ बैठता है । हे परमेश्वर उठ उस का साम्हना कर उसे
झुका दे अपनी तलवार से मेरे प्राण को दुष्ट से बचा ।
१४ अपने हाथ से हे परमेश्वर मेरे प्राण को मनुष्यों से
बचा हां मनुष्यों से और संसार से उन का भाग इसी
जीवन में है और तू अपने छिपे हुए धन से उन का पेट
भर देगा वे लड़कों से सन्तुष्ट होंगे और अपनी बचती
१५ अपने बच्चों के लिये छोड़ जायेंगे । मैं धर्म्म में तेरा मुंह
देखूंगा जब मैं जागूंगा तब तेरे रूप से तृप्त होऊंगा ।

अठारहवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये परमेश्वर के सेवक दाऊद का गीत जिस ने परमेश्वर से इस गीत की बातें कहीं जिस दिन परमेश्वर ने उसे उस के सारे बैरियों के पंजे से और साऊल के हाथ से छुड़ाया और कहा ।

१ हे परमेश्वर मेरे बल मैं तुझे प्यार करूंगा ।
२ परमेश्वर मेरी चटान और मेरा गढ़ और मेरा छुड़वैया
है मेरा सर्ब्बशक्तिमान मेरी चटान है मैं उस पर भरोसा
रक्खूंगा मेरी ढाल और मेरी मुक्ति का सींग मेरा
३ ऊंचा स्थान । मैं परमेश्वर को जो स्तुति के योग्य है
पुकारूंगा और अपने बैरियों से बच जाऊंगा ।
४ मृत्यु के बंधनों ने मुझे घेरा है और दुष्टता की
५ बाढ़ें मुझे डराया करेंगी । समाधि के बंधनों ने मुझे
६ घेरा मृत्यु के फंदों ने मेरा साम्हना किया है । मैं अपनी

सकेती में परमेश्वर को पुकारूंगा और अपने ईश्वर
की दोहाई दूंगा वह अपने मन्दिर से मेरा शब्द सुनेगा
और मेरी दोहाई उस के आगे हां उस के कानों में
पहुंचेगी। तब पृथिवी कांपी और थर्थराई और पहाड़ों ७
की नेवें हिल गईं और थर्थरा गईं क्योंकि वह क्रोधित
था। उस के क्रोध से धूआं उठा और उस के मुंह की ८
आग भस्म करती है अंगारे उस्से धधके। और उस ९
ने स्वर्गों को झुकाया और नीचे उतरा और उस के
पांव तले घटा थी। और वह करोबी पर चढ़ा और १०
उड़ा और उस ने पवन के डैनों पर उड़ान किया। उस ने ११
अपने चारों ओर अंधियारे को अपनी ओट ठहराया
अपनी आड़ पानी का अंधेरा बादलों की घटायें। उस १२
चमक से जो उस के आगे थी उस के बादल हट गये ओले
और अंगारे। तब परमेश्वर स्वर्गों में गर्जा और अति १३
महान ने अपना शब्द उच्चारा ओले और अंगारे। तब १४
उस ने अपने बाण चलाये और उन्हें छिन्न भिन्न किया
और बिजुलियां चमकाईं और उन्हें घबरा दिया। तब १५
हे परमेश्वर तेरी डांट से और तेरे क्रोध के स्वास के
झोंके से पानी की नालियां देख पड़ीं और जगत की
नेवें खुल गईं।

वह ऊपर से अपना हाथ बढ़ायेगा मुझे ले लेगा १६
मुझे बड़े पानी में से खैंच लेगा। वह मेरे बैरी से १७
मुझे छुड़ावेगा क्योंकि वह बलवन्त है और मेरे डाह
रखनेहारों से क्योंकि वे मुझ से अति बली हैं। वे मेरी १८
बिपत्ति के दिन मेरा साम्हना करेंगे और परमेश्वर

१९ मेरे लिये टेक हुआ है। और मुझे फैलाव स्थान में
लाया वह मुझे बचावेगा क्योंकि वह मुस्से प्रसन्न है।
२० परमेश्वर मेरे धर्म्म के समान मुझ से व्यवहार
करेगा मेरे हाथों की पवित्रता के समान वह मुझे
२१ प्रतिफल देगा। क्योंकि मैं ने परमेश्वर के मार्गों को
२२ मनन किया है और अपने ईश्वर से न फिरा। क्योंकि
उस के सारे न्याय मेरे साम्हने हैं और उस की बिधिन
२३ को मैं अपने से दूर न करूंगा। और मैं उस के साथ
निर्दोष रहा और आप को अपनी बुराई से बचा रक्खा।
२४ और परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के समान और मेरे हाथों
की पवित्रता के समान जो उस की आंखों के साम्हने
थी मुझे प्रतिफल दिया है।
२५ साधु के साथ तू अपने तईं साधु दिखावेगा सज्जन
२६ मनुष्य के साथ तू अपने तईं सज्जन दिखावेगा। पवित्र
किये हुए के साथ तू अपने तईं पवित्र दिखावेगा और
२७ टेढ़े के साथ तू अपने तईं टेढ़ा दिखावेगा। क्योंकि
तू ही दुखी लोगों को बचावेगा और ऊंची आंखों को
२८ नीची करेगा। क्योंकि तू ही मेरा दीपक बारेगा
परमेश्वर मेरा ईश्वर मेरे अंधियारे को उंजियाला
२९ करेगा। क्योंकि मैं तेरी सहाय से जथा पर दौड़ूंगा
और अपने ईश्वर की सहायता से भीत फांदूंगा।
३० अर्थात् सर्बशक्तिमान से जिस का मार्ग शुद्ध है परमेश्वर
का बचन ताया गया है वह अपने सारे आश्रितों के
३१ लिये ढाल है। क्योंकि परमेश्वर को छोड़ कौन ईश्वर
है और हमारे ईश्वर को छोड़ कौन चटान है।

अर्थात् सर्बशक्तिमान को छोड़ जो मेरी कटि दृढ़ता ३२
से बांधता है और जिस ने मेरा मार्ग शुद्ध किया है।
जो मेरे पांव को हरिणियों के से बनाता है और मेरी ३३
ऊंचाइयों पर मुझे खड़ा करता है। जो मेरे हाथों को ३४
युद्ध करना सिखाता है और मेरी बांहों ने पीतल
का धनुष झुकाया है। और तू ने मुझे अपनी मुक्ति ३५
की ढाल दिई है और तेरा दहिना हाथ मुझे संभालेगा
और तेरी कोमलता मुझे बढ़ावेगी। तू मेरे डगों को ३६
मेरे नीचे बढ़ावेगा और मेरे घुठने न हटेंगे। मैं अपने ३७
बैरियों का पीछा करूंगा और उन्हें जा लूंगा और
पीछे न फिरूंगा जब लों वे नाश न हों। मैं उन्हें ३८
पटक दूंगा और वे उठ न सकेंगे वे मेरे पांव के नीचे
गिर पड़ेंगे। और तू ने सङ्ग्राम के लिये मेरी कटि ३९
दृढ़ता से बांधी है तू मेरे बिरोधियों को मेरे नीचे
झुकावेगा। और तू ने मेरे बैरियों की पीठ मुझे दिखाई ४०
और मैं अपने शत्रुओं को नाश करूंगा। वे दोहाई ४१
देंगे और कोई बचानेहारा नहीं परमेश्वर की और
वह उन की नहीं सुनता है। और मैं उन्हें धूल की ४२
नाईं जो बयार के आगे है पीस डालूंगा मार्गों की
कीच की नाईं उन्हें फेंक दूंगा। तू मुझे लोगों के झगड़ों ४३
से छुड़ावेगा तू मुझे अन्यदेशियों का अध्यक्ष ठहरावेगा
जिन लोगों को मैं ने नहीं जाना वे मेरी सेवा करेंगे।
कान से सुनते ही वे मुझे मानेंगे परदेशियों के बंश ४४
मुझ से झूठ बोलेंगे। परदेशियों के बंश मुरझा जायेंगे ४५
और अपने बाड़ों से थर्थरा जायेंगे।

४६ परमेश्वर जीवता है और धन्य मेरी चटान और
४७ मेरी मुक्ति का ईश्वर महान होगा। अर्थात् सर्बशक्ति-
मान जो मेरा पलटा लेता है और जिस ने जातिगणें
४८ को मेरे नीचे दबाया है। जो मुझे मेरे बैरियों से
छुड़ाता है हां मेरे बिरोधियों से तू मुझे ऊंचा करेगा
४९ अंधेरी मनुष्य से तू मुझे छुड़ावेगा। इस लिये हे परमेश्वर
मैं जातिगणें में तेरा धन्य मानूंगा और तेरे नाम की
५० स्तुति में गीत गाऊंगा। जो अपने राजा को बड़ी बड़ी
मुक्ति देता है और अपने अभिषिक्त अर्थात् दाऊद और
उस के बंश पर सनातन लों दया करता है।

उन्नीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत।

१ स्वर्ग सर्बशक्तिमान की महिमा बर्णन करते हैं और
२ आकाश उस के हाथों के कर्म्म का सन्देश देते हैं। एक
दिन दूसरे दिन से बातें बर्णन किया करता है और
३ एक रात दूसरी रात को ज्ञान देती रहती है। न उन
का कुछ शब्द है और न उन की कोई बातें उन का
४ शब्द तनिक भी नहीं सुना जाता। सारी पृथिवी में
उन की रेखा पड़ी है और जगत के अन्त लों उन की
बातें हैं सूर्य्य के लिये उस ने उन में तंबू खड़ा किया
५ है। और वह दुल्हे के नाईं अपने एकान्त स्थान से
निकलता है बलवन्त के नाईं मार्ग में दौड़ने से आ-
६ नन्दित रहता है। स्वर्गों के खूंट से उस का निकलना
और उस का चक्र उन के अन्त लों है और उस की
घाम से कुछ छिपा नहीं है।

परमेश्वर की व्यवस्था शुद्ध आत्मा को यथावस्थित ७
करनेवाली है परमेश्वर की साक्षी सच्ची भोलों को
बुद्धिमान करनेवाली है । परमेश्वर की बिधि ठीक ८
मन को मगन करनेवाली हैं परमेश्वर की आज्ञा
पवित्र आंखों को उंजियाला करनेवाली है । परमेश्वर ९
का भय पवित्र सर्बदा लों ठहरता है परमेश्वर के
बिचार सच्चे और सम्पूर्ण धर्म्ममय हैं । जो सोने और १०
बहुत चोखे सोने से अधिक चाहने के योग्य और
मधु और उस के छत्तों के टपकनेवाले से अधिक मीठे
हैं । इस्से अधिक तेरा दास उन से उंजियाला पाता ११
है उन के कण्ठ करने में बड़ा ही फल है ।

भूल चूक के पापों को कौन समझेगा तू मुझे इन १२
गुप्त पापों से शुद्ध ठहरा । अपने दास को साहस के १३
पापों से भी बचा रख उन्हें मुझ पर राज्य करने मत
दे तब मैं सिद्ध होऊंगा और बहुत अपराध से निर्दोष
होऊंगा । तब हे परमेश्वर मेरी चटान और मेरे त्राण- १४
कर्त्ता मेरे मुंह की बातें और मेरे मन का सोच जो
तेरे साम्हने है ग्राह्य होंगे ।

बीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ।

परमेश्वर बिपत्ति के दिन तेरी सुने यअक़ूब के १
ईश्वर का नाम तुझे उंचाई पर रक्खे । पवित्र स्थान से २
तुझे सहाय भेजे और सैहून से तुझे संभाले । तेरी ३
सारी भेंटों को स्मरण करे और तेरे होम के बलिदान
को ग्राह्य करे । सिलाह । तेरे मन के समान तुझे ४

५ देवे और तेरे सारे परामर्शों को पूरा करे । हम तेरी
मुक्ति से आनन्दित होवें और अपने ईश्वर के नाम
से झंडा खड़ा करें परमेश्वर तेरी सारी बिनतियां पूरी
करे ।
६ अब मैं ने जाना है कि परमेश्वर ने अपने दहिने
हाथ के मुक्ति देनेहारे बल से अपने अभिषिक्त को
बचाया है वह अपने पवित्र स्वर्गों से उस की सुनेगा ।
७ ये गाड़ियों का और वे घोड़ों का और हम परमेश्वर
८ अपने ईश्वर के नाम का स्मरण करेंगे । वे झुके और
गिर पड़े हैं और हम उठे और सीधे खड़े हुए हैं ।
९ हे परमेश्वर बचा जिस दिन कि हम पुकारें राजा
हमारी सुने ।

इक्कीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ।

१ हे परमेश्वर राजा तेरे बल से आनन्द होगा और
२ तेरी मुक्ति से क्या ही बहुत मगन होगा । तू ने उस
के मन की इच्छा उसे दिई है और उस के होंठों की
३ बिनती को उस्से नहीं रोका । सिलाह । क्योंकि तू
भलाई की आशीषों के साथ उस के आगे आवेगा
४ उस के सिर पर चोखे सोने का मुकुट रक्खेगा । उस
ने तुझ से जीवन मांगा तू ने उसे जीवन की बढ़ती
५ सर्बदा के लिये दिई । तेरी मुक्ति से उस का बिभव
बड़ा होगा प्रतिष्ठा और महिमा तू उस के ऊपर रक्खेगा ।
६ क्योंकि तू उसे सर्बदा के लिये आशीषें ठहरावेगा तू
अपने रूप से उस को आनन्द से आनन्दित करेगा ।

क्योंकि राजा परमेश्वर पर भरोसा करता है और
अति महान की दया से वह न टलेगा।

तेरा हाथ तेरे सारे बैरियों को ढूंढ़ निकालेगा
तेरा दहिना हाथ तेरे बैर रखनेहारों को पकड़ लेगा।
तू अपनी सन्मुखता के समय उन्हें जलते हुए भट्ठे के
समान ठहरावेगा परमेश्वर अपने कोप में उन्हें निगल
लेगा और आग उन को खा जायगी। तू उन का १०
फल पृथिवी से और उन का बंश मनुष्य के संतान में
से नष्ट करेगा। क्योंकि उन्हों ने तेरे बिरुद्ध में बुराई ११
फैलाई है उन्हों ने ऐसी जुगुत बांधी है जिसे समाप्त न
कर सकेंगे। क्योंकि तू उन की पीठ दिखावेगा जब तू १२
उन के साम्हने अपने पनच को चढ़ावेगा।

हे परमेश्वर अपने ही बल से महान हो हम तेरी १३
सामर्थ्य की स्तुति में गावेंगे और बड़ाई करेंगे।

बाईसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये बिहान की हरिणी
के बिषय में दाऊद का गीत।

हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ १
दिया है तू क्यों मेरी मुक्ति और मेरे कहरने की बातों
से दूर खड़ा रहता है। हे मेरे ईश्वर मैं दिन को २
पुकारता हूं और तू उत्तर नहीं देता और रात को
और मुझे चैन नहीं है।

और तू इसराएल की स्तुति में बास करनेहारा ३
पवित्र है। हमारे पितरों ने तुझ पर भरोसा किया ४
उन्हों ने भरोसा किया और तू ने उन्हें छुड़ाया। उन्हों ५

ने तुझ को पुकारा और छुड़ाये गये उन्हों ने तुझ पर
६ भरोसा रक्खा और लज्जित न हुए। पर मैं कीड़ा हूं
और न मनुष्य मनुष्यों की निन्दा और लोगों में
७ लज्जा। मेरे सारे देखनेहारे मुझ पर हंसते हैं वे यह
८ कहते हुए होंठ बिचकाते और मूड़ हिलाते हैं। कि
परमेश्वर पर डाल दे वह उसे छुड़ावेगा उस को निर्बंध
९ करेगा क्योंकि उस्से प्रसन्न है। क्योंकि तू ही गर्भ से
मेरा निकासनेहारा था मेरी माता के स्तनों पर मुझे
१० आशा देनेहारा। कोख से मैं तुझ पर डाला गया मेरी
माता के गर्भ से मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है।
११ मुझ से दूर मत रह क्योंकि सङ्कट निकट है और
१२ इस लिये कि कोई सहायक नहीं। बहुत से बैलों ने
१३ मुझे घेरा है बसनिया के सांड़ों ने मुझे घेरा है। उन्हों
ने फाड़ने और गर्जनेवाले सिंह होके मुझ पर अपना
१४ मुंह पसारा है। मैं पानी की नाईं उंडेला गया हूं और
मेरी सारी हड्डियां अलग हो गईं मेरा मन मोम की
नाईं हो गया मेरी अंतड़ियों के मध्य में पिघल गया।
१५ मेरा बल ठीकरे की नाईं सूख गया और मेरी जीभ
मेरे तालू से लग गई और मृत्यु की धूल में तू मुझे
१६ उतारेगा। क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेरा है दुष्टों की
मण्डली ने मुझे घेर लिया उन्हों ने मेरे हाथों और
१७ मेरे पांवों को छेदा है। मैं अपनी सारी हड्डियों को
१८ गिन सक्ता हूं वे ताकते रहते और मुझे घूरते हैं। वे
मेरे कपड़े आपुस में बांटा चाहते हैं और मेरे बागे पर
चिट्ठी डाला चाहते हैं।

पर तू हे परमेश्वर दूर मत रह हे मेरे बल मेरी सहाय के लिये शीघ्र कर। मेरे प्राण को तलवार से और मेरे प्रिय को कुत्ते के हाथ से बचा। मुझे सिंह के मुंह से बचा और तू ने भैंसों के सींगों से मेरी सुनी है।

मैं अपने भाइयों से तेरा नाम बर्णन करूंगा मण्डली के मध्य तेरी स्तुति करूंगा। हे परमेश्वर के डरवैयो उस की स्तुति करो हे यअ़क़ूब के सारे बंश उस की प्रतिष्ठा करो और हे इसराएल के सारे बंश उस्से भय रक्खो। क्योंकि उस ने दुखी के दुख को तुच्छ न जाना और न उस्से घिन किई और न उस्से अपना मुंह छिपाया है और जब उस ने उस की दोहाई दिई तब उस ने सुना। तेरी सहाय से मैं बड़ी मण्डली में तेरी स्तुति करूंगा उस के डरनेहारों के साम्हने अपनी मनौती पूरी करूंगा।

दीन लोग खायेंगे और तृप्त होवेंगे परमेश्वर के खोजी उस की स्तुति करेंगे तुम्हारा मन सदा लों जीता रहे। जगत के सारे खूंट चर्चा करेंगे और परमेश्वर की ओर फिरेंगे और जातिगणों के सारे घराने तेरे साम्हने झुकेंगे। क्योंकि राज्य परमेश्वर का है और वह जातिगणों पर अध्यक्ष है। पृथिवी के सारे पुष्टों ने खाया और सेवा किई है सारे धूल में मिलनेहारे उस के आगे झुकेंगे और वह भी जो अपने प्राण को नहीं बचा सक्ता था। आनेवाला बंश उस की सेवा करेगा आनेवाली पीढ़ी को परमेश्वर के बिषय में

बतलाया जायगा। वे आवेंगे और उन लोगों को जो उत्पन्न होंगे उस के धर्म्म का बर्णन करेंगे कि उस ने यह किया है।

तेईसवां गीत।

दाऊद का गीत।

परमेश्वर मेरा गड़रिया है मुझे घटती न होगी। वह मुझे कोमल घास की चराई में बिठलावेगा मुझे स्थिर जल के लग ले जायेगा। वह मेरे प्राण को यथावस्थित करेगा अपने नाम के लिये धर्म्म के पथों पर मेरी अगुआई करेगा। इस के उपरान्त जब मैं मृत्यु की छाया की तराई में चलूंगा तब भी बिपत्ति से न डरूंगा क्योंकि तू ही मेरे साथ होगा तेरी छड़ी और तेरी लाठी वही मुझे शान्ति देंगी। तू मेरे बैरियों के आगे मेरे साम्हने मञ्च बिछावेगा तू ने तेल से मेरे सिर को चिकना किया है मेरा कटोरा छलकता है। केवल भलाई और दया जीवन भर मेरा पीछा करेंगी और मैं जीवन की बढ़ती लों परमेश्वर के घर में रहूंगा।

चौबीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

पृथिवी और उस की भरपूरी जगत और उस के बासी परमेश्वर के हैं। क्योंकि उसी ने उस की नेव समुद्रों पर डाली और उसे धारों पर स्थिर किया है।

परमेश्वर के पहाड़ पर कौन चढ़ेगा और उस के पवित्र स्थान में कौन स्थिर रहेगा।

जिस का हाथ शुद्ध और मन पवित्र है जिस ने अपना जी मिथ्या पर नहीं लगाया और छल देने के लिये किरिया नहीं खाई। वह परमेश्वर से आशीष और अपने मुक्तिदाता ईश्वर से धर्म्म प्राप्त करेगा।

यह बंश उस की ढूंढ़नेहारी है तेरे रूप के खोजी यअ़क़ूब हैं। सिलाह।

हे फाटको अपने सिरों को ऊंचा करो और हे सनातन के द्वारो ऊंचे हो जाओ और बिभव का राजा प्रवेश करेगा।

यह बिभव का राजा कौन है परमेश्वर पराक्रमी और बलवन्त परमेश्वर सङ्ग्राम में बलवन्त। हे फाटको अपने सिरों को ऊंचा करो और हे सनातन के द्वारो उन्हें ऊंचा करो और बिभव का राजा प्रवेश करेगा।

यह बिभव का राजा कौन है परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर वही बिभव का राजा है। सिलाह।

पञ्चीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

हे परमेश्वर मैं अपने प्राण को तेरी ओर उठाता हूं। हे मेरे ईश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा किया है मुझे लज्जित न होने दे मेरे बैरियों को मुझ पर फूलने न दे। तेरे सारे जोहनेहारों में से कोई भी लज्जित न होगा वे लज्जित होंगे जो अकारण छल करते हैं। हे परमेश्वर अपने मार्ग मुझे दिखला अपने पथ मुझे बतला। अपनी सत्यता के मार्ग पर मुझे ले चल और मुझे शिक्षा दे क्योंकि मेरा मुक्तिदाता ईश्वर तू

६ ही है मैं ने सारे दिन तेरी बाट जोही है । हे परमेश्वर
अपनी दया और कृपा को स्मरण कर क्योंकि वे सनातन
७ से हैं । मेरी तरुणाई के पापों और अपराधों को स्मरण
मत कर तू अपनी दया के लिये अपनी भलाई के
समान मुझे स्मरण कर ।
८ परमेश्वर अच्छा और सीधा है इस लिये वह मार्ग
९ में पापियों की अगुआई करेगा । वह बिचार में दीनों
की अगुआई करेगा और आधीनों को अपने मार्ग
१० बतलावेगा । परमेश्वर के सारे मार्ग उन के लिये जो
उस के नियम और साक्षी के पालन करनेहारे हैं दया
११ और सच्चाई हैं । हे परमेश्वर अपने नाम के लिये
तू दया करेगा और मेरी बुराई को क्षमा करेगा क्योंकि
१२ वह बहुत है । वह कौन सा मनुष्य है जो परमेश्वर
से डरता है वह उस मार्ग में जिसे चुन लेगा उस की
१३ अगुआई करेगा । उस का प्राण सुख में रहेगा और
१४ उस का बंश पृथिवी का अधिकारी होगा । परमेश्वर
की मित्रता उस के डरवैयों के साथ और उस का
नियम उन्हें पहिचान देने को है ।
१५ मेरी आंखें सदा परमेश्वर की ओर हैं क्योंकि वही
१६ मेरे पाओं को फंदे में से निकालेगा । मेरी ओर फिर
और मुझ पर दया कर क्योंकि मैं अकेला और दुखी
१७ हूं । मेरे मन के दुख बढ़ गये मेरे दुखों से मुझे निकाल ।
१८ मेरे दुख और मेरी पीड़ा को देख और मेरे सारे पापों
१९ को क्षमा कर । मेरे बैरियों को देख क्योंकि वे बहुत हैं
और बड़े बैर के साथ उन्हों ने मुझ से बैर रक्खा है ।

मेरे प्राण की रक्षा कर और मुझे छुड़ा मुझे लज्जित २०
न होने दे क्योंकि मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है।
धर्म्म और खराई मेरी रक्षा करेंगी क्योंकि मैं ने तेरी २१
बाट जोही है। हे ईश्वर इसराएल को उस के सारे २२
दुखों से छुड़ा।

छब्बीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

हे परमेश्वर मेरा बिचार कर क्योंकि मैं अपने धर्म्म में चला हूं और मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न टलूंगा। हे परमेश्वर मुझे परख और मुझे ताड़ मेरे अंतःकरण को और मेरे मन को जांच ले।

क्योंकि तेरी दया मेरी आंखों के आगे है और मैं तेरी सच्चाई में चला हूं। मैं मिथ्याबादी मनुष्यों के संग नहीं बैठा और कपटियों के साथ न चलूंगा। मैं ने कुकर्म्मियों की मण्डली से घिन रक्खा है और दुष्टों के साथ न बैठूंगा। हे परमेश्वर मैं अपने हाथों को निष्कपटता में धोऊंगा और तेरी बेदी की प्रदक्षिणा करूंगा। जिसतें धन्यबाद के शब्द के साथ तेरे सारे आश्चर्य्यों को सुनाऊं और बर्णन करूं। हे परमेश्वर मैं ने तेरे घर के निवास और तेरे बिभव के तंबू के स्थान से प्रेम रक्खा है। मेरे प्राण को पापियों के संग
और मेरे जीवन को बधिकों के संग मत मिला। जिन १०
के हाथों में बुराई है और उन का दहिना हाथ अकोर
से भरा है। और मैं अपनी खराई में चलूंगा मुझे ११
छुड़ा और मुझ पर दया कर। मेरा पांव समथर १२

स्थान पर स्थिर हुआ है मैं मण्डलियों में परमेश्वर को
धन्य कहूंगा ।

सत्ताईसवां गीत ।

दाऊद का गीत ।

१ परमेश्वर मेरा उंजियाला और मेरी मुक्ति है मैं
किस्से डरूं परमेश्वर मेरे जीवन का गढ़ है मैं किस्से भय
२ रक्खूं । जब दुष्ट मेरे बिरोध में निकट आये जिसतें
मेरा मांस खा लें जब मेरे बिरोधी और मेरे बैरी मेरे
निकट आये तब उन्हीं ने ठोकर खाई और गिर पड़े।
३ यद्यपि सेना मेरे बिरुद्ध चढ़ाई करे तो मेरा मन न
डरेगा यदि सङ्ग्राम मेरे बिरुद्ध उभरे इस में भी मैं
४ धैर्य्यवान रहूंगा । मैं ने परमेश्वर से एक प्रश्न किया
है मैं उसी के खोज में रहूंगा कि परमेश्वर के घर में
अपने जीवन भर रहूं जिसतें परमेश्वर की सुन्दरता
को देखा करूं और उस के मन्दिर में ढूंढ़ा करूं ।
५ क्योंकि वह बिपत्ति के दिन मुझे अपने तंबू में छिपावेगा
अपने डेरे की आड़ में मुझे आड़ देगा मुझे चटान
६ की ऊंचाई पर रक्खेगा । और अब मेरा सिर मेरे
चारों ओर के बैरियों के ऊपर ऊंचा होगा और मैं
उस के तंबू में आनन्दित शब्द के साथ बलि चढ़ाऊंगा
मैं परमेश्वर की स्तुति में गाऊंगा और बजाऊंगा ।
७ हे परमेश्वर सुन मैं अपने शब्द से पुकारता हूं
और मुझ पर दया कर और मुझे उत्तर दे । जब तू
ने कहा है कि मेरे मुंह के खोजी हो तब मेरे मन ने
कहा कि हे परमेश्वर मैं तेरे मुंह का खोजी हूंगा ।

मुझ से अपना मुंह मत छिपा क्रोध से अपने दास को मत हटा तू मेरा सहायक हुआ है हे मेरी मोक्ष के ईश्वर मुझे मत त्याग और मुझे मत छोड़। क्योंकि मेरे पिता और मेरी माता ने मुझे त्यागा है पर परमेश्वर मुझे अपने घर में लेगा। हे परमेश्वर मुझे अपना मार्ग बतला और मेरे बैरियों के कारण सीधे मार्ग पर मुझे ले चल। मुझे मेरे बैरियों की इच्छा पर न छोड़ क्योंकि झूठे साक्षी और अंधेर की सांस लेनेहारे मुझ पर उठे हैं।

यदि मुझे बिश्वास न होता कि जीवन की भूमि पर परमेश्वर की भलाई को देखूं तो नाश होता। परमेश्वर की बाट जोह दृढ़ रह और वह तेरे मन को बल देवे हां परमेश्वर की बाट जोह।

अट्ठाईसवां गीत।

दाऊद का गीत।

हे परमेश्वर मैं तुझे पुकारूंगा हे मेरी चटान मुझ से चुपका मत हो न होवे कि तू मुझ से चुप हो रहे और मैं गड़हे में गिरनेवालों की नाईं हो जाऊं। जब मैं तेरी दोहाई दूं और अपने हाथ तेरे पवित्र मन्दिर की ओर उठाऊं तब मेरी बिनतियों का शब्द सुन। मुझे दुष्टों के साथ और कुकर्म्मियों के साथ न खैंच जो अपने परोसियों के साथ कुशल की बातें करते हैं पर उन के मन में बुराई है। उन की क्रिया के समान और उन के कार्य्यों की दुष्टता के समान उन्हें दे उन के हाथों के कार्य्य के समान उन्हें दे उन का ब्यवहार

५ उन्हीं पर पलट दे। इस लिये कि वे परमेश्वर के
कार्य्यों और उस के हाथों की क्रिया पर ध्यान न
करेंगे वह उन्हें ढायेगा और उन्हें न बनावेगा।
६ परमेश्वर धन्य हो क्योंकि उस ने मेरी बिनतियों
७ का शब्द सुना है। परमेश्वर मेरा बल और मेरी
ढाल है मेरे मन ने उस पर भरोसा किया और मैं
ने सहाय पाई है और मेरा मन अत्यन्त आनन्दित
होगा और मैं अपने छन्द में उस की स्तुति करूंगा।
८ परमेश्वर उन के लिये बल है और वही अपने
९ अभिषिक्त के लिये बचाव का गढ़ है। अपने लोगों
को बचा और अपने अधिकार को आशीष दे और
उन्हें चरा और उन्हें सदा के लिये ऊंचा कर।

उनतीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१ हे सर्बशक्तिमान के पुत्रो परमेश्वर को दो परमे-
२ श्वर को महिमा और बल दो। परमेश्वर को उस
के नाम की प्रतिष्ठा दो पवित्रता की सुन्दरता के संग
परमेश्वर को दण्डवत करो।
३ परमेश्वर का शब्द पानियों पर है महिमा का
सर्बशक्तिमान गर्ज्जा परमेश्वर बड़े पानियों पर है।
४ परमेश्वर का शब्द बल के साथ परमेश्वर का शब्द
५ बिभव के साथ है। परमेश्वर का शब्द देवदारों को
तोड़ता है और परमेश्वर ने लुबनान के देवदारु पेड़ों
६ को तोड़ डाला है। और उन्हें बछेरे की नाईं लुबनान
और सुरियून को भैंसों के बच्चों की नाईं कुदाया है।

परमेश्वर का शब्द आग की लवरों के द्वारा से चीरता है। परमेश्वर का शब्द बन को कंपा सक्ता परमेश्वर क़ादिश के बन को कंपा सक्ता है। परमेश्वर का शब्द हरिणियों के गाभ गिरा सक्ता और जंगलों को पतझाड़ कर सक्ता है और उस के मन्दिर में हर एक उस के बिभव की बात कहता है। परमेश्वर बाढ़ पर बैठा था और परमेश्वर राजा सदा लों सिंहासन पर बैठा रहेगा। परमेश्वर अपने लोगों को बल देगा परमेश्वर अपने लोगों को कुशल की आशीष देगा।

तीसवां गीत।

गीत। मन्दिर के स्थापन करने के लिये
दाऊद का भजन।

हे परमेश्वर मैं तेरी महिमा करूंगा क्योंकि तू ने मुझे बढ़ाया है और मेरे बैरियों को मेरे बिषय में आनन्द करने नहीं दिया। हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं ने तेरी दोहाई दिई और तू ने मुझे चंगा किया। हे परमेश्वर तू ने मेरे प्राण को समाधि से उठाया तू ने गड़हे के गिरनेहारों में से मुझे जिलाया है।

हे उस के धर्म्मियो परमेश्वर की स्तुति में गान करो और उस की पवित्रता के स्मरण में उस का धन्यबाद करो। क्योंकि उस की रिस पल भर की है उस की कृपा में जीवन है बिलाप सांझ को टिकेगा और बिहान को आनन्द।

और मैं ने अपनी बढ़ती में कहा कि कभी न टलूंगा। हे परमेश्वर तू ने अपनी कृपा से मेरे पहाड़

के लिये बल स्थापन किया तू ने अपना मुंह छिपाया
८ मैं घबरा गया । हे परमेश्वर मैं तुझ को पुकारूंगा
९ और परमेश्वर को दया के लिये पुकारूंगा । मेरे
लोहू में क्या लाभ जब मैं गड़हे में गिरूंगा क्या धूल
तेरी स्तुति करेगी क्या वह तेरी सत्यता बर्णन करेगी ।
१० हे परमेश्वर सुन और मुझ पर दया कर हे परमेश्वर
११ मेरा सहायक हो । तू ने मेरे लिये मेरे शोक को नाच
से पलट डाला है तू ने मेरा टाट खोला और आनन्द
१२ से मेरी कटि बांधी है । जिसतें बिभव तेरी स्तुति में
भजन करे और चुपका न रहे हे परमेश्वर मेरे ईश्वर
मैं सर्बदा लों तेरा धन्यबाद करूंगा ।

एकतीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ।

१ हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मुझे
सदा लों लज्जित न होने दे अपने धर्म्म से मुझे छुड़ा ।
२ अपना कान मेरी ओर झुका झट पट मुझे छुड़ा मेरे
लिये गढ़ की चटान और आड़ का घर हो जिसतें
३ मुझे बचाये । क्योंकि तू ही मेरी चटान और मेरा गढ़
है और तू अपने नाम के लिये मुझे ले चलेगा और
४ मेरा अगुआ होगा । तू मुझे उस जाल से जो उन्हों ने
मेरे लिये छिपाया है निकालेगा क्योंकि तू ही मेरा
५ गढ़ है । मैं अपने आत्मा को तेरे हाथ में सौंपता हूं
हे परमेश्वर सत्यता के सर्बशक्तिमान तू ने मुझे छुड़ाया
६ है । मैं ने झूठ की बृथा बस्तुन के माननेहारों से घिन
किया है और मैं ने परमेश्वर पर भरोसा किया है ।

मैं तेरी दया में आनन्दित और आल्हादित हूंगा तू जिस ने मेरे दुख को देखा मेरे प्राण की बिपतों को पहिचाना है। और मुझे बैरी के हाथ में बंद नहीं किया पर मेरे पांव को फैलावस्थान में खड़ा किया है।

हे परमेश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मुझ पर बिपत्ति है मेरी आंख खिजाहट से क्षीण हो गई मेरा आत्मा और मेरा पेट भी। क्योंकि मेरा जीवन शोक में और मेरी बय कराहने में नाश हो गई मेरे पाप के कारण से मेरे बल ने डगमगाहट खाई है और मेरी हड्डियां सूख गईं। मैं अपने सारे बैरियों के कारण से दुर्नाम हुआ और अपने परोसियों के निकट बहुत और अपने जान पहिचानों के निकट भय मुझे बाहर देखते ही वे मुझ से भागे। मैं मृतक की नाईं मन से भुला दिया गया मैं टूटे हुए पात्र के तुल्य हुआ। क्योंकि मैं ने बहुतों से निन्दा सुनी भय चारों ओर था जब कि उन्हों ने आपुस में मेरे बिरोध परामर्श किया तब उन्हों ने मेरे प्राण लेने की युक्ति किई।

और हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा किया मैं ने कहा कि तू ही मेरा ईश्वर है। मेरे समय तेरे हाथ में हैं मेरे बैरियों के हाथ से और मेरे पीछा करनेहारों से मुझे छुड़ा। अपना रूप अपने सेवक पर चमका अपनी दया से मुझे बचा। हे परमेश्वर मुझे लज्जित न होने दे क्योंकि मैं ने तुझे पुकारा है दुष्ट लज्जित हों समाधि में चुपके पड़े रहें। झूठे होंठ

जो धर्म्मी के बिरुद्ध घमण्ड ग्रैार निन्दा करते हुए
ढिठाई से बोलते हैं गूंगे किये जावें ।
९ क्या ही बड़ी तेरी कृपा है जो तू ने ग्रपने डरवैयों
के लिये छिपा रक्खी है ग्रैार ग्रपने भरोसा रखनेहारों
० पर मनुष्य के सन्तानों के ग्रागे प्रगट किई है । तू
मनुष्य की जुगुतों से ग्रपने रूप की ग्रोट में उन्हें
छिपायेगा जीभों के झगड़े से उन्हें ग्राड़ में छिपा लेगा ।
११ परमेश्वर धन्य हो क्योंकि उस ने मुझे दृढ़ नगर में
२ लाके ग्रपनी कृपा मेरे लिये ग्राश्चर्य्य किई है । ग्रैार
मैं ने ग्रपनी घबराहट में कहा कि मैं तेरी ग्रांखों के
साम्हने से कट गया परन्तु जब मैं ने तेरी दोहाई दिई
तब तू ने मेरी बिन्तियों का शब्द सुना ।
३ परमेश्वर से प्रेम रक्खो हे उस के सारे साधुग्रो
परमेश्वर सत्य का रखवाल है ग्रैार ग्रहङ्कारी को
४ बहुताई से पलटा देता है । हे तुम सब कि परमेश्वर
के ग्राश्रित हो दृढ़ हो ग्रैार वह तुम्हारे मन को दृढ़ करे ।

बत्तीसवां गीत ।

दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत ।

१ वह क्या ही धन्य है जिस का ग्रपराध क्षमा किया
२ गया जिस का पाप ढांपा गया । वह मनुष्य क्या ही
धन्य है जिस के लिये परमेश्वर ग्रधर्म्म लेखा नहीं
करता ग्रैार उस के प्राण में कुछ छल नहीं है ।
३ क्योंकि मैं चुप हो रहा ग्रैार मेरे सारे दिन के
४ कहरने से मेरी हड्डियां गल गईं । क्योंकि रात दिन
तेरा हाथ मुझ पर भारी रहता है मेरी तरावट गरमी

की भुराहट से पलट गई। सिलाह। मैं ने कहा कि अपनी बुराई तुझ पर प्रगट करूंगा और अपना अधर्म्म नहीं छिपाया मैं ने कहा कि परमेश्वर के आगे अपने अपराधों को मान लूंगा और तू ही ने मेरे पाप का अधर्म्म क्षमा किया। सिलाह। इसी लिये हर एक साधू जब तक तू मिल सक्ता है तेरी ओर फिरके प्रार्थना करे निश्चय जब बड़े पानियों के बाढ़ हों तब उस लों न पहुंचेंगे। तू ही मेरे लिये आड़ है तू मुझे सकेती से बचावेगा बचाव के गानों से मुझे घेरेगा। सिलाह।

मैं तुझे शिक्षा देऊंगा और जिस मार्ग पर तू चलेगा तेरी अगुआई करूंगा मैं तुझे मन्त्र दूंगा मेरी आंख तुझ पर लगी रहेगी। घोड़े के समान खच्चर के समान न हो जिन में कुछ समुझ नहीं बाग और लगाम में उन का सिङ्गार है जिसतें उन का मुंह पकड़े क्योंकि वे तेरे समीप नहीं आते। दुष्ट पर बहुत बिपत्ति हैं और जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है वह उसे दया से घेरेगा। हे धर्म्मियो परमेश्वर से आल्हादित हो और आनन्द करो और हे सारे खरे अन्तःकरणियो आनन्द के मारे चिल्लाओ।

तेंतीसवां गीत।

हे धर्म्मियो परमेश्वर में आनन्दित होओ स्तुति करना सज्जनों को सजता है। बीणा के संग परमेश्वर की स्तुति करो दसतार की सारङ्गी के संग उस की

३ स्तुति में गाओ। उस के लिये नया गीत गाओ
मङ्गल के शब्द के साथ भली रीति बजाओ।
४ क्योंकि परमेश्वर का बचन ठीक है और उस का
५ सारा कार्य्य सच्चाई के साथ किया गया। वह धर्म्म
और न्याय से प्रेम रखता है पृथिवी परमेश्वर की
६ दया से भरी है। परमेश्वर के बचन से स्वर्ग बने
और उस के मुंह के स्वास से उन की सारी सेना।
७ वह समुद्र के जल को ढेर की नाईं एकट्ठा करता है
८ गहिरापों को भंडारों में रख छोड़ता है। सारी पृथिवी
के रहनेहारे परमेश्वर से डरें संसार के सारे बासी
९ उस का भय रक्खें। क्योंकि उसी ने कहा कि हो
और हो गया उसी ने आज्ञा किई और खड़ा हुआ।
१० परमेश्वर ने अन्यदेशियों के परामर्श को व्यर्थ किया
११ लोगों की युक्ति को मिथ्या किया है। परमेश्वर का
मन्त्र सर्वदा लों स्थिर रहेगा उस के मन की चिन्तायें
पीढ़ी से पीढ़ी लों।
१२ वह जाति क्या ही धन्य है जिस का ईश्वर परमेश्वर
है वह लोग जिसे उस ने अपने अधिकार के लिये
१३ चुन लिया। परमेश्वर ने स्वर्ग पर से दृष्टि किई उस
१४ ने मनुष्य के सारे संतान को देखा। अपने निवास-
स्थान से उस ने पृथिवी के सारे निवासियों की ओर
१५ ताका। जो उन के सारे अन्तःकरणों को बनाता है
जो उन के सारे कार्य्यों की ओर ध्यान रखता है।
१६ राजा बल की बहुताई से कभी नहीं बचता बीर
१७ बल की बहुताई से छुड़ाया न जायेगा। घोड़ा बचाने के

लिये बृथा है और वह अपने बल की बहुताई से न बचेगा।

देखो परमेश्वर की आंख उस के डरनेहारों की ओर है उन के लिये जो उस की दया के जोहनेहारे हैं। जिसतें मृत्यु से उन के प्राण को छुड़ावे और उन्हें अकाल में जीता रक्खे। हमारे प्राण ने परमेश्वर की बाट जोही है हमारा उपकार और हमारी ढाल वही है। क्योंकि हमारा अन्तःकरण उस्से आनन्दित होगा इस कारण कि हम ने उस के पवित्र नाम पर भरोसा रक्खा है। हे परमेश्वर तेरी दया हम पर होवे जैसा हम ने तेरी आशा किई है।

चौंतीसवां गीत।

दाऊद का गीत जब उस ने अबिमलिक के साम्हने अपनी समुझ को बदल डाला और उस ने उसे निकलवा दिया और वह चला गया।

मैं हर समय परमेश्वर को धन्य कहूंगा उस की स्तुति सदा मेरे मुंह में होगी। मेरा प्राण परमेश्वर पर फूलता रहेगा दीन सुनेंगे और आनन्दित होंगे। मेरे साथ परमेश्वर की बड़ी स्तुति करो और हम मिलके उस का नाम ऊंचा करें।

मैं ने परमेश्वर को खोजा और उस ने मेरी सुनी और मेरे सारे भय से मुझे छुड़ाया। उन्हों ने उस की ओर दृष्टि किई और उंजियाला हो गये और उन के मुंह लज्जित न हों। यह दुखी चिल्लाया और परमेश्वर ने सुना और उसे उस की सारी बिपतों

७ से बचाया । परमेश्वर का दूत उस के डरनेहारों के
चहुंओर छावनी किये है और उस ने उन्हें छुड़ाया है।
८ चीखो और देखो कि परमेश्वर भला है वह मनुष्य
९ क्या ही धन्य जो उस पर भरोसा रखता है । हे उस
के संतो परमेश्वर से डरो क्योंकि उस के डरनेहारों को
१० कुछ कमी नहीं । तरुण सिंह बाञ्छित और भूखे हुए
पर परमेश्वर के खोजी किसी अच्छी बस्तु के आकांक्षित
न होंगे ।
११ आओ हे लड़को मेरी सुनो मैं तुम्हें परमेश्वर का
१२ भय सिखाऊंगा । वह कौन मनुष्य है जो जीवन को
चाहता और दिनों से प्रेम रखता है जिसतें भलाई को
१३ देखे । अपनी जीभ को बुराई से और अपने होंठों को
१४ झूठ बोलने से रोक रख । बुराई से फिर आ और
भलाई कर कुशल को ढूंढ़ और उस का पीछा कर ।
१५ परमेश्वर की आंखें धर्म्मियों की ओर हैं और उस
१६ के कान उन की दोहाई की ओर । परमेश्वर का
मुंह कुकर्म्मियों के बिरुद्ध है जिसतें उन की चर्चा
१७ पृथिवी पर से मिटा दे । वे चिल्लाये और परमेश्वर
ने सुना और उन के सारे दुखों से उन्हें छुड़ाया ।
१८ परमेश्वर चूर्ण मनों के निकट है और जिन का आत्मा
१९ कुचला हुआ है उन्हें बचावेगा । धर्म्मी पर बहुत सी
बिपत्ति पड़ती हैं पर परमेश्वर उन सभों से उसे छुड़ा-
२० वेगा । जो उस की सारी हड्डियों का रक्षक है उन में
२१ से एक भी टूटने नहीं पाती । क्लेश दुष्ट को मृत्यु तक
२२ पहुंचावेगा और धर्म्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे । परमेश्वर

अपने सेवकों के प्राण को बचाता है और उस के सारे भरोसा रखनेहारों में से एक भी दोषी न ठहरेगा।

पैंतीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

हे परमेश्वर मेरे लड़नेहारों से लड़ मेरे निगलनेहारों को निगल जा। ढाल और फरी को थाम और मेरी सहाय के लिये खड़ा हो। और भाला निकाल और मेरे पीछा करनेहारों के साम्हने में मार्ग रोक मेरे प्राण से कह कि मैं तेरी मुक्ति हूं। मेरे प्राण के गाहक लज्जित और सङ्कोचित हों मेरी बुराई के चाहनेहारे पीछे हटाये जायें और लज्जित हों। वे भूसे की नाईं हों जो बयार के साम्हने है और परमेश्वर का दूत उन्हें मारता हो। उन का मार्ग अंधियारा और फिसलहा होवे और परमेश्वर का दूत उन्हें रगेदता हो। क्योंकि उन्हों ने अकारण मेरे लिये गड़हे में अपना जाल छिपाया उन्हों ने अकारण मेरे प्राण के लिये खोदा। उस पर अचानक बिनाश आवे और उस का जाल जिसे उस ने छिपाया है उसे फंसा ले वह बिनाश के साथ उस में गिरे। और मेरा प्राण परमेश्वर में आनन्दित होगा उस की मुक्ति में मगन होगा। मेरी सारी हड्डियां कहेंगी कि हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है जो दुखी को उस मनुष्य से जो उस्से बलवान है हां दुखी और कंगाल को उस के लूटनेहारे से छुड़ाता है।

अंधेर के साक्षी उठते हैं वे मुझ से उस के बिषय

१२ में प्रश्न करते हैं जिस को मैं ने नहीं जाना। वे
भलाई की संती मुझे बुराई का पलटा देते हैं बरन
१३ मेरे प्राण के लिये नष्टता। और मैं जब वे रोगी हुए
तब मेरा पहिराव टाट था मैं ने ब्रत से अपने प्राण
को दुख दिया और मेरी प्रार्थना मेरी गोद में फिर
१४ आवेगी। मेरी चाल ऐसी थी कि वह मेरा हितु मेरा
भाई था जैसा कोई माता के लिये बिलाप करे वैसा
१५ ही मैं मैला कुचैला होकर झुक गया। और वे मेरे
लंगड़ाने से आनन्दित हुए और एकट्ठे हो गये लंगड़े
मेरे बिरोध में एकट्ठे हुए और मैं ने न जाना उन्हों ने
१६ फाड़ा और चुप न रहे। उन निकम्मों के साथ जो
रोटी के लिये ठट्ठा करते हैं जिन्हों ने मुझ पर अपने
दांत पीसे।

१७ हे प्रभु तू कब लों देखेगा मेरे प्राण को उन की
१८ बुराई से फेर ला मेरे अकेले को तरुण सिंहों से। मैं
बड़ी मण्डली में तेरा धन्यबाद करूंगा बलवान लोगों
१९ में तेरी स्तुति करूंगा। मेरे झूठ कहनेहारे बैरी मुझ
पर आनन्दित न होने पावें और जो अकारण मेरे
२० बैरी हैं वे आंख न मारने पावें। क्योंकि वे कुशल की
बात नहीं करते और पृथिवी के सुखियों के बिरोध
२१ छल की बातें सोचते हैं। और उन्हों ने मुझ पर अपना
मुंह बिचकाया है उन्हों ने कहा है कि अहा अहा
हमारी आंखों ने देखा है।

२२ हे परमेश्वर तू ने देखा है चुपका मत रह हे प्रभु
२३ मुझ से दूर मत रह। मेरे बिचार के लिये और मेरे

झगड़े के लिये हे मेरे ईश्वर और मेरे परमेश्वर अपने तईं जगा और चोंका। हे परमेश्वर मेरे ईश्वर अपने धर्म्म के समान मेरा बिचार कर और वे मेरे विषय में आनन्दित न होने पायें। वे अपने मन में न कहने पायें आहा हमारे मन की इच्छा वे न कहने पायें कि हम उसे निंगल गये। मेरी बिपत्ति से आनन्द करनेहारे एक ही साथ लज्जित और सङ्कोचित हों जो मेरे बिरुद्ध में आप को बढ़ाते हैं वे लाज और दुर्नामी का पहिरावा पहिनें। मेरे धर्म्म के चाहनेहारे ललकारें और आनन्द करें और नित कहा करें कि परमेश्वर महान हो जो अपने सेवक के कुशल का चाहनेहारा है। और मेरी जीभ तेरे धर्म्म का हां सब दिन तेरी स्तुति का चर्चा किया करेगी।

छत्तीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये परमेश्वर के सेवक दाऊद का गीत।

मुझ दुष्ट से मेरे मन के भीतर बुराई बात करती है उस की आंखों के आगे ईश्वर का भय तनिक भी नहीं। क्योंकि उस ने अपने अधर्म्म के ढूंढ़ निकालने के विषय और उस्से घिन करने के विषय अपनी समुझ में अपने विषय में चिकनी चिकनी बातें किई हैं। उस के मुंह की बातें झूठ और छल हैं वह ज्ञान की बातें करने और भलाई करने से फिरा है। वह अपने बिछौने पर झूठ सोचा करता है वह अपने तईं उस मार्ग पर खड़ा करता है जो अच्छा नहीं है वह बुराई को नहीं छोड़ता।

५ हे परमेश्वर तेरी दया स्वर्गों पर है और तेरी
६ सच्चाई मेघों लों । तेरा धर्म्म सर्बशक्तिमान के पर्बतों
की नाईं है तेरे न्याय बड़े गहिराव हैं हे परमेश्वर
७ तू मनुष्य और पशुन को बचाता है । हे ईश्वर तेरी
दया क्या ही बहुमूल्य है और मनुष्य के संतान तेरे
८ पंखों की छाया के नीचे आश्रय ले सक्ते हैं । वे तेरे घर की
चिकनाई से सन्तुष्ट होके पियेंगे और तू अपने बिलासों
९ की नदी से उन्हें तृप्त करेगा । क्योंकि जीवन का सोता
तेरे पास है तेरे उंजियाले में हम उंजियाले को देखेंगे ।
१० अपनी दया को अपने पहिचान्नेहारों के लिये
और सूधे मनवालों के लिये अपने धर्म्म को बढ़ाता
११ रह । घमण्ड का पांव मुझ पर आने न पाये और
दुष्टों का हाथ मुझे देशान्तर करने न पाये ।
१२ कुकर्म्मी वहीं गिर पड़े हैं वे ढकेले गये और उठ
नहीं सक्ते ।

सैंतीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ।

१ कुकर्म्मियों के कारण से तू अपने तईं न कुढ़ा और
२ बुराई करनेहारों पर डाह न खा । क्योंकि घास की
नाईं वे झट से काटे जायेंगे और हरियाली की नाईं
३ मुरझावेंगे । परमेश्वर पर भरोसा रख और भलाई
कर पृथिवी पर बास कर और सत्यता पर चराई
४ कर । और परमेश्वर पर अपने तईं मगन कर और
५ वह तुझे तेरे मन की इच्छा पूरी करेगा । अपना मार्ग
परमेश्वर पर छोड़ दे और उस पर भरोसा कर और

वह आप बना लेगा। और तेरे धर्म्म को उंजियाले की नाईं और तेरे न्याय को दो पहर की नाईं निकालेगा।

परमेश्वर के आगे चुप रह और उस की बाट जोह उस पर जो अपने मार्ग को भाग्यवान करता है अपने तईं मत कुढ़ा उस मनुष्य पर जो कुमंत्रणा करता है। क्रोध को छोड़ और कोप को त्याग दे तू केवल बुराई करने के लिये अपने तईं न कुढ़ा। क्योंकि कुकर्म्मी काट डाले जायेंगे और परमेश्वर के आश्रित वे ही पृथिवी के अधिकारी होंगे। और थोड़ी बेर में और दुष्ट है ही नहीं और तू उस के स्थान पर सोच करेगा वह भी किञ्चित नहीं। और दीन पृथिवी के अधिकारी होंगे और चैन की बहुताई से अपने तईं मगन करेंगे।

दुष्ट धर्म्मी के लिये युक्ति बांधता है और उस पर अपने दांत किचकिचाता है। प्रभु उस पर हंसता है क्योंकि उस ने देखा है कि उस का दिन आयेगा। दुष्टों ने तलवार निकाली और अपनी कमान खैंची है जिसतें दुखी और कंगाल को गिरा दें और उन्हें जिन का मार्ग सीधा है बध करें। उन की तलवार उन्हीं के हृदय में पैठेगी और उन के धनुष तोड़े जायेंगे।

थोड़ा सा जो धर्म्मी का है बहुत दुष्टों के हूहूकार से भला है। क्योंकि दुष्टों की भुजा तोड़ी जायेगी और धर्म्मियों का संभालनेहारा परमेश्वर है।

परमेश्वर खरों के दिनों को जानता है और उन का अधिकार सर्बदा लों रहेगा। वे बिपत्ति के समय

लज्जित न होंगे और अकाल के दिनों में तृप्त रहेंगे। क्योंकि दुष्ट नष्ट होंगे और परमेश्वर के बैरी मेम्ना की चिकनाई की नाईं जाते रहे वे धूएं में जाते रहे । दुष्ट उधार लेता है और भर नहीं देता और धर्म्मी दया करता है और देता है । क्योंकि उस के आशीर्बादी लोग पृथिवी के अधिकारी होंगे और उस के स्रापित काट डाले जायेंगे ।

भले मनुष्य के डग परमेश्वर से स्थिर हुए और वह उस के मार्ग में आनन्दित होगा । क्योंकि वह गिरेगा परन्तु पड़ा न रहेगा क्योंकि परमेश्वर उस का हाथ थामता है । मैं बालक था बृद्ध भी हुआ और मैं ने धर्म्मी को अब्यवहारित और उस के बंश को रोटी मांगते न देखा । वह सारे दिन दया करता है और उधार देता है और उस का बंश आशीष का कारण है ।

बुराई से अलग हो और भलाई कर और सदा लों बास कर । क्योंकि परमेश्वर न्याय से प्रीति रखता है और अपने अनुग्रहीतों को छोड़ न देगा वे सदा लों रक्षित हैं और दुष्टों का बंश कट गया । धर्म्मी भूमि के अधिकारी होंगे और सदा लों उस पर बास करेंगे ।

धर्म्मी का मुंह बुद्धि बर्णन करता है और उस की जीभ न्याय का बचन बोलती है । उस के ईश्वर की व्यवस्था उस के मन में है उस के डग न हटेंगे । दुष्ट धर्म्मी की घात में लगा रहता है और उसे घात करने

चाहता है। परमेश्वर उसे उस के हाथ में न छोड़ेगा और जब उस का न्याय किया जाय तब उसे दोषी न ठहरावेगा। परमेश्वर के लिये आशा कर और उस के मार्ग को थाम और वह तुझे पृथिवी के अधिकारी होने के लिये बढ़ती देगा जब दुष्ट काट डाले जायेंगे तब तू देखेगा।

मैं ने दुष्ट को डरौना और देसी हरे पेड़ के नाईं अपने तईं फैलते हुए देखा। और वह जाता रहा और देख वह था ही नहीं और मैं ने उसे ढूंढ़ा और वह न मिला। सिद्ध मनुष्य को ताक रख और खरे को देख क्योंकि कुशल चाहनेहारे मनुष्य के लिये अन्त है। और अपराधी एक ही संग नष्ट हुए दुष्टों का अन्त कट गया। और धर्म्मियों की मुक्ति परमेश्वर से है दुख के समय वह उन का गढ़ है। और परमेश्वर ने उन की सहायता किई और उन्हें छुड़ाया है वह उन्हें दुष्टों से छुड़ावेगा और उन्हें बचावेगा क्योंकि उन्हों ने उस पर भरोसा रक्खा है।

अठतीसवां गीत।

स्मरण कराने के लिये दाऊद का गीत।

हे परमेश्वर अपने क्रोध से मुझे मत दपट और न अपने कोप की तपन से मुझे दण्ड दे। क्योंकि तेरे बाण मुझ में चुभ गये हैं और तेरा हाथ मुझ पर बल के साथ पड़ा है।

तेरे कोप के कारण से मेरी देह में कहीं आरोग्यता नहीं मेरे पाप के कारण से मेरी हड्डियों में कहीं कल

नहीं। क्योंकि मेरे अधर्म्म मेरे सिर पर से ऊपर हो गये भारी बोझ की नाईं वे मेरे लिये भारी हैं। मेरी मूर्खता के कारण से मेरे घाव बास करने लगे और बहते हैं। मैं ऐंठ गया अति झुक गया मैं सारे दिन मैला कुचैला चलता फिरता रहा। क्योंकि मेरी कटि शुष्क से भर गई और मेरी देह में कहीं आरोग्यता नहीं। मैं ठिठुर गया और अति पिस गया हूं अपने मन के चिल्लाने से गर्ज उठा हूं।

हे प्रभु मेरी सारी इच्छा तेरे आगे है और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं। मेरा मन धड़कता है मेरे बूते ने मुझे छोड़ दिया है और मेरी जिन आंखों में ज्योति थी वे भी मेरे साथ नहीं हैं। मेरे मित्र और मेरे साथी मेरी ताड़ना के आगे से अलग खड़े हैं और मेरे कुटुम्ब दूर खड़े हुए हैं। और जो मेरे प्राण के गाहक हैं उन्हों ने फंदे लगाये हैं और मेरी हानि के चाहकों ने बुराई की बातें कही हैं और सारे दिन छल की जुगुत सोचते हैं। और मैं बहिरे के समान नहीं सुनता और गूंगे के समान हूं जो अपना मुंह नहीं खोलता। और मैं उस मनुष्य की नाईं हुआ जो नहीं सुनता और जिस के मुंह में कुछ उत्तर नहीं।

क्योंकि हे परमेश्वर मैं ने तेरी बाट जोही हे प्रभु मेरे ईश्वर तू ही उत्तर देगा। क्योंकि मैं ने कहा न हो कि वे मुझ पर आनन्दित होवें मेरे पांव के टलने में वे मुझ पर फूले हैं। क्योंकि मैं लंगड़ाने पर हूं और मेरा शोक सदा मेरे आगे है। क्योंकि मैं अपना

अधर्म्म मान लेता हूं अपने पाप के कारण से उदास रहता हूं। और मेरे प्राण के बैरी बलवन्त हैं और जो अकारथ मेरे बैरी हैं वे बढ़ गये। और वे जो भलाई की सन्ती बुराई का बदला देते हैं वे इस कारण से मेरे बिरोधी हैं कि मैं भलाई का पीछा करता हूं। हे परमेश्वर मुझे मत त्याग हे मेरे ईश्वर मुझ से दूर मत रह। मेरी सहाय के लिये शीघ्र कर हे मेरी मुक्ति के प्रभु।

उन्तालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये अर्थात् यदूतून के लिये दाऊद का गीत।

मैं ने कहा कि अपने मार्गों की चैाकसी करूंगा जिसतें अपनी जीभ से पाप न करूं जब लों कि दुष्ट मेरे साम्हने है मैं अपने मुंह पर खोंच लगाऊंगा। मैं गूंगा होके चुप हो रहा भलाई से अपना मुंह मूंद लिया और मेरा शोक उभारा गया। मेरा मन मेरे भीतर जल उठा जब मैं सोचता हूं तब आग भड़कती है मैं अपनी जीभ से बोल उठा।

कि हे परमेश्वर मेरे अन्त का मुझे ज्ञान दे और मेरे दिनों का प्रमाण कि वह कितना है मैं जान्ने चाहता हूं कि किस समय समाप्त हूंगा। देख तू ने मेरे दिन बित्तों से दिये हैं और मेरी स्थापिता तेरे साम्हने मानो निकम्मा है सारे मनुष्य केवल सर्वथा बृथा स्थापित हुए हैं। सिलाह। मनुष्य केवल स्वरूप में चलता फिरता है वे केवल क्षण भर धूमधाम करते हैं वह धन का

ढेर करता है और नहीं जानता कि कौन उन्हें बटोर
ले जायगा ।
और अब मैं ने किस की बाट जोही है हे प्रभु मेरी
आशा तुझी पर है। मुझ को मेरे सारे अपराधों से
छुड़ा मुझे मूर्खों की निन्दा न बना। मैं चुपका हो
गया हूं अपना मुंह न खोलूंगा क्योंकि तू ही ने यह
किया है। अपनी ताड़ना मुझ पर से हटा ले मैं तो
तेरे हाथ की मार से नाश हो गया। तू अधर्म्म के
कारण से दपटों के साथ मनुष्य को दण्ड देता है और
उस की बाञ्छित बस्तु को कीड़े के समान नाश कर
डालता है सारे मनुष्य केवल बृथा हैं। सिलाह।
हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन ले और मेरी दोहाई
पर कान धर मेरे आंसुओं से चुप मत रह क्योंकि मैं
तेरे साथ परदेशी हूं अपने सारे पितरों की नाईं यात्री।
१ मुझ से क्रोध की दृष्टि फेर ले और मैं मगन हूं उस्से
पहिले कि मैं जाऊं और फिर न रहूं।

चालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत।

१ मैं ने धीरज के साथ परमेश्वर की बाट जोही है
और उस ने अपना कान मेरी ओर झुकाया और
२ मेरी दोहाई सुनी। और मुझे भयङ्कर गहिराव से और
दलदल की कीच से उठा लिया और मेरे पांओं को
चटान पर स्थिर किया उस ने मेरे डगों को अचल
३ किया। और मेरे मुंह में नया गीत डाला अर्थात्
हमारे ईश्वर की स्तुति बहुतेरे देखेंगे और डरेंगे और

परमेश्वर पर भरोसा रक्खेंगे। वह मनुष्य क्या ही धन्य है जिस ने परमेश्वर को अपनी आड़ का स्थान ठहराया है और अहङ्कारियों की और उन की ओर जो झूठ की ओर बगदते हैं नहीं फिरा।

हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू ने बहुत से काम किये हैं हो नहीं सक्ता कि तेरे अनूठे और तेरी चिन्तों को जो हमारे बिषय में हैं तेरे साम्हने क्रम से बखान कर सकें मैं चर्चा और बर्णन किया चाहता हूं परन्तु वे गिन्ती से बाहर हैं। बलि और भेंट से तू प्रसन्न नहीं तू ने मेरे कान छेदे हैं बलिदान की भेंट और पाप की भेंट को तू ने नहीं चाहा। तब मैं ने कहा देख मैं आता हूं पुस्तक के पत्रों में मेरे विषय में लिखा है। हे मेरे ईश्वर मैं तेरी इच्छा मान्ने से आनन्दित हुआ हूं और तेरी व्यवस्था मेरे मन के भीतर है। मैं ने बड़ी मण्डली में धर्म्म को प्रचारा है देख मैं अपने होंठों को न रोकूंगा हे परमेश्वर तू जानता है। मैं ने तेरे धर्म्म को अपने मन के भीतर नहीं छिपाया मैं ने तेरी सच्चाई और तेरी मुक्ति को बर्णन किया है मैं ने तेरी दया और तेरी सच्चाई को बड़ी मण्डली से नहीं छिपाया।

हे परमेश्वर तू अपनी दया मुझ से रोक न रक्खेगा तेरी दया और तेरी सच्चाई नित मेरी रक्षा करेंगी। क्योंकि अगणित बुराइयों ने मुझे घेरा है मेरे पापों ने मुझे पकड़ लिया है और मैं देख नहीं सक्ता वे मेरे सिर के बालों से अधिक हैं और मेरे

१३ मन ने मुझे छोड़ दिया है। हे परमेश्वर मुझे छुट-
कारा देने पर प्रसन्न हो हे परमेश्वर मेरी सहायता
१४ के लिये शीघ्र कर। वे जो मेरे प्राण के चाहक हैं
कि उसे नाश करें एक साथ लज्जित और सङ्कोचित
होंगे मेरे दुख के चाहनेहारे पीछे हटाये और लज्जित
१५ किये जायेंगे। जो मुझ पर अहा अहा कहते हैं वे
१६ अपनी लाज के कारण से उजड़ जायेंगे। तेरे सारे
खोजी तुझ से आनन्दित और मगन होंगे तेरी मुक्ति
के प्रेमी नित कहा करेंगे कि परमेश्वर महान हो।
१७ और मैं दुखी और कंगाल हूं परमेश्वर मेरी चिन्ता
करेगा मेरा सहायक और मेरा छुड़ानेवाला तू ही है
हे मेरे ईश्वर बिलम्ब न कर।

एकतालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत।

१ वह क्या ही धन्य है जो कंगाल के बिषय में
बुद्धिमानी करता है परमेश्वर बिपत्ति के दिन उसे
२ छुड़ावेगा। परमेश्वर उस की रक्षा करेगा और उसे
जीता रक्खेगा वह भूमि पर आशीषित रहेगा और तू
३ उसे उस के बैरियों की इच्छा पर न छोड़। परमेश्वर
उसे रोग के बिछौने पर संभालेगा तू ने उस की
बेरामी में उस के सारे बिछौने को उलटके बिछाया
है।

४ मैं ने कहा है कि हे परमेश्वर मुझ पर दया कर
मेरे प्राण को चंगा कर क्योंकि मैं ने तेरा पाप किया
५ है। मेरे बैरी मेरे बिषय में बुरा कहते हैं कि वह

कब मरेगा और कब उस का नाम मिट जायेगा। और यदि वह देखने को आए तो मिथ्या बोलेगा वह अपने मन में अपने लिये अधर्म्म बटोरता है वह बाहर जायेगा और मार्ग में बखान करेगा। मेरे सारे बैरी आपुस में मेरे बिरोध में फुसफुसाते हैं वे मेरे बिषय में मेरी हानि की परामर्श करते हैं। दुष्टता की बात उस में उंडेली गई और जो वहां पड़ा है वह फेर न उठेगा। जिस्से मैं मिलाप रखता था जिस पर मेरा भरोसा था जो मेरी रोटी खाता था उस मनुष्य ने भी मुझ पर लात उठाई है।

और तू हे परमेश्वर मुझ पर दया कर और मुझे उठाके खड़ा कर और मैं उन से बदला लूंगा। इस्से मैं ने जाना है कि तू मुझ से प्रसन्न हुआ कि मेरा बैरी मुझ पर जय नहीं पा सक्ता। और मैं जो हूं तू ने मेरी खराई में मुझे थांभा और मुझे अपने साम्हने सदा लों रक्खा है। परमेश्वर इसराएल का ईश्वर सनातन से सनातन लों धन्य होवे। आमीन और आमीन।

बयालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों के लिये उपदेश का गीत।

जैसा हरिणी पानी की नदियों के लिये हांफती है वैसा ही मेरा प्राण हे ईश्वर तेरे लिये हांफता है। मेरा प्राण ईश्वर के लिये जीवते सर्बशक्तिमान के लिये पियासा है मैं कब आऊंगा और ईश्वर के आगे आके

उपस्थित होऊंगा। मेरा आंसू रात दिन मेरे लिये रोटी हुआ है जब वे सारे दिन मुझ से कहते थे कि तेरा ईश्वर कहां है। मैं इन बातों को स्मरण करूंगा और मन ही मन में सोच ओ बिचार करूंगा जब मण्डली में चलूंगा आनन्द और स्तुति के शब्द और पर्ब के धूमधाम से उन के संग ईश्वर के घर में जाऊंगा।

हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया करेगा और मुझ में धूम मचायेगा ईश्वर की बाट जोह क्योंकि मैं उस के मुंह की मुक्ति के लिये फिर उस की स्तुति करूंगा।

हे मेरे ईश्वर मेरा प्राण मुझ में आप को झुकाया करता है इस कारण मैं यरदन और हरमूनीम की भूमि से और मिसग़ार के पहाड़ से तुझे स्मरण करूंगा। तेरे परनालों के शब्द से गहिराव गहिराव को पुकारता है तेरी सारी लहरें और तेरे ढेव मेरे ऊपर से चले गये हैं। दिन को परमेश्वर अपनी दया और रात को अपना गीत मेरे साथ रहने की आज्ञा करेगा मेरे जीवन के सर्वशक्तिमान से मेरी प्रार्थना होगी। मैं सर्वशक्ति-मान से जो मेरी चटान है कहूंगा कि तू मुझे क्यों भूल गया मैं क्यों बैरी के अंधेर से बिलाप करता चलूं। मेरी हड्डियों की टूटन के संग मेरे बैरियों ने मुझ पर निन्दा किई है जब वे सारे दिन मुझ से कहते थे कि तेरा ईश्वर कहां है।

हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया करेगा और

क्यों मुझ में धूम मचाया करेगा ईश्वर की बाट जोह क्योंकि मैं फिर उस की स्तुति करूंगा जो मेरे मुंह की मुक्ति और मेरा ईश्वर है।

तेंतालीसवां गीत।

हे ईश्वर मेरा न्याय कर और निर्दई जातिगण से मेरे बिवाद में मेरी सहाय कर छली और टेढ़े मनुष्य से तू मुझे छुड़ावेगा। क्योंकि मेरे गढ़ का ईश्वर तू ही है किस कारण तू ने मुझे छोड़ा है किस कारण मैं बैरी के अंधेर से शोक करता फिरूं। अपनी ज्योति और अपनी सच्चाई को भेज वे ही मेरी अगुआई करेंगी मुझे तेरे पवित्र पर्बत पर और तेरे तंबुओं के पास पहुंचायेंगी। और मैं ईश्वर की बेदी के पास आऊंगा सर्बशक्तिमान के पास जो मेरा बड़ा आनन्द है और हे ईश्वर मेरे ईश्वर मैं बीणा के संग तेरी स्तुति करूंगा।

हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया करेगा और क्यों मुझ में धूम मचायेगा ईश्वर की बाट जोह क्योंकि मैं फिर उस की स्तुति करूंगा जो मेरे मुंह की मुक्ति और मेरा ईश्वर है।

चवालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों के लिये उपदेश का गीत।

हे ईश्वर हम ने अपने कानों से सुना हमारे पितरों ने हम से वह कार्य्य बर्णन किया है जो तू ने उन के दिनों में अगले समयों में किया। तू ने अपने हाथ से जातिगणों को बिन अधिकार किया और

इन्हें जमाया लोगों को दबाया और इन्हें फैलाया। क्योंकि वे अपनी ही तलवार से पृथिवी के अधिकारी नहीं हुए और न उन की भुजा ने उन्हें मुक्ति दिई परन्तु तेरे दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे रूप की ज्योति ने यह किया क्योंकि तू उन से प्रसन्न था।

हे ईश्वर तू ही मेरा राजा है यअ़क़ूब के लिये छुटकारे की आज्ञा कर। तेरी ही सहाय से हम अपने सतानेहारों को ठेल देंगे हम तेरे नाम से अपने बिरोधियों को लतरौंदन करेंगे। क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रक्खूंगा और मेरी तलवार मुझे छुटकारा न देगी। क्योंकि तू ने हमें हमारे सतानेहारों से बचाया और हमारे शत्रुन को लज्जित किया है। हम ने सारे दिन ईश्वर पर फूलना किया है और सदा तेरे नाम का स्वीकार करेंगे। सिलाह।

परन्तु तू ने हमें त्यागा और लज्जित किया है और हमारी सेनाओं के साथ न चलेगा। तू सतानेहारे के साम्हने से हमें पांव के पीछे करेगा और हमारे शत्रुओं ने अपने लिये लूट पाई है। तू हमें भोजन की भेड़ों के समान बनायेगा और जातिगणों के मध्य तू ने हमें छिन्न भिन्न किया है। तू अपने लोगों को सेंत बेच डालेगा और तू ने उन के मोल से अपने धन को नहीं बढ़ाया है। तू हमें हमारे परोसियों के लिये निन्दा बनायेगा हमारे अड़ोस पड़ोस वालों के लिये ठट्ठा और हंसी। तू हमें जातिगणों में कहावत बनावेगा लोगों में सिर हिलाने का कारण। सारे दिन मेरा अपमान

मेरे साम्हने है और लाज ने मेरे मुंह को ढांप लिया है। दूषक और ठट्ठा करनेहारे के शब्द से बैरी और पलटा लेनेहारे के साम्ने से।

यह सब हम पर बीता और हम तुझे नहीं भूले और न तेरी बाचा से बगद गये हैं। हमारा मन पीछे नहीं फिरा और न हमारा डग तेरे मार्ग से हटा। कि तू ने हमें गीदड़ों के स्थान में कुचला है और मृत्यु की छाया से हमें ढांपा है। यदि हम अपने ईश्वर के नाम को भूले और उपरी देव की ओर अपने हाथ फैलाये हों। क्या ईश्वर इसे ढूंढ़ न निकालेगा क्योंकि वही मन के भेदों को जानता है। क्योंकि हम तेरे लिये सारे दिन घात हुए हैं हम घात होने की भेड़ के नाईं गिने गये हैं।

जाग हे प्रभु तू किस लिये सोता रहेगा जाग सदा लों दूर न कर। तू किस लिये अपना मुंह छिपायेगा हमारे दुख और हमारी बिपत्ति को भुला देगा। क्योंकि हमारा प्राण धूल लों झुक गया हमारा पेट भूमि से चिपक गया। हमारी सहाय के लिये उठ और अपनी दया के कारण से हमें उद्धार दे।

पैंतालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये सोसनों के बिषय में कोरह के पुत्रों के लिये उपदेश का गीत पियारियों का गान।

मेरा मन उबल रहा है मैं अच्छी बात कहता हूं मेरे कार्य्य राजा के लिये हों मेरी जीभ चटक लेखक की लेखनी हो। तू मनुष्य के सन्तानों से अति सुन्दर

ओ स्वरूप है तेरे होंठों में अनुग्रह उंडेला गया है इसी लिये ईश्वर ने तुझे सदा के लिये आशीष दिई है।

हे शक्तिमान अपनी तलवार कटि पर बांध अपने बिभव और अपने माहात्म्य समेत। और अपने माहात्म्य में सत्यता और कोमलता ओ धर्म्मता के कारण चढ़के आगे बढ़ और तेरा दहिना हाथ तुझे भयङ्कर कार्य्यों का मार्ग दिखावेगा। राजा के बैरियों के अन्तःकरण में तेरे बाण चोखे किये गये हैं लोग तेरे नीचे गिरेंगे।

हे ईश्वर तेरा सिंहासन सनातन से सनातन लों है तेरे राज्य का राजदण्ड सच्चाई का दण्ड है। तू ने धर्म्म को प्रेम रक्खा और दुष्टता से घिन किया है इसी कारण से ईश्वर तेरे ईश्वर ने आनन्द के तेल से तेरे संगियों से अधिक तुझे अभिषिक्त किया है।

तेरे सारे पहिरावे बोल और अगर और तज हैं हाथीदांत के भवनों से वहीं से उन्हों ने तुझे आनन्दित किया है। राजा की बेटियां तेरी बहुमूलियों में हैं रानी ओफीर के सोने से संवारी जाके तेरे दहिने हाथ बैठलाई गई है। हे बेटी सुन और देख और अपना कान झुका और अपनी जाति और अपने पिता के घर को भूल जा। और राजा तेरी सुन्दरता का अभिलाषी हो क्योंकि वही तेरा प्रभु है और तू उस को दण्डवत कर। और सूर की बेटी अर्थात् सब से धनवान लोग भेंट के द्वारा से तेरी कृपा की बिन्ती करेंगे।

राजा की बेटी भवन के भीतर सम्पूर्ण पराक्रमी है उस का पहिराव सोनहला बूटेदार है। बहुरङ्गी पहिराव

में वह राजा के पास पहुंचाई जायगी उस के पीछे पीछे उस की संगी कुंआरियां तुझ पास लाई गईं। वे मङ्गल और मगनता के संग पहुंचाई जायेंगी राजा के भवन में आयेंगी। तेरे पितरों की संती तेरे सन्तान होंगे तू उन्हें सारी पृथिवी पर अध्यक्ष ठहरावेगा। मैं सारी पीढ़ियों में तेरे नाम का स्मरण कराऊंगा इस कारण से लोग सर्बदा लों तेरा स्वीकार करेंगे।

छियालीसवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये कोरह के पुत्रों के लिये कुमारियों के शब्द के संग। गान।

ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान और बल है वह बिपतों में बड़ा ही सहायक पाया गया। इसी कारण से पृथिवी के बदल जाने और पर्बतों के समुद्रों के अन्तःकरण में हिल जाने से हम न डरेंगे। उस के पानी हड़हड़ावें और फेनावें उस के बढ़ने से पर्बत थर्थरावें। सिलाह। एक नदी है जिस की धारें ईश्वर के नगर अर्थात् अति महान के निवासों के पवित्र स्थान को आनन्दित करेंगी। ईश्वर उस के मध्य में है वह न टलेगा ईश्वर बिहान होते ही उस की सहाय करेगा। जातिगणों ने हुल्लर मचाया राज्य कंप उठे उस ने अपना शब्द दिया है पृथिवी पिघल जायगी। परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे साथ है यअकूब का ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान है। सिलाह।

आओ परमेश्वर के कार्य्यों को देखो जिस ने पृथिवी पर उजाड़ किया है। जो पृथिवी के अन्त

लों लड़ाइयों को उठा डालता है वह धनुष को तोड़ेगा
और बर्छी को टुकड़े टुकड़े करेगा रथों को आग से
१० जलावेगा। थम जाओ और जानो कि मैं ईश्वर हूं
मैं जातिगणों में प्रतिष्ठित होऊंगा पृथिवी पर महान
११ होऊंगा। परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे साथ है
यअ़क़ूब का ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान है। सिलाह।

सैंतालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों का गीत।

१ हे सब लोगो तालियां बजाओ जय के शब्द से
२ ईश्वर के लिये ललकारो। क्योंकि परमेश्वर महान
३ भयङ्कर है वह सारी पृथिवी पर महाराजा है। वह
जातिगणों को हमारे नीचे दबायेगा और लोगों को
४ हमारे पांव के नीचे। वह हमारे लिये हमारे अधिकार
को चुनेगा यअ़क़ूब की ऊंचाई को जिसे उस ने प्यार
किया है। सिलाह।

५ ईश्वर ललकार के साथ चढ़ गया है परमेश्वर
६ तुरही के शब्द के साथ। ईश्वर की स्तुति में भजन करो
भजन करो हमारे राजा की स्तुति में भजन करो भजन
७ करो। क्योंकि ईश्वर सारी पृथिवी पर राजा है उपदेश
८ देनेहारे गान से उस की स्तुति में भजन करो। ईश्वर
जातिगणों पर राजा हुआ ईश्वर अपने पवित्र
९ सिंहासन पर बैठा है। लोगों के अध्यक्ष अबिरहाम
के ईश्वर के लोग होकर एकट्ठा हुए क्योंकि पृथिवी
की ढालें ईश्वर की हैं वह अत्यन्त महान है।

अठतालीसवां गीत।

कोरह के पुत्रों का गीत और गान।

हमारे ईश्वर के नगर में अपने पवित्र पहाड़ पर परमेश्वर महान और अति स्तुति के योग्य है। ऊंचाई में सुन्दर सारी पृथिवी का आनन्द उत्तर की अलंग में सैहून पर्बत महाराज का नगर है। ईश्वर उस के भवनों में शरण का स्थान जाना गया है।

क्योंकि देखो राजा आपुस में मिले वे एक साथ ही चले गये। ज्योंहीं उन्हों ने देखा वोंहीं आश्चर्य्यित हुए घबरा गये भाग निकले। वहां जन्नेहारी की पीड़ा की नाईं कंपकंपी ने उन्हें पकड़ा। तू तरसीस के जहाजों को पूरबी पवन से तोड़ेगा। जैसा हम ने सुना था वैसा ही हम ने परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के नगर में अपने ईश्वर के नगर में देखा है ईश्वर उसे सदा लों स्थिर रक्खेगा। सिलाह।

हे ईश्वर हम ने तेरे मन्दिर के मध्य तेरी दया
पर सोच किया है। हे ईश्वर जैसा तेरा नाम वैसा १
ही तेरी स्तुति पृथिवी के अन्त लों है तेरा दहिना
हाथ धर्म्म से भरा है। तेरे न्यायों के कारण से सैहून १
पहाड़ आनन्दित और यहूदाह की बेटियां मगन
होंगी।

सैहून का चक्र करो और उस के ओर पार फिरो १
उस के गुम्मटों को गिनो। अपना मन उस के परकोट १
पर लगाओ उस के भवनों का बर्त्तमान करो जिसतें
तुम आनेहारी पीढ़ी से बर्णन करो। क्योंकि यह १

ईश्वर सनातन लों हमारा ईश्वर है वही मृत्यु लों
हमारा अगुआ होगा ।

उंचासवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों का गीत ।

१ हे सारे लोगो यह सुनो हे जगत के सारे बासियो
२ कान लगाओ । क्या छोटे क्या बड़े धनी और कंगाल
३ एक ही साथ । मेरा मुंह बुद्धि की बातें करेगा और
४ मेरे मन का सोच बुद्धि है । मैं अपना कान दृष्टान्त
की ओर लगाऊंगा बीणा के साथ अपनी पहेली
खोलके कहूंगा ।

५ मैं क्लेश के दिनों में किस लिये डरूं जब मेरे लताड़ने-
६ हारों की बुराई मुझे घेरेगी । जो अपने बल पर
भरोसा करते हैं और अपनी सम्पत्ति की बहुताई पर
७ फूलते हैं । मनुष्य अपने भाई का छुटकारा किसी
प्रकार न दे सकेगा और न ईश्वर को अपना प्रायश्चित्त
८ देगा । और उन के प्राण का प्रायश्चित्त बहुमूल्य है
९ और वह सर्बदा के लिये उस्से असाध्य है । कि सदा
लों जीता रहे और सड़न को न देखे ।

० क्योंकि वह उसे देखेगा बुद्धिमान मरेंगे मूढ़ और
पशुवत एक ही संग नष्ट होंगे और अपनी सम्पत्ति
१ औरों के लिये छोड़ जायेंगे । उन के मन की चिन्ता
यह है कि हमारे घर सदा लों स्थिर रहेंगे हमारे
निवास पीढ़ी से पीढ़ी लों उन्हों ने अपने अपने खेतों
२ पर अपने नाम रक्खे हैं । पर मनुष्य प्रतिष्ठा में न
टिकेगा वह पशु की नाईं ठहराया गया है वे नाश

हुए। यह उन की चाल है उन की ऐसी मूर्खता है और उन के पीछे आनेहारे उन की बातें से आनन्दित होंगे। सिलाह। वे झुण्ड की नाईं समाधि की ओर हंकाये जाते हैं मृत्यु उन का चरवाहा होगी और बिहान को धर्म्मी उन पर प्रभुता करेंगे और उन का स्वरूप समाधि में गल जायेगा वे अपने निवास से उस में उतरते हैं। केवल ईश्वर समाधि के हाथ से मेरे प्राण का छुटकारा देगा क्योंकि वह मुझे उस्से निकाल लेगा। सिलाह।

इस्से मत डर कि मनुष्य धनवान हो जाय कि उस के घर का बिभव बढ़े। क्योंकि वह अपनी मृत्यु में कुछ न ले जायगा उस का बिभव उस के पीछे उतरेगा। क्योंकि वह अपने जीवन में अपने प्राण को आशीष देगा और लोग तेरी स्तुति करेंगे इस कारण से कि तू अपने लिये भला करता है। तू अपने पितरों की पीढ़ी में मिल जायगा वे सदा लों उंजियाले को न देखेंगे। जो मनुष्य का सन्तान बिभव में है और समझ नहीं रखता वह उन पशुओं की नाईं ठहराया गया है जो नाश होते हैं।

पचासवां गीत।

आसफ़ का गीत।

सर्बशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर ने उच्चारण किया है और पृथिवी को सूर्य्य के उदय से उस के अस्त लों बुलाया है। सैहून से जो सुन्दरता की सम्पूर्णता है ईश्वर उजागर हुआ है। हमारा ईश्वर आवेगा

और चुपचाप न रहे आग उस के साम्हने खा जायगी
और उस के आस पास बड़ी चञ्चल औ तीछ्ण होगी।
४ वह ऊपर स्वर्गों को और पृथिवी को बुलायेगा जिसतें
५ अपने लोगों का न्याय करे। मेरे साधुओं को जो
बलिदान पर मुझ से बाचा बांधते हैं मेरे लिये एकट्ठा
६ करो। और अब स्वर्गों ने उस के धर्म्म को प्रगट किया
है क्योंकि ईश्वर आप ही न्यायी है। सिलाह।
७ हे मेरे लोगो सुनो और मैं उच्चारण करूंगा हे
इसराएल और मैं तुझ पर साक्षी देऊंगा ईश्वर तेरा
८ ईश्वर मैं ही हूं। मैं तेरे बलिदानों और तेरे जलाने
की भेंटों के कारण जो नित मेरे साम्हने होती हैं तुझे
९ धिक्कार न करूंगा। मैं तेरे घर से बैल और तेरे भेड़शाले
१० से बकरे न लेऊंगा। क्योंकि बन के सारे पशु और
११ पहाड़ों पर सहस्रों ढोर मेरे हैं। मैं पहाड़ों के हर पक्षी
१२ को जानता हूं और चौगान के पशु मेरे पास हैं। यदि
मैं भूखा हूं तो तुझ से न कहूंगा क्योंकि जगत और
१३ उस की भरपूरी मेरी है। क्या मैं बैलों का मांस
१४ खाऊंगा और बकरों का लोहू पीऊंगा। ईश्वर के लिये
धन्यबाद की भेंट चढ़ा और अति महान के लिये अपनी
१५ मनौतियां पूरी कर। और बिपत्ति के दिन मुझे पुकार
मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू मेरी महिमा प्रगट करेगा।
१६ और ईश्वर ने दुष्ट से कहा है कि तुझे क्या है कि
मेरी बिधिन को प्रगट करे और मेरी बाचा को अपनी
१७ जीभ पर लाये। और तू ने उपदेश से बैर रक्खा और
१८ मेरे बचनों को अपने पीछे डाल दिया है। जब तू ने

चोर को देखा तो उस्से प्रसन्न हुआ और व्यभिचारियों का साझी हुआ। तू ने अपना मुंह बुराई के समर्पण किया है और तेरी जीभ छल का उपाय बांधेगी। तू बैठके अपने भाई के बिरोध बातें करता है अपनी माता के बेटे को धक्का देता है।

तू ने ये कार्य्य किये और मैं चुपका हो रहा तू ने समझा कि मैं सर्वथा तुझी सा हूं मैं तुझे दपटूंगा और तेरे पापों को तेरी आंखों के साम्हने संभारके धरूंगा। हे ईश्वर के बिसरवैयो मैं बिन्ती करता हूं सोचो न हो कि मैं फाड़ूं और कोई छुड़वैया न हो।

जो गुणाबाद की भेंट चढ़ाता है वह मेरी महिमा प्रगट करेगा और जो अपना मार्ग ठीक रखता है मैं उसे ईश्वर की मुक्ति दिखलाऊंगा।

एकावनवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत जब नातन भविष्यद्वक्ता उस पास आया जब कि वह बिन्तसबअ़ पास गया था।

हे ईश्वर अपनी दया के समान मुझ पर कृपा कर अपनी दया की अधिकाई के समान मेरे अपराधों को मिटा दे। मेरे अधर्म्म से मुझे भली भांति धो और मेरे पाप से मुझे पावन कर।

क्योंकि मैं अपने अपराधों को जानता हूं और मेरा पाप सदा मेरे साम्हने है। मैं ने तेरा केवल तेरा ही अपराध किया है और तेरी दृष्टि में बुराई किई है जिसतें तू अपनी बात में सच्चा रहे और अपने बिचार

५ में शुद्ध ठहरे। देख मैं अधर्म्म में उत्पन्न हुआ और पाप
के संग मेरी माता ने मुझे गर्भ में लिया।
६ देख तू ने अन्तर में सच्चाई चाही है और गुप्त में
७ तू मुझे बुद्धि की पहिचान देगा। तू मुझे जूफ़ा से
पावन करेगा और मैं पवित्र होऊंगा मुझे धो डालेगा
८ और मैं पाला से अधिक उजला हो जाऊंगा। तू मुझे
आनन्द और मगनता का सन्देश सुनावेगा तब वह
९ हड्डियां जिन्हें तू ने कुचला है आनन्दित होंगी। मेरे
पापों से अपना मुंह छिपा और मेरे सारे अधर्म्मों को
१० मिटा दे। हे ईश्वर मेरे लिये पवित्र मन उत्पन्न कर
११ और स्थिर आत्मा मेरे भीतर में नवीन बना। मुझे
अपने आगे से मत निकाल और अपना पवित्र आत्मा
१२ मुझ से मत ले। अपनी मुक्ति की आनन्दता मुझे
फिर दे और प्रसन्न आत्मा से मुझे संभाल।
१३ तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊंगा और
१४ पापी तेरी ओर फिरेंगे। हे ईश्वर मेरी मुक्ति के ईश्वर
हत्या से मुझे छुड़ा और मेरी जीभ तेरे धर्म्म के गीत
१५ गावेगी। हे प्रभु तू मेरे होंठों को खोलेगा और मेरा
१६ मुंह तेरी स्तुति बर्णन करेगा। क्योंकि तू बलिदान
से प्रसन्न नहीं होता नहीं तो मैं देता होम के बलिदान
१७ से तू प्रसन्न नहीं है। ईश्वर के बलिदान चूर्ण आत्मा
हैं चूर्ण अन्तःकरण और कुचले हुए को हे ईश्वर तू
तुच्छ न जानेगा।
१८ अपनी प्रसन्नता से सैहून पर दया कर तू यरूसलम
१९ की भीतों को बनावेगा। तब तू धर्म्म के बलिदानों

और होम और पूरी भेंटों से आनन्दित होगा तब वे तेरी बेदी पर बैल चढ़ावेंगे।

बावनवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत जब अदूमी दोयेग आया और साऊल को सन्देश दिया और उस्से कहा कि दाऊद अख़िमलिक के घर में आया है।

हे बलवान तू क्यों बुराई पर फूलता है सर्बशक्तिमान की कृपा सारे दिन रहती है। तीक्ष्ण किये हुए छुरे की नाईं जो छल से अपना कार्य्य करता है तेरी जीभ बुराइयां निकाला करती है। तू ने भलाई से अधिक बुराई को और सत्य बोलने से अधिक झूठ को प्यार किया है। सिलाह। हे छली जीभ तू ने सारी नाश करनेहारी बातों को प्यार किया है।

सर्बशक्तिमान भी तुझे सदा के लिये ढा देगा वह तुझे झाड़ डालेगा और तुझे तेरे तंबू से निकाल फेंकेगा और तुझे जीवन की भूमि से उखाड़ डालेगा। सिलाह। और धर्म्मी देखेंगे और डरेंगे और उस पर हंसेंगे। देख उस बलवान को जो ईश्वर को अपना शरणस्थान नहीं ठहराता और अपने धन की अधिकाई पर भरोसा रखता है और अपनी दुष्टता में प्रबल रहता है।

परन्तु मैं ईश्वर के मन्दिर में हरे जलपाई के पेड़ की नाईं हूं मैं ने ईश्वर की दया पर जो सदा सर्बदा लों रहेगी भरोसा रक्खा है। मैं सर्बदा तेरी स्तुति करूंगा क्योंकि तू ने यह किया है और तेरे संतों के

साम्हने तेरे नाम की बाट जोहूंगा क्योंकि वह भला
है ।

तिरपनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये रोग के बिषय दाऊद
का उपदेश देनेहारा गीत ।

१ मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर है ही नहीं
उन्हों ने बुराई किई और घिनित बुराई किई है कोई
२ भलाई करनेहारा नहीं । ईश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्य
के सन्तान पर झांका जिसतें देखे कि कोई बुद्धिमानी
३ करता अर्थात् ईश्वर को ढूंढ़ता है अथवा नहीं । वे
सब के सब फिर गये वे एक ही साथ बिगड़ गये कोई
सुकर्म्मी नहीं एक भी नहीं ।
४ क्या ये कुकर्म्मी नहीं जानते जो मेरे लोगों को
खाते जैसे रोटी खाते हैं और ईश्वर का नाम नहीं
५ लेते । वहां वे अत्यन्त डरे जहां डर न था क्योंकि
ईश्वर ने तेरे छावनी करनेहारों की हड्डियों को बिथराया
है तू ने उन्हें लज्जित किया क्योंकि ईश्वर ने उन्हें
६ त्यागा है । हाय कि ईश्वर के अपने बंधू लोगों के
पास फिर आने में सैहून से इसराएल का उद्धार हो तब
यअ़क़ूब आनन्दित और इसराएल मगन हो ।

चौवनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों पर दाऊद का
उपदेश देनेहारा गीत जब ज़िफ़ीम ने आके साऊल से
कहा कि क्या दाऊद आप को हमारे साथ नहीं
छिपाता है ।

हे ईश्वर अपने नाम से मुझे बचा और तू अपने बल से मेरा न्याय करेगा। हे ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन मेरे मुंह की बातें पर कान धर। क्योंकि परदेशी मेरे बिरोध में उठते हैं और सताऊ मेरे प्राण के गाहक हुए उन्हों ने ईश्वर को अपने साम्हने नहीं रक्खा। सिलाह।

देखो ईश्वर मेरा सहायक है प्रभु मेरे प्राण के संभारनेहारों में है। वह बुराई मेरे बैरियों पर लौट आयेगी अपनी सच्चाई से उन्हें नष्ट ओ ध्वस्त कर। मैं आप से आप तेरे लिये बलि चढ़ाऊंगा हे परमेश्वर मैं तेरे नाम की स्तुति करूंगा क्योंकि वह भला है। क्योंकि उस ने सारी बिपत्ति से मुझे छुड़ाया और मेरी आंख ने मेरे बैरियों पर दृष्टि किई है।

पचपनवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों के संग दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत।

हे ईश्वर मेरी प्रार्थना पर कान धर और मेरी बिनती से आप को मत छिपा। मेरा श्रोता हो और मेरी सुन मैं अपने सोच में अपने मन को भरमाऊंगा और चिल्लाऊंगा। बैरी के शब्द के कारण से और दुष्ट के अंधेर के कारण से क्योंकि वे मेरे ऊपर हानि पहुंचाते हैं और कोप में मेरा बिरोध करते हैं।

मेरा मन मेरे भीतर में मसोसता है और मृत्यु के भय मेरे ऊपर पड़े हैं। डर और थरथराहट मुझ में आया चाहती है और कंपकंपी मुझ पर प्रबल आई है। और मैं ने कहा हाय कि मेरे पंख कपोत के से

होते तो मैं उड़ जाता और चैन पाता । देख मैं दूर तक फिरा करता और जंगल में रहता । सिलाह । मैं प्रचण्ड आंधी से और झक्कड़ से अपने लिये बचाव बेग करूंगा ।

हे प्रभु उन्हें निगल जा उन की जीभ भाग भाग कर क्योंकि मैं ने नगर में अंधेर और झगड़ा देखा है । वे दिन और रात उसे उस की भीतों पर घेरते हैं और बुराई और घटी उस के मध्य में हैं । बुराइयां उस के मध्य में हैं और उस के चौक से अंधेर और कपट अलग नहीं होते ।

क्योंकि न मेरा बैरी मेरी निन्दा करेगा नहीं तो मैं सह लेता न मेरे डाही ने मेरे बिरुद्ध में अपनी बड़ाई किई है नहीं तो मैं आप को उस्से छिपाता । परन्तु तू मेरे बराबर का जन मेरा मित्र और मेरा चिन्हार । जिस्से हम आपुस में मीठा परामर्श करते हैं ईश्वर के घर में पर्ब्ब के धूमधाम से चलते हैं । उन पर बिनाश आ पड़े वे जीते जी समाधि में गिरेंगे क्योंकि उन के निवास में और उन के अन्तःकरण में बुराइयां हैं ।

मैं ईश्वर को पुकारूंगा और परमेश्वर मुझे बचा लेगा । सांझ और बिहान और मध्यान्ह को मैं सोचूंगा और चिल्लाऊंगा और उस ने मेरा शब्द सुना है । जो लड़ाई मुझ पर थी उस ने उस्से कुशल में मेरे प्राण को मोक्ष दिई क्योंकि मेरे बिरोधी बहुत थे ।

सर्ब्बशक्तिमान सुनेगा और उन्हें उत्तर देगा और जो सनातन से सिंहासन पर बैठा है । सिलाह । वह सुनके

उन्हें उत्तर देगा जिन के लिये बदले न होंगे और जो ईश्वर से नहीं डरते। उस ने अपने मित्रों के विरोध में अपने हाथ बढ़ाये हैं अपनी बाचा को तोड़ डाला है। उस के मुंह की लुपड़ी बातें चिकनी चुपड़ी हैं पर उस का मन लड़ाई है उस की बातें तेल से अधिक कोमल हैं पर वे खैंची हुई तलवारें हैं।

परमेश्वर पर अपना बोझ डाल दे और वह तेरी पालना करेगा वह धर्म्मी को सदा लों टलने न देगा। और तू हे ईश्वर उन्हें सड़न के कूप में गिरा देगा हत्यारा और छली मनुष्य अपनी आधी बय लों न पहुंचेंगे और मैं तुझ पर भरोसा रक्खूंगा।

छप्पनवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये परदेशियों के मध्य गूंगी पिण्डुकी के विषय दाऊद का भेद जब फिलिसतियों ने उसे जात में पकड़ा।

हे ईश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मरनहार मनुष्य ने मुझ पर मुंह फैलाया है निगलनेहारा सारे दिन मुझे दबाया करता है। मेरे बैरियों ने सारे दिन मुंह फैलाया है क्योंकि हे अति महान मेरे निगलनेहारे बहुत हैं।

जिस दिन मैं डरूंगा मैं तुझ पर भरोसा रक्खूंगा। मैं ईश्वर की स्तुति में उस के बचन की बड़ाई करूंगा मैं ने ईश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा मनुष्य मेरा क्या करेगा।

वे सारे दिन मेरी बातों को बिगाड़ते हैं मेरे

बिरुद्ध में उन की सारी चिन्ता बुराई के लिये हैं ।
६ वे एकट्ठे होंगे अपने तईं छिपावेंगे वेही मेरे गिराने-
वाले ढूके में बैठेंगे जिस रीति कि वे मेरे प्राण की
७ बाट जोह चुके हैं । अधर्म्म पर उन का बचना धरा
८ है हे ईश्वर क्रोध में जातिगणों को गिरा दे । तू ने
मेरे भ्रमण को गिना है मेरे आंसुओं को अपने पात्र
में रख क्या वे तेरी बही में नहीं हैं ।
९ जिस दिन मैं पुकारूंगा उसी समय मेरे बैरी पीछे
१० हटेंगे यह मैं जानता हूं कि ईश्वर मेरी ओर है । ईश्वर
की स्तुति में मैं इस बचन की बड़ाई करूंगा परमे-
११ श्वर की प्रशंसा में मैं इस बचन की स्तुति करूंगा । मैं
ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा आदमी
१२ मेरा क्या करेगा । हे ईश्वर तेरी मनौतियां मुझ पर
१३ हैं मैं तेरी स्तुति करूंगा । क्योंकि तू ने मेरे प्राण को
मृत्यु से बचाया है क्या तू मेरे पांव को ठोकर खाने
से छुटकारा न देगा जिसतें मैं जीवन के उंजियाले में
ईश्वर के साम्हने चला फिरा करूं ।

सत्तावनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद
जब वह साऊल के साम्हने से कंदला में भागा ।

१ मुझ पर दया कर हे ईश्वर मुझ पर दया कर
क्योंकि मेरे प्राण ने तुझ में शरण ढूंढ़ा है और मैं
तेरे डैनों की छाया के नीचे शरण लेऊंगा जब लों
२ ये सङ्कष्ट टल न जायें । मैं ईश्वर अति महान को
पुकारूंगा उस सर्बशक्तिमान को जो अपने बचनों को

मेरे विषय में पूरा करता है। वह स्वर्गों से भेजेगा ४
और मुझे बचावेगा जिस पर मेरे निगलनेवाले ने
निन्दा किई है। सिलाह। ईश्वर अपनी दया और ५
अपनी सच्चाई को भेजेगा।

मेरा प्राण सिंहों के मध्य में है मैं जलनेहारों अर्थात् ६
मनुष्य के पुत्रों के मध्य लेटूंगा उन के दांत भाले और
तीर हैं और उन की जीभ चोखी तलवार। ७

हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर महान हो सारी पृथिवी
के ऊपर तेरा बिभव हो। उन्हों ने मेरे डगों के लिये
जाल सिद्ध किया उस ने मेरे प्राण को दबा डाला
उन्हों ने मेरे साम्हने गड़हा खोदा वे उस के बीच में
गिर पड़े। सिलाह। हे ईश्वर मेरा मन स्थिर है मेरा
मन स्थिर है मैं गाऊंगा और बजाऊंगा। हे मेरे बिभव
जाग हे बीणा और सितार जाग मैं बिहान को जगाऊंगा।
हे प्रभु मैं लोगों में तेरा धन्य करूंगा जातिगणों के मध्य
तेरी स्तुति में बजाऊंगा। क्योंकि तेरी दया स्वर्गों लों १०
महान है और तेरी सच्चाई मेघों लों। हे ईश्वर स्वर्गों के ११
ऊपर महान हो सारी पृथिवी के ऊपर तेरी महिमा हो।

अट्ठावनवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद।

हे मनुष्य के पुत्रो क्या तुम सचमुच गूंगे रहते १
हो जब अवश्य है कि धर्म्म से बोलो और सचाई से
बिचार करो। हां तुम मन में दुष्टता करते हो अपने २
हाथों का अंधेर पृथिवी पर तौलते हो। दुष्ट कोख ३
ही से पराये हुए वे झूठ बोलते हुए पेट ही से भटक

४ गये । उन का बिष सर्प के बिष के समान है वह
अपने कान को उस बहिरे नाग की नाईं मूंद लेगा ।
५ जो मंत्र पढ़नेहारों के शब्द न सुनेगा कैसी ही बुद्धि-
मानी से मंत्र क्यों न फूंकता हो ।
६ हे ईश्वर उन के दांत उन के मुंह में तोड़ डाल
हे परमेश्वर युवा सिंहों की डाढ़ों को कुचल डाल ।
७ वे पानी की नाईं पिघल जायें अपने मार्ग चले जायें
८ वह अपने बाण लगाये मानो कि वे कट जायें । जिस
रीति कि घोंघा पिघल जाता है वह भी चला जाये
स्त्री के गर्भपात की नाईं उन्हों ने सूर्य्य को नहीं देखा ।
९ उस्से आगे कि तुम्हारी हांडियों में कांटे की आंच
लगे क्या कच्चा हो क्या पक्का वह उसे उड़ा ले
जावेगा ।
१० धर्म्मी आनन्दित होगा क्योंकि उस ने प्रतिफल को
देखा है वह अपने चरणों को दुष्ट के लोहू में डुबायेगा ।
११ और मनुष्य कहेगा कि हां धर्म्मी के लिये प्रतिफल
है हां पृथिवी पर न्याय करनेहारा ईश्वर है ।

उनसठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद जब साऊल ने भेजा और उन्हों ने घर की चौकसी किई जिसतें उसे घात करे ।

१ हे मेरे ईश्वर मुझे मेरे बैरियों से छुड़ा तू मुझे
२ मेरे बिरोधियों से ऊंचा करेगा । मुझे कुकर्म्मियों से
छुड़ा और हत्यारे मनुष्यों से मुझे बचा ।
३ क्योंकि देख वे मेरे प्राण के लिये घात में लगे हैं

बलवन्त मेरे बिरोध पर एकट्ठा होते हैं हे परमेश्वर न मेरा अपराध है और न मेरा पाप। मेरे दोष के बिना वे दौड़ते हैं और अपने तईं लैस करते हैं मुझ से मिलने के लिये जाग और देख। और तू हे परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के स्वामी इसराएल के ईश्वर सारे जातिगणों पर कृपा करने के लिये जाग किसी दुष्ट अपराधी पर दया मत कर। सिलाह। वे सांझ को फिरें कुत्ते की नाईं भूंकें और नगर में घूमते फिरें।

देख वे अपने मुंह से निकालते हैं तलवारें उन के होंठों पर हैं क्योंकि कौन सुनता है। और तू हे परमेश्वर उन पर हंसेगा तू सारे जातिगणों को ठट्ठे में उड़ावेगा। मैं तेरे लिये उस के बल की रक्षा करूंगा क्योंकि ईश्वर मेरा शरणस्थान है। मेरा ईश्वर अपनी दया से मेरे आगे आवेगा ईश्वर मेरे बैरियों पर मुझे जयवान कर दिखावेगा।

उन्हें प्राण से न मार ऐसा न हो कि मेरे लोग भूल जायें हे प्रभु हमारी ढाल अपने पराक्रम से उन्हें छिन्न भिन्न कर और उन्हें गिरा दे। उन के होंठों का बचन उन के मुंह का पाप है और वे अपने अहङ्कार में और अपनी क्रिया से और उस झूठ से जो वे बोलेंगे पकड़े जायेंगे। क्रोध से उन्हें नाश कर नाश कर और वे ध्वस्त हो जायें और लोग पृथिवी के अन्त लों जानें कि ईश्वर यअकूब में राज्य करता है। सिलाह। और वे सांझ को फिरें कुत्ते की नाईं

भूंकें और नगर में घूमते फिरें। वे खाने के लिये भ्रमते फिरेंगे और यदि तृप्त न हों तो रात भर दौड़ते रहेंगे।

और मैं तेरे पराक्रम का छन्द गाऊंगा और बिहान को तेरी दया का गान करूंगा क्योंकि तू मेरे लिये ऊंचा स्थान हुआ और मेरी बिपत्ति के दिन में मेरा शरणस्थान। हे मेरे बल मैं तेरे लिये गाऊंगा क्योंकि ईश्वर मेरा शरणस्थान और मेरा दयावान ईश्वर है।

साठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये साक्षी के सोसन के बिषय दाऊद का भेद सिखलाने के लिये जब उस ने अराम नहराइन पर और अराम जोबाह पर जय पाई और यूअब लौटा और लोन की तराई में बारह सहस्र आदमी मारे।

हे ईश्वर तू ने हमें त्यागा हम्में फूट डाली है तू क्रोधित हुआ तू हमें फिर यथावस्थित करेगा। तू ने पृथिवी को कंपाया उसे चीरा है उस की दरारों को सुधार क्योंकि वह हिल गई। तू ने अपने लोगों को कठोरता दिखलाई हमें लड़खड़ाने की मदिरा पिलाई है। तू ने अपने डरवैयों को एक ध्वजा दिया है जिसतें तेरी सच्चाई के कारण से खड़ा किया जाय। सिलाह। जिसतें तेरे प्रेमी छुड़ाये जायें तू अपने दहिने हाथ से बचा और हमारी सुन।

ईश्वर ने अपनी पवित्रता के संग बचन किया इस

कारण मैं फूलूंगा सिकम को बिभाग करूंगा और सुक्कात की तराई को नापूंगा। जिलिअद मेरा है मुनस्सी भी मेरा और इफ़रायम मेरे सिर का गढ़ यहूदाह मेरा व्यवस्थादायक। मोअब मेरे धोने धाने का पात्र है मैं अदूम पर अपनी जूती फेंकूंगा हे फिलिस्त मेरे लिये जयजयकार कर।

कौन मुझे दृढ़ नगर में लायेगा किस ने मुझे अदूम लों पहुंचाया है। क्या तू ही ने नहीं हे ईश्वर जिस ने हमें त्यागा और हे ईश्वर तू जो हमारी सेनाओं के संग न चलेगा। बिपत्ति में हमारी सहाय कर क्योंकि मनुष्य की ओर से बचाव बृथा है।

ईश्वर से हम बल पावेंगे और वही हमारे सतानेहारों को लताड़ेगा।

एकसठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजे पर दाऊद का गीत।

हे ईश्वर मेरा चिल्लाना सुन मेरी प्रार्थना पर सुरत लगा। मैं अपने मन के शोक में पृथिवी के खूंट से तेरी ओर पुकारूंगा उस चटान पर जो मुझ से ऊंची है तू मेरी अगुआई करेगा। क्योंकि तू मेरे लिये शरणस्थान हुआ है बैरी के सन्मुख दृढ़ गढ़। मैं तेरे तंबू में सदा लों रहा करूंगा तेरे पंखों के छाया के नीचे शरण लेऊंगा। सिलाह।

क्योंकि हे ईश्वर तू ही ने मेरी मनौतियों को ग्रहण किया अपने नाम से डरवैयों का अधिकार मुझे दिया है। तू राजा की बय पर बय बढ़ावेगा उस के बरस पीढ़ी

से पीढ़ी लों । वह सदा लों ईश्वर के साम्हने सिंहासन पर बैठा रहेगा तू दया और सत्यता भावमान रख वे उस की रक्षा करेंगी । सो मैं सदा लों तेरे नाम की स्तुति करूंगा जिसतें प्रतिदिन अपनी मनौतियां पूरी करूं ।

बासठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये यदूतून के ऊपर दाऊद का गीत ।

केवल ईश्वर की ओर फिरने से मेरा प्राण चैन में है उसी से मेरी मुक्ति है । केवल वही मेरी चटान और मेरी मुक्ति है मेरा शरणस्थान मुझे अत्यन्त हिलान न होगा । तुम कब लों एक मनुष्य पर चढ़ाई करोगे तुम सब के सब उस के मारने के निमित्त पीछा करोगे जो झुकी हुई भीत और ढाई हुई खाई के समान है । केवल उस के महत्व से वे उसे ढकेलने का परामर्श करते हैं वे झूठ से आनन्दित हैं वे अपने मुंह से आशीष देते हैं पर अपने अन्तःकरण में स्रापते हैं । सिलाह ।

हे मेरे प्राण केवल ईश्वर की ओर फिरके चुप रह क्योंकि उसी से मेरी आशा है । केवल वही मेरी चटान और मेरी मुक्ति है मेरा शरणस्थान मुझे हल चल न होगी । मेरी मुक्ति और मेरा बिभव ईश्वर में है मेरे बल की चटान और मेरा शरणस्थान ईश्वर में है । हे जातिगण सदा उस पर भरोसा रक्खो अपने अन्तःकरण उस के आगे उंडेल दो ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान है । सिलाह ।

नीच लोग केवल बृथा हैं ऊंचे पदवाले झूठ वे

तुला में उठ जायेंगे वे सब के सब बृथा से हलुके हैं। अन्धेर पर भरोसा न करो और अन्याय में निरर्थक न बनो धन यद्यपि बढ़े उस पर मन न लगाओ। ईश्वर ने एक बात कही ये दो बातें मैं ने सुनी कि पराक्रम ईश्वर का है। और हे प्रभु दया तेरी है क्योंकि तू हर एक मनुष्य को उस के कार्य्यों के समान पलटा देगा।

तिरसठवां गीत।

दाऊद का गीत जब वह यहूदाह के बन में था।

हे ईश्वर मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है मैं तड़के तुझे ढूंढूंगा मेरा प्राण तेरे लिये प्यासा है मेरा शरीर सूखी भूमि में और थका बिन पानी तेरा लालसित है। जिसतें तेरे पराक्रम और तेरे बिभव को देखूं जैसा कि मैं ने धर्म्मधाम में देखा है। क्योंकि तेरी कृपा जीवन से भली है मेरे होंठ तेरी स्तुति किया करेंगे। सो मैं जीवन भर तुझे धन्य कहा करूंगा तेरा नाम ले लेके अपने हाथ उठाऊंगा। मेरा प्राण मानो मज्जा और चिकनाई से तृप्त होगा और आनन्दित होंठों से मेरा मुंह स्तुति करेगा।

जब मैं अपने बिछौने पर तुझे स्मरण करता हूं तो रात के पहरों में तुझ पर ध्यान किया करता हूं। क्योंकि तू मेरे लिये सहाय हुआ है और मैं तेरे पंखों की छाया तले आनन्द करूंगा। मेरा प्राण तेरे पीछे लिपटा है तेरा दहिना हाथ मुझे संभालता है। और वे अपने बिनाश के लिये मेरे प्राण के गाहक होते हैं

वे पृथिवी के नीचे के स्थान को जायेंगे। वे तलवार से खेत आयेंगे गीदड़ों के ग्रास होंगे। और राजा ईश्वर से आनन्दित होगा हर एक मनुष्य जो उस की किरिया खाता है उस्से दर्प करेगा क्योंकि झूठ बोलनेहारों के मुंह बन्द किये जायेंगे।

चौंसठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत।

हे ईश्वर मेरी दोहाई में मेरा शब्द सुन तू मेरे प्राण को बैरी के डर से बचा रक्खेगा। तू मुझे दुष्टों की छिपी हुई सम्मति से और कुकर्म्मियों के हुल्लर से छिपावेगा।

जिन्हों ने तलवार की नाईं अपनी जीभ चोखी किई है और अपना तीर चिल्ले पर चढ़ाया है अर्थात् कड़वी बात। जिसतें गुप्त स्थानों में सिद्ध मनुष्य को मारें वे अचानक उसे मारेंगे और न डरेंगे। वे अपने लिये बुरी बात स्थिर करते हैं छिपके फंदे मारने की बात चीत करते हैं वे कहते हैं कि कौन हमें देखेगा। वे बुरे कर्म्मों की खोज करते हैं कहते हैं कि हम लैस हैं क्या ही अच्छी युक्ति और हर एक का अन्तर और मन गहिरा है।

परन्तु ईश्वर ने उन्हें अचानक बाण से मारा है घाव उन्हीं के हो गये। और वे गिराये गये उन की जीभ उन्हीं पर पड़ी सब कोई उन पर दृष्टि करते हुए भागेंगे। और सारे मनुष्य डरते हैं और कहते हैं कि यह ईश्वर का किया हुआ है और इसे उसी का

कार्य्य समझते हैं। धर्म्मी परमेश्वर से आनन्दित होगा और उस पर भरोसा रक्खेगा और सारे खरे मनवाले उस्से दर्प करेंगे।

पैंसठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत और गान।

हे ईश्वर सैहून में चुपके चुपके तेरी स्तुति किई जाती है और तेरे लिये मनौती पूरी किई जायगी। हे प्रार्थना के श्रोता सारे शरीर तेरे पास आवेंगे। अधर्म्म की बातें मुझ से अति प्रबल हैं हमारे अपराधों का बलिदान तू ही देगा। वह क्या ही धन्य है जिसे तू चुने और समीपी करेगा जिसतें तेरे आंगनों में रहे हम तेरे घर अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर की भलाई से तृप्त होंगे। हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर पृथिवी और समुद्र के सारे अति दूर सिवानों की आशा तू धर्म्म से हमें भयङ्कर उत्तर देगा।

जो सामर्थ्य से कटि बांधके अपने बल से पहाड़ों को दृढ़ करता है। जो समुद्रों के गर्गराहट उन की लहरों के गर्गराहट और लोगों की धूमधाम को स्थिर करता है। तब पृथिवी के अन्त के बसनेहारे तेरे चिन्हों से डरे तू सांझ और बिहान के निकास स्थानों से आनन्द करायेगा। तू ने पृथिवी पर दृष्टि किई और उसे सींचा है तू उसे अति फलदायक करेगा ईश्वर की नदी जल से परिपूर्ण है तू उन के अनाज को सिद्ध करेगा क्योंकि तू उसे इस रीति से सिद्ध करता है। उस की रेघारियों को सींच उस के ढेलों को समथर

कर तू उसे मेंहों से कोमल करेगा उस की कोंपलों पर आशीष देगा । तू ने अपनी भलाई से बरस पर मुकुट रक्खा है और तेरे पथों से चिकनाई टपकती है । बन की चराइयां टपकती हैं और टीले आनन्द से गुथे हैं । चराई ने झुण्डों का पहिरावा पहिना है और तराइयां अन्न से ढंप जायेंगी वह आनन्द से ललकारेंगी हां वे गाया करेंगी ।

छियासठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये गीत और गान ।

हे सारी पृथिवी ईश्वर की ओर ललकारो । उस के नाम के बिभव में गान करो उस की स्तुति में उसे पराक्रम देओ । ईश्वर से कहो कि तेरे कार्य्य क्या ही भयङ्कर हैं तेरे बल की बहुताई से तेरे बैरी तुझ से दब जायेंगे । सारी पृथिवी के रहनेहारे तुझे दण्डवत करेंगे और तेरी स्तुति में गान करेंगे वे तेरे नाम के लिये गान करेंगे । सिलाह ।

आओ और ईश्वर के कार्य्यों को देखो जो अपने कार्य्य में मनुष्य के पुत्रों पर भयङ्कर है । उस ने समुद्र को सूखी से पलट डाला वे नदी से पांव पांव चले जायेंगे वहां हम उस्से आनन्दित होंगे । जो अपने बल से सदा लों राज्य करता है उस की आंखें जातिगणों को देखती हैं दंगइत अपने को न उभारें । सिलाह ।

हे लोगो हमारे ईश्वर का धन्यबाद करो और उस की स्तुति का शब्द सुनाओ । जो हमारे प्राण

को जीता रखता है और जिस ने हमारे पांव के
टलने नहीं दिया है। क्योंकि हे ईश्वर तू ने हमें
परखा तू ने हमें ऐसा ताया है जैसा रूपा ताया जाये
तू ने हमें जाल में फंसाया हमारी कटि पर भार रक्खा
है। तू ने मरनहार मनुष्य को हमारे सिर पर चढ़ाया
है हम आग और पानी में आये और अब तू ने हमें
आनन्द की भरपूरी में पहुंचाया है।

मैं बलिदानों के साथ तेरे घर में आऊंगा अपनी
मनौतियां तुझे पूरी करूंगा। जिन्हें मेरे होंठों ने उच्चारा
और मेरी बिपत्ति में मेरा मुंह बोला। मैं पुष्ट मेमने
के बलिदानों मेंढ़ों की चिकनाई समेत तुझे चढ़ाऊंगा
बैल बकरों समेत बलि करूंगा। सिलाह।

हे सारे ईश्वर के डरनेहारो आओ सुनो और मैं
बर्णन करूंगा जो उस ने मेरे प्राण के लिये किया है।
मैं ने अपने मुंह से उस को पुकारा और बड़ी बड़ाई
मेरी जीभ के नीचे थी। यदि मैं अपने मन में अधर्म
की ओर ताकता तो प्रभु न सुनता। परन्तु ईश्वर
ने सुना है उस ने मेरी प्रार्थना के शब्द पर कान
धरा है। ईश्वर धन्य हो जिस ने न मेरी प्रार्थना फेरी
है और न मेरी ओर से अपनी दया।

सतसठवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये तार के बाजों पर गीत और गान।

ईश्वर हम पर दया करे और हमें आशीष दे और
अपना मुख हम पर चमकावे। सिलाह। जिसतें तेरा
मार्ग पृथिवी में जाना जाय सारे जातिगणों में तेरी

मुक्ति । हे ईश्वर जातिगण तेरी स्तुति करेंगे सारे जातिगण तेरी स्तुति करेंगे । जातिगण आनन्दित होंगे और जय जय करेंगे क्योंकि तू धर्म्म से लोगों का बिचार करेगा और पृथिवी पर जातिगणों की अगुआई करेगा । सिलाह । हे ईश्वर जातिगण तेरी स्तुति करेंगे जातिगण तेरी स्तुति करेंगे सब के सब । पृथिवी ने अपनी बढ़ती दिई है और ईश्वर हमारा ईश्वर हमें आशीष देगा । ईश्वर हमें आशीष देगा और पृथिवी के सारे सिवाने उस्से डरेंगे ।

अठसठवां गीत ।

प्रधान बजन्यि के लिये दाऊद का गीत और गान ।

ईश्वर उठेगा उस के बैरी छिन्न भिन्न होंगे और उस के बैर रखनेहारे उस के आगे से भागेंगे । जैसे धूआं मिट जाता है तैसा तू उन्हें मिटा देगा जैसे मोम आग के आगे पिघल जाता है तैसा दुष्ट ईश्वर के आगे नाश होंगे । और धर्म्मी आनन्दित होंगे ईश्वर के आगे आल्हादित होंगे और आनन्द के मारे हर्षित होंगे ।

ईश्वर का गान करो उस के नाम की स्तुति गाओ उस के लिये मार्ग सिद्ध करो जो अपने नाम याह से बनों से चढ़के आता है और उस के आगे आनन्द करो । ईश्वर अपने धर्म्मधाम में अनाथों का पिता और रांड़ों का बिचारी है । ईश्वर अकेलों को गृहस्थ बनाता है बंधुओं को बन्दीगृह से भाग्यमानी में निकाल लाता है केवल दंगइत भूर स्थान में रहते हैं ।

हे ईश्वर जब तू अपने लोगों के आगे चल निकला जब तू ने बन में पग धरा। सिलाह। तब पृथिवी थर्थराई हां स्वर्ग भी ईश्वर के आगे टपके यह सीना पर हुआ ईश्वर अर्थात् इसराएल के ईश्वर के साम्हने। हे ईश्वर तू सेंत के दान का मेंह बरसाता है तू ही अपने अधिकार हां अपने निर्बल अधिकार को स्थिर करता है।

तेरा झुण्ड उस में बसा है हे ईश्वर तू अपनी दया से कंगाल के लिये सिद्ध करेगा। प्रभु सन्देश देता है उस की प्रचारक बड़ी सेना हैं। सेनाओं के राजा भाग भाग जायेंगे और घर की रहनेहारी लूट बांटेगी। जब तुम पृथिवी के सिवानों के मध्य लेटोगे तब तुम चांदी से मढ़े हुये कपोत के डैनों और उस के पीले सुनहले पंखों के समान होओगे। जब सर्बसामर्थी उस भूमि में राजाओं को छिन्न भिन्न करता है तब ज़िल्मून में पाला गिरता है। बसनिया का पहाड़ ईश्वर का पहाड़ है बसनिया का पहाड़ चोटियों का पहाड़ है। हे पहाड़ो हे चोटियो उस पहाड़ के लिये जिसे ईश्वर ने अपने रहने के लिये चाहा है तुम क्यों घात में बैठते हो हां परमेश्वर उस में सर्बदा लों रहेगा।

ईश्वर के रथ बीस सहस्र सहस्रों पर सहस्र हैं प्रभु उन में है और सीना धर्म्मधाम में। तू ऊंचे पर चढ़ गया है तू ने बंधुओं को बंधुआ किया है हे परमेश्वर ईश्वर तू ने आदम के सन्तान में हां दुष्टों में भी भेंटें ले लिईं जिसतें यहां बसे।

प्रभु प्रतिदिन धन्य होवे जब मनुष्य हम पर

बोझ रक्खेगा तब सर्बशक्तिमान हमारी मुक्ति होगा। सिलाह । सर्बशक्तिमान हमारी मुक्ति के लिये सर्ब-सामर्थी है और मृत्यु से छुड़ाना परमेश्वर प्रभु ही का काम है । निश्चय ईश्वर अपने बैरियों का सिर कुचलेगा उस बालवाली खोपड़ी को जो अपने अप-राधों में चलती फिरती है । प्रभु ने कहा कि मैं उन्हें बसनिया से फेर लाऊंगा समुद्र के गहिराओं से फेर लाऊंगा । जिसतें तू उन्हें कुचले और तेरा पांव लोहूलुहान और तेरे कुत्तों की जीभ बैरियों के लोहू से हां उसी से लोहूलुहान हो ।

हे ईश्वर उन्हों ने तेरी धूमधामी चालों को मेरे सर्बसामर्थी और मेरे राजा की धूमधामी चालों को धर्म्मधाम में देखा है । मृदङ्ग बजाती हुई कुमारियों के मध्य गायक आगे आगे और बजनिये पीछे पीछे चले । अरे तुम कि इसराएल के सोते से हो मण्डलियों में ईश्वर प्रभु को धन्य कहो । वहां छोटा बिनयमीन उन पर दबानेहारा है यहूदाह के अध्यक्ष उन के पत्थरवाह करवैये हैं ज़बूलून के अध्यक्ष नफ़ताली के अध्यक्ष ।

तेरे ईश्वर ने तेरे बल को ठहराया है हे ईश्वर जिस ने हमारे लिये यह किया है दृढ़ हो । तेरे मन्दिर के कारण से जो यरूसलम के ऊपर है राजा तेरे पास भेंट लावेंगे । तू जंगल के बनपशु को और बलवन्त बैलों की मण्डली को जातिगणों के बछड़ों सहित जो चांदी के टुकड़े लिये हुए निहुर जाते हैं तिरस्कार कर

उस ने जातिगणों को जो सङ्ग्राम से मगन रहते हैं छिन्न भिन्न किया है। अध्यक्ष लोग मिस्र से आवेंगे कूश अपने हाथ ईश्वर की ओर बढ़ावेगा।

हे पृथिवी की राजधानियो ईश्वर का गान करो प्रभु की स्तुति में गाओ। सिलाह। उस के लिये गाओ जो सनातन के स्वर्गों के स्वर्ग पर असवार है देखो वह अपना शब्द महा शब्द उच्चारता है। ईश्वर को बल देओ उस का माहात्म्य इसराएल के ऊपर है और उस का बल मेघों पर। हे ईश्वर तू अपने धर्म्मधामों से भयङ्कर है इसराएल का सर्वशक्तिमान वही जातिगण को बल और सामर्थ्य देता है ईश्वर धन्य हो।

उनहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये सोसनों के विषय दाऊद का गीत।

हे ईश्वर मुझे बचा क्योंकि पानी मेरे प्राण लों पहुंच गया है। मैं गहिराव की कीच में धंस गया हूं और खड़े होने का स्थान नहीं है मैं पानी के गहिराओं में आया और बाढ़ ने मुझे दबा लिया है। मैं पुकारते पुकारते थक गया हूं मेरा गला सूख गया अपने ईश्वर की बाट जोहते जोहते मेरी आंखें धुंधला गईं। जो अकारण मुझ से बैर रखते हैं वह मेरे सिर के बालों से अधिक हैं मेरे नाशक मेरे धोखादेनेहारे बैरी बली हैं जो मैं ने नहीं लूटा मैं आगे को उन्हें भर दूंगा।

हे ईश्वर तू मेरी मूर्खता को जानता है और मेरे अपराध तुझ से छिपे नहीं हैं। हे प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर तेरी बाट जोहनेहारे मेरे कारण से लज्जित न हों हे इसराएल के ईश्वर तेरे खोजी मेरे कारण से अपमानित न हों। क्योंकि मैं ने तेरे लिये उलहना सहा लाज ने मेरे मुंह को ढांप लिया है। मैं अपने भाइयों के निकट परदेशी हो गया और अपनी माता के पुत्रों में ऊपरी। क्योंकि तेरे घर के ज्वलन ने मुझे खा लिया है और तेरे अपवाद करनेहारों के अपवाद मुझ पर आ पड़े। और मैं ने ब्रत में रो रो अपने प्राण को निकाला और वह भी मेरे लिये अपवादों का कारण हुआ। और मैं ने टाट का बस्त्र पहिना और उन के लिये कहावत बना। फाटक पर के बैठवैये मेरे बिरुद्ध सोचते हैं और मदिरा के पिअक्कड़ गान करते हैं।

और मैं हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना तुझ से है हे ईश्वर तेरी दया की बहुताई में ग्राह्य का समय हो अपनी मुक्ति की सत्यता में मेरी सुन ले। मुझे कीच से निकाल और मैं धंसने न पाऊं मैं अपने बैरियों से और पानी के गहिराव से बचाया जाऊं। पानी की बाढ़ मुझे दबाने न पावे और गहिराव मुझे निगलने न पावे और कूआ अपना मुंह मुझ पर बंद न करने पावे। हे परमेश्वर मेरी सुन क्योंकि तेरी दया भली है अपनी दया की बहुताई के समान मेरी ओर फिर। और अपने दास से अपना मुंह न छिपा क्योंकि मैं

बिपत्ति में हूं शीघ्र कर मेरी सुन। मेरे प्राण के निकट
आ उसे बचा मेरे बैरियों के कारण मुझे बचा।
तू ही ने मेरा उलहना और मेरी लज्जा और मेरे
अनादर को जाना है मेरे सारे सताऊ तेरे आगे हैं।
अपवाद ने मेरा मन तोड़ा है और मैं रोगी हूं और
मैं ने दया की बाट जोही और कुछ नहीं और शान्ति-
दायकों की पर नहीं पाया। और उन्हों ने मेरे भोजन
में पित्त दिया और मेरी प्यास बुझाने को मुझे सिरका
पिलाया। उन का मञ्च उन के लिये फंदा हो जाये
और उन के लिये जो कुशल में हैं जाल होवे। उन की
आंखें अंधी हो जायें जिसतें न देखें और उन की कटि
सदा झुकी रख। अपना क्रोध उन पर उंडेल और
तेरे कोप की जलजलाहट उन्हें पकड़ ले। उन का
घर उजाड़ हो जाये उन के तंबुओं में कोई बसवैया
न हो। क्योंकि उन्हों ने उन्हें सताया जिन्हें तू ने
मारा है और तेरे घायलों के शोक के विषय वे बातें
करते हैं। उन के अधर्म्म पर अधर्म्म का दण्ड दे और
वे तेरे धर्म्म में आने न पावें। वे जीवतों की बही
से मिटाये जावें और धर्म्मियों के संग न लिखे जावें।
और मैं बिपत्ति का मारा और दुखी हूं हे ईश्वर
तेरी मुक्ति मुझे ऊंचाई पर रक्खे। मैं गीत में ईश्वर
के नाम की स्तुति करूंगा और धन्यबाद से उस की
महिमा करूंगा। और यह परमेश्वर के लिये सींग-
दार और खुरीले बैल और बरध से अधिक भला
होगा। दीन लोगों ने देखा है और आनन्दित होंगे

अर्थात् तुम जो ईश्वर के खोजी हो और तुम्हारा मन जीता रहे । क्योंकि परमेश्वर कंगालों की सुनता है और उस ने अपने बन्धुओं को तुच्छ नहीं जाना । आकाश और पृथिवी उस की स्तुति करें समुद्र और उन में के सारे रेंगनेहारे । क्योंकि ईश्वर सैहून को बचावेगा और यहूदाह के नगरों को बनावेगा और वे उस में बसेंगे और उसे अधिकार में लेंगे । और उस के सेवकों के वंश उस के अधिकारी होंगे और उस के नाम के प्रेमी उस में रहा करेंगे ।

सत्तरवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये स्मरण के लिये दाऊद का गीत ।

हे ईश्वर मेरे बचाव के लिये हे परमेश्वर मेरी सहायता के लिये चटक कर । वे जो मेरे प्राण के गाहक हैं लज्जित और सङ्कोचित होंगे मेरी बिपत्ति के चाहनेहारे पीछे हटाये और अपमानित किये जायेंगे। जो अहा अहा कहते हैं वे अपने लाज के कारण उलटे फिरेंगे । तेरे सारे खोजी तुझ से आनन्दित और मगन होंगे और तेरी मुक्ति के प्रेमी सदा कहा करेंगे कि ईश्वर महान हो । और मैं दुखी और कंगाल हूं हे ईश्वर मेरे लिये शीघ्र कर मेरा सहायक और मेरा मुक्तिदाता तू ही है हे परमेश्वर बिलम्ब न कर ।

एकहत्तरवां गीत ।

हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मुझे कधी लज्जित होने न दे । तू अपने धर्म्म से मेरा छुटकारा करेगा और मुझे छुड़ावेगा अपना कान मेरी

ओर झुका ओर मुझे बचा । तू मेरे निवास की चटा
हो कि मैं नित्य आया करूं तू ने मुझे बचाने की आज्ञ
किई है क्योंकि तू ही मेरी चटान ओर मेरा गढ़ है
हे मेरे ईश्वर दुष्ट के हाथ से ओर अधर्म्मी ओर क्रू
मनुष्य के पंजे से मुझे छुड़ा । क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर
मेरी आशा तू ही है मेरी युवा अवस्था से मेरा शरण
स्थान । मैं कोख से तुझ से थामा गया तू ही ने मुझे
मेरी माता के पेट से निकाला मेरी स्तुति नित्य तेरे
बिषय में है ।

मैं बहुतों के लिये अचंभा हुआ पर तू ही मेरा दृढ़ शरणस्थान है । मेरा मुंह तेरी स्तुति से ओर सारे दिन तेरे बिभव से भरा रहेगा । बुढ़ापे में मुझे फेंक न दे जब मेरा बल घटे तब मुझे दूर न कर । क्योंकि मेरे बैरियों ने मुझ से यों कहा है ओर जो मेरे प्राण के घात में हैं उन्हों ने आपुस में युक्ति बांधी हैं । ओर कहते हैं कि ईश्वर ने उसे त्यागा है उस का पीछा करो ओर उसे पकड़ लो क्योंकि कोई छुड़वैया नहीं है । हे ईश्वर मुझ से दूर मत हो हे मेरे ईश्वर मेरी सहाय के लिये चटक कर । मेरे प्राण के बैरी लज्जित ओर नष्ट हो जायेंगे मेरी बुराई के चाहक निन्दा ओर अनादर से ढंप जायेंगे ।

ओर मैं नित्य आशा रक्खूंगा ओर तेरी सारी स्तुति पर बढ़ाता जाऊंगा । मेरा मुंह तेरे धर्म्म का ओर सारे दिन तेरी मुक्ति का वर्णन किया करेगा क्योंकि मैं उन की गिनती नहीं जानता । मैं प्रभु

परमेश्वर के पराक्रम कर्म्मों के साथ आऊंगा मैं तेरी
केवल तेरे ही धर्म्म की चर्चा करूंगा। हे ईश्वर तू
ने मेरी युवा अवस्था से मुझे सिखाया और अब लों
मैं तेरी आश्चर्य्य क्रिया बर्णन किया करता हूं। और
बुढ़ापे और बाल पकने लों भी हे ईश्वर मुझे मत
त्याग जब लों कि मैं आनेहारी पीढ़ी से तेरे हाथ
का और हर एक अवैया से तेरे पराक्रम का बखान
न करूं। और हे ईश्वर तेरा धर्म्म अति ऊंचा है हे
ईश्वर तू जिस ने बड़े बड़े कार्य्य किये हैं तेरे तुल्य
कौन है।

तू जिस ने हमें बहुत कठिनताएं और बिपत्ति दिख-
लाई हैं फिर आके हमें जिलावेगा और पृथिवी के गहि-
राओं से फिर आके हमें उठा लेगा। तू मेरी महिमा को
बढ़ावेगा और फिरके मुझे शान्ति देगा। हे मेरे ईश्वर
मैं भी तेरी सत्यता के लिये बीणा बजाके तेरी स्तुति
करूंगा हे इसराएल के धर्म्ममय मैं सितार के संग
तेरी स्तुति में गान करूंगा। जब मैं तेरी स्तुति में
गाऊंगा तब मेरे होंठ और मेरा प्राण जिसे तू ने
छुड़ाया है गायेंगे। मेरी जीभ भी सारे दिन तेरे धर्म्म को
रटा करेगी क्योंकि मेरी बुराई के चाहक निन्दित
और लज्जित हो गये हैं।

बहत्तरवां गीत।

सुलेमान का गीत।

हे ईश्वर राजा को अपने बिचार और राजा के
पुत्र को अपना धर्म्म दे।

वह धर्म्म के साथ तेरे लोगों का और बिचार के
साथ तेरे दुखियों का न्याय करेगा। तब धर्म्म से पहा
और पहाड़ियां लोगों के लिये कुशल उपजावेंगी।
वह लोगों के दुखियों का न्याय करेगा कंगाल
संतानों को बचावेगा और अन्धेरी को कुचलेगा।
जब लों कि सूर्य्य और चन्द्रमा ठहरेंगे पीढ़ी से पीढ़
लों वे तुझ से डरा करेंगे। वह मेंह की नाईं जो कट
हुई घास पर हो और झड़ी की नाईं जो पृथिवी को
सींचती है उतरेगा। उस के दिनों में जब लों चां
रहेगा धर्म्मी उगेगा और कुशल की अधिकाई होगी।
और वह समुद्र से समुद्र लों और नदी से पृथिवी के
अन्त लों प्रभुता करेगा। बनबासी लोग उस के आगे
झुकेंगे और उस के बैरी माटी चाटेंगे। तरसीस और
टापुओं के राजा भेंट भेजेंगे सबा और सिबा के राजा
भेंट बलिदान में लायेंगे। और सारे राजा उस
को दण्डवत करेंगे सारे जातिगण उस की सेवा करेंगे।
क्योंकि वह दोहाई देनेहारे कंगाल को और दुखी
और जिन का कोई सहायक नहीं बचावेगा। वह
दरिद्र और कंगाल पर दया करेगा और कंगालों का
प्राण बचावेगा। वह उन के प्राण को अन्धेर और
उपद्रव से छुड़ावेगा और उन का लोहू उस की दृष्टि
में बहुमूल्य होगा। और वह जीता रहेगा और सबा
के सोने में से उसे दिया करेगा और वह उस के लिये
सदा प्रार्थना किया करेगा वह सारे दिन उस का
धन्यबाद करेगा। पृथिवी में पहाड़ों की चोटी पर

केवल मुट्ठी भर अनाज हो उस का फल लुबनान की नाईं हड़हड़ायेगा और नगर में से वे पृथिवी की घास की नाईं लहलहावेंगे। उस का नाम सदा लों रहेगा जब लों कि सूर्य्य रहेगा तब लों उस का नाम फैलता जायेगा और लोग उस्से आशीष पायेंगे सारे जातिगण उसे धन्य कहेंगे।

परमेश्वर ईश्वर इसराएल का प्रभु जो अकेला आश्चर्य्य कार्य्य करता है धन्य हो। और उस का बिभवमय नाम सदा लों धन्य हो और सारी पृथिवी उस के बिभव से परिपूर्ण होवे आमीन और आमीन।

यस्सी के बेटे दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त हुईं।

तिहत्तरवां गीत।

आसफ़ का गीत।

ईश्वर इसराएल के लिये खरे अन्तःकरणियों के लिये केवल भला है। और मैं निकट था कि मेरे पांव टल जायें निकट था कि मेरे पग फिसल जायें। क्योंकि मैं अहङ्कारियों से डाह करता था और कहता था कि दुष्टों का कुशल देखा करूंगा।

क्योंकि उन के लिये मृत्यु के समय किसी प्रकार के बन्धन नहीं हैं और उन का बल पुष्ट है। वे मनुष्य की नाईं दुख में नहीं हैं और मनुष्य के पुत्र के संग मार नहीं खाते। इस लिये घमंड उन के गले की हंसुली हुआ अन्धेर के वस्त्र ने उन्हें ढांप लिया है। उन की आंखें चिकनाई से उभरी हुई हैं उन के मन की चिन्तायें निकलती हैं। वे चिढ़ाते और दुष्टता के संग बातें करते

हैं घमंड से अन्धेर की बातें करते हैं। उन्हों ने अपन
मुंह स्वर्ग पर रक्खा है और उन की जीभ पृथिवी प
घूमती है। इस लिये वह अपने लोगों को यहां फे
लाता है और मूहामुंह पानी उन पर निचोड़ा जात
है। और वे कहते हैं कि सर्वशक्तिमान क्योंकर जा
और क्योंकर अति महान को इस का ज्ञान हो। देखे
ये अधर्म्मी हैं और सदा के भाग्यवान उन्हों ने अपन
सम्पत्ति बढ़ाई है।

केवल बृथा मैं ने अपने मन को शुद्ध किया है औ
निर्मलता में अपने हाथ धोये हैं। और मैं सारे दिन
मार खाता रहा और हर बिहान को मेरी ताड़ना हुई
यदि मैं ने कहा हो कि यों बर्णन करूंगा तो देख मै
ने तेरे बालकों की मण्डली से छल किया है। और मै
इसे जान्ने के लिये सोचा करता था वह मेरी आंखें
में दुख था। और मैं ने कहा कि जब लों सर्वशक्तिमान
के धर्म्मधाम में न आऊं तब लों उन के अन्त का सोच
किया करूंगा।

तू उन्हें केवल फिसलने स्थानें में रक्खेगा और
अब तू ने उन्हें नाश में डाला है। वे मानो एक पलमात्र
में क्या ही उजाड़ में पड़ गये भय से सर्वथा मिट गये।
जागनेहारे के स्वप्न की नाईं हे प्रभु जब तू जागेगा तब
उन के स्वरूप को तुच्छ जानेगा।

क्योंकि मेरा मन आप को खट्टा कर देता है और
मैं अपनी कटि में अपने तईं छेदता हूं। और मैं मूर्ख
हूं और नहीं जानता मैं तेरे आगे पशु हुआ। और मैं

सर्बदा तेरे संग हूं तू ने मेरा दहिना हाथ धरा। तू अपने मंत्र से मेरी अगुआई करेगा और उस के पीछे मुझे बिभव में ले लेगा। स्वर्ग पर मेरा कौन है और पृथिवी पर तेरे संग मैं ने किसी को नहीं चाहा। मेरा शरीर और मेरा मन घट गया पर ईश्वर सदा मेरे मन की चटान और मेरा भाग है।

क्योंकि देख जो तुझ से दूर हैं वे नष्ट होंगे तू ने हर एक को जो तुझ से ब्यभिचारी हुआ काट डाला है। और मैं—ईश्वर की सङ्गति मेरे लिये भली है मैं ने प्रभु परमेश्वर पर अपना भरोसा रक्खा है जिसतें तेरे सारे कार्य्यों का बर्णन करूं।

चौहत्तरवां गीत।

आसफ़ का उपदेशदायक गीत।

हे ईश्वर तू ने क्यों हमें सर्बदा के लिये त्यागा है और क्यों तेरे रिस का धुआं तेरी चराई की भेड़ों पर उठता है। अपनी मण्डली को जिसे तू ने सदा से मोल लिया और अपने अधिकार के उस दण्ड को छुड़ाया इस सैहून पहाड़ को जिस में तू रहा है स्मरण कर। सदा के उजाड़ों की ओर उन सभों की ओर जिन्हें बैरी ने धर्म्मधाम में बिगाड़ा है अपने डग बढ़ा।

तेरे बैरी तेरी मण्डली के मध्य गर्जते हैं उन्हों ने अपने चिन्ह प्रभुता के चिन्ह ठहराये हैं। वह जान पड़ता है कि मानो घने पेड़ों पर कुल्हाड़ियां बहुत ऊंची उठाता है। और अब उस के खोदे हुए कार्य्य

को वे हथौड़े और हथौड़ियों से तोड़के एक ही सा
गिरा देते हैं। उन्हों ने तेरे धर्म्मधाम में आग लगा
है भूमि लों तेरे नाम के निवासस्थान को अशुद्ध किय
है। उन्हों ने अपने मन में कहा है कि हम उन्हें एक
ही साथ नाश करें उन्हों ने भूमि पर सर्बशक्तिमान के
सारे सभास्थानों को जला दिया है। हम अपने चिन्हों
को नहीं देखते अब कोई भविष्यद्वक्ता नहीं है औ
हमारे मध्य कोई नहीं जानता कि यह कब लों होगा।

हे ईश्वर बैरी कब लों निन्दा करेगा क्या बैरी
सदा तेरे नाम की अपनिन्दा करेगा। तू क्यों अपना
हाथ और अपना दहिना हाथ खींचे रहता है उसे
अपनी गोद में से निकालके उन्हें नाश कर। औ
ईश्वर प्राचीन से मेरा राजा है जो पृथिवी के मध्य
छुटकारे दिया करता है। तू ही ने अपने पराक्रम से
समुद्र को फाड़ा अजगरों के सिरों को पानी पर कुचल
डाला। तू ही ने लिबयातान के सिरों को कुचल डाला
तू उसे बनबासी लोगों के भोजन के लिये देगा। तू
ही ने सोता और धारा को चीरा तू ही ने नित्य बहती
नदियों को सुखा दिया। दिन तेरा है रात भी तेरी
है तू ही ने उंजियाले और सूर्य्य को सिद्ध कर रक्खा।
तू ही ने पृथिवी के सारे सिवानों को ठहराया गरमी
और जाड़ा तू ही ने उन्हें बनाया।

इसे स्मरण कर कि बैरी ने परमेश्वर की निन्दा
किई और मूढ़ जातिगण ने तेरे नाम की अपनिन्दा
किई है। पेटू जया को अपनी पंडुकी मत दे अपने

दुखियों की मण्डली को सदा लों न भूल। बाचा को चेत कर क्योंकि पृथिवी के अंधियारे स्थान क्रूरता के निवासों से पूर्ण हैं। सताया हुआ लज्जित होके पलट न जाये दुखी और कंगाल तेरे नाम की स्तुति करें। हे ईश्वर उठ अपना ही बिवाद कर अपनी उस निन्दा को जो सारे दिन मूर्ख को ओर से होती है स्मरण कर। अपने बैरियों का शब्द अपने शत्रुओं के कोलाहल को जो नित्य उठता है भूल न जा।

पचहत्तरवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर आसफ़ का गीत और गान।

हे ईश्वर हम तेरी स्तुति करते हैं हम स्तुति करते हैं क्योंकि तेरे नाम का प्रगट होना निकट है उन्हों ने तेरे आश्चर्य्य का बर्णन किया है। क्योंकि मैं ठहराया हुआ समय चुन लूंगा मैं ही सच्चाई से बिचार करूंगा। पृथिवी और उस के सारे निवासी पिघल गये मैं ही ने उस के खंभों को संभाला है। सिलाह।

मैं ने घमण्डियों से कहा कि घमण्ड न करो और दुष्टों से कि सींग न उठाओ। अपना सींग ऊंचाई पर न उठाओ और मगराई से ढीठाई की बातें न करो। क्योंकि न पूरब से न पच्छिम से और न पहाड़ों के बन से न्याय आवेगा। क्योंकि ईश्वर न्यायी है वह एक को नीचा करेगा और दूसरे को ऊंचा करेगा। क्योंकि परमेश्वर के हाथ में कटोरा है और उस में मदिरा फेनाती है मिलावट से भरी हुई है और वह

इस कटोरे से उंडेला करता है केवल उस की तरछ
पृथिवी के सारे दुष्ट निचोड़ेंगे और पीयेंगे।

और मैं सदा लों बर्णन करूंगा यअ़कूब के ईश्व
की स्तुति में गान करूंगा। और मैं दुष्टों के सारे सींग
को काट डालूंगा धर्म्मी के सींग ऊंचे किये जायेंगे।

छिहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों पर
आसफ़ का गीत और गान।

ईश्वर यहूदाह में प्रसिद्ध है इसराएल में उस क
नाम महान है। और सालिम में उस का तम्बू थ
और सैहून में उस का निवास। उधर उस ने धनु
के जलते हुए बाणों ढाल और तलवार और लड़ा
को तोड़ डाला। सिलाह।

तू लुटेरे पर्बतों से अधिक ज्योतिमान और बिभव
मय है। हियाई मन मनुष्य लुट गये वे अपनी नीं
में सो गये हैं और सारे बलवान मनुष्यों में से किसी
ने अपना हाथ नहीं पाया। हे यअ़कूब के ईश्वर
तेरी दपट से रथ और घोड़े नींद में पड़ गये। तुझ
से हां तुझी से डरा चाहिये और जब तू क्रोध करे
तब कौन तेरे आगे खड़ा रहेगा। तू ने स्वर्ग पर से
बिचार सुनाया पृथिवी डर गई और थम गई। जब
ईश्वर न्याय के लिये उठा जिसतें पृथिवी के सारे
कोमलों को बचावे। सिलाह।

क्योंकि मनुष्य का क्रोध तेरी स्तुति करेगा और
कोपों का शेष तू कटि पर बांधेगा। हे तुम सब कि

उस के आस पास हो परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मनौतियां मानो और पूरी करो उस भयङ्कर ईश्वर के आगे लोग भेंट लावें। वह अध्यक्षों के प्राण को काट डालेगा वह पृथिवी के राजाओं के लिये भयङ्कर है।

सतहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये यदूतून के ऊपर आसफ़ का गीत।

मैं अपना शब्द ईश्वर की ओर उठाऊंगा और पुकारूंगा अपना शब्द ईश्वर की ओर उठाऊंगा और वह मेरी ओर कान धरेगा। मैं ने अपनी बिपत्ति के दिन प्रभु को ढूंढ़ा मेरा हाथ रात को फैला रहा और निर्बल न हो गया मेरे प्राण ने शान्ति पाने से नाह किया। मैं ईश्वर को स्मरण करता और हाहाकार करता हूं चिन्ता करता हूं और मेरा प्राण मूर्छा में पड़ा है। सिलाह। तू ने मेरी आंखें खुली रक्खी हैं मैं मारा गया और बोल नहीं सक्ता।

मैं ने अगिले दिनों पर और प्राचीन बरसों पर सोच किया। मैं अपने रात के गान को स्मरण करूंगा अपने मन में सोच करूंगा और मेरा आत्मा खोज करता है। कि क्या प्रभु सदा के लिये त्यागेगा और फिर कभी प्रसन्न न होगा। क्या उस की दया सदा के लिये जाती रही उस की बाचा पीढ़ी से पीढ़ी लों कट गई। क्या सर्बशक्तिमान अनुग्रह करना भूल गया क्या उस ने क्रोध में अपनी दया को बन्द कर रक्खा है। सिलाह।

और मैं ने कहा कि यह मेरी निर्बलता है अति

महान के दहिने हाथ के बर्ष। मैं परमेश्वर के कार्य्यों का बर्णन करूंगा क्योंकि मैं तेरे प्राचीन आश्चर्य्यों को स्मरण करूंगा। और मैं तेरे सारे कार्य्यों को ध्यान करूंगा और तेरी कीर्त्ति पर सोच करूंगा।

हे ईश्वर तेरा मार्ग पवित्रता में है ईश्वर के समान कौन बड़ा महेश्वर है। तू ही वह सर्बशक्तिमान है जो आश्चर्य्य कर्म्म किया करता है तू ने लोगों में अपना बल प्रगट किया है। तू ने अपनी भुजा से अपने लोग यअकूब और यूसुफ़ के संतानों को छुड़ाया। सिलाह। हे ईश्वर पानियों ने तुझे देखा पानियों ने तुझे देखा वे थर्थराते हैं हां गहिराव कांप उठते हैं। मेघों ने जल उंडेल दिया बादलों ने शब्द दिया हां तेरे बाण चारों ओर उड़ते हैं। तेरे गर्ज्जन का शब्द बवण्डर में हुआ बिजलियों ने भूमण्डल को उंजियाला कर दिया तब पृथिवी थर्थराई और कांप गई। तेरा मार्ग समुद्र में था और तेरे पथ बड़े पानियों में और तेरे पांव के चिन्ह नहीं जाने गये। तू ने मूसा और हारून के हाथ से झुण्ड की नाईं अपने लोगों की अगुआई किई।

अठहत्तरवां गीत।

आसफ़ का उपदेशदायक गीत।

हे मेरे लोगो मेरी ब्यवस्था पर कान धरो मेरे मुंह की बातों पर अपने कान लगाओ। मैं अपना मुंह दृष्टान्त में खोलूंगा प्राचीन भेदों को प्रगट करूंगा। जिन्हें हम ने सुना और उन्हें जाना और हमारे पितरों

ने हम से बर्णन किया। हम उन्हें उन के बालकों से न छिपावेंगे परन्तु अवैया पीढ़ी से परमेश्वर की स्तुतों का और उस के बल का और उस के आश्चर्य्यों का जो उस ने किये बर्णन करते रहेंगे।

और उस ने यअकूब में साक्षी ठहराई और इसराएल में व्यवस्था स्थिर किई जिन के बिषय उस ने हमारे पितरों को आज्ञा किई कि उन्हें अपने बालकों को सिखावें। जिसतें अवैया पीढ़ी जानें बालक उत्पन्न होवें और उठकर अपने बालकों से बर्णन करें। और ईश्वर पर अपना आसा रक्खें और सर्बशक्तिमान के कार्य्यों को न भूलें और उस की आज्ञाओं को पालन करें। और अपने पितरों की नाईं झगरे और दङ्गइत पीढ़ी न होवें ऐसी पीढ़ी कि जिस ने अपने मन को सिद्ध न रक्खा और जिस का आत्मा सर्बशक्तिमान पर पूरा भरोसा न रखता था।

इफ़रायम के सन्तान हथियार बांधे हुए धनुष चढ़ाये हुए लड़ाई के दिन में लौट आये। उन्हों ने ईश्वर की बाचा को स्मरण न किया और उस की
१ व्यवस्था पर चलने से नाह किया। और उस के कार्य्यों को और उस के आश्चर्य्यों को जो उस ने उन्हें दिखाये भूल गये।
२ उन के पितरों के आगे मिस्र देश में जुअन के
३ चौगान में उस ने आश्चर्य्य कर्म्म किये। उस ने समुद्र को दो भाग कर दिया और उन्हें पार पहुंचाया और
४ पानी को ढेर की नाईं खड़ा कर दिया। और दिन को

मेघ से और रात भर आग की ज्योति से उन की अगुआई किई। वह बन में चटानों को चीरता है और उन्हें पीने को मानो बड़े गहिराव देता है और चटान से धारें निकालता है और नदी की नाईं पानी बहा देता है।

पर उन्हों ने उस की बिरुद्धता में और अधिक पाप किया और बन में अति महान के आगे बहुत दङ्गा किया। और अपने मन में सर्बशक्तिमान को यों परखा कि अपनी इच्छा के अनुसार भोजन मांगें। और ईश्वर के बिरुद्ध बोले और कहा कि क्या सर्ब-शक्तिमान बन में मञ्च सिद्ध कर सकेगा। देखो उस ने चटान को मारा और पानी बहता है और धारें फूट निकलती हैं पर क्या वह रोटी भी दे सक्ता है अथवा अपने लोगों के लिये मांस सिद्ध कर सक्ता है। इस लिये परमेश्वर ने सुना और अति क्रोधित हुआ और यअकूब में आग भड़की और इसराएल पर भी क्रोध उभरा। क्योंकि वे ईश्वर पर बिश्वास न लाये और उन्हों ने उस की मुक्ति पर भरोसा न रक्खा। यद्यपि उस ने ऊपर से मेघों को आज्ञा किई और स्वर्ग के द्वार खोले। और उन पर खाने के लिये मन्न बरसाया और उन्हें स्वर्गीय अन्न दिया। हर एक ने दूतों की रोटी खाई उस ने उन्हें बहुताई से मार्ग के लिये भोजन भेजा। वह स्वर्ग में पूरबी पवन चलाता है और अपने बल से दक्षिणी पवन बहाता है। और उस ने उन पर धूल की नाईं मांस और समुद्र के बालू की

नाईं पक्षी बरसाये । और उन की छावनी के बीच में उन के घरों के आस पास गिराये । और उन्हों ने खाया और अति तृप्त हुए और वह उन्हें उन्हीं की इच्छा देता है । वे अपनी लालसा से अलग न हुए अब लों उन का भोजन उन के मुंही में था । कि ईश्वर का कोप उन पर भड़का और उन के पुष्टों में से मारा और इसराएल के तरुणों को गिरा दिया ।

तिस पर भी उन्हों ने फिर पाप किया और उस के आश्चर्य्य कार्य्यों का बिश्वास न किया । इस लिये उस ने उन के दिनों को अनर्थ में और उन के बरसों को भय में बिताया ।

जब उस ने उन्हें मारा तब उन्हों ने उसे ढूंढ़ा और पश्चात्ताप किया और शीघ्र सर्बशक्तिमान के खोजी हुए । और चेत किया कि ईश्वर उन की चटान और सर्ब-शक्तिमान महेश्वर उन का मुक्तिदाता था । पर उन्हों ने अपने मुंह से उस्से लल्लो पत्तो किई और अपनी जीभ से उस्से झूठ बोले । और उन का मन उस के साथ स्थिर न रहा और वे उस की बाचा पर बिश्वास न लाये । और वह दयालु अधर्म्म को क्षमा करता है और सर्बथा नाश नहीं करता है और उस ने अपने क्रोध को बारम्बार रोका और अपने सारे क्रोध को न भड़काया । और उस ने स्मरण किया कि वे मांस हैं और चलनेहारी पवन जो फेर न आवेगी ।

वे बन में उस्से क्याही बेर बेर दङ्गा करते हैं और अरण्य में उसे उदास करते हैं । और उन्हों ने फिर

सर्वशक्तिमान को परखा और इसराएल के पवित्रम
पर अनादर का चिन्ह लगाया । उन्हों ने उस के हाथ
को स्मरण न किया उस दिन को जब उस ने उन्हें
सतानेहारे से छुड़ाया । जिस ने मिस्र में अपने चिन्ह
और जुअन के चैागान में अपने आश्चर्य्य प्रगट किये
और उन की नदियों को लोहू कर डाला और वे अपनी
धाराओं से पी नहीं सके । वह उन में मक्खियां भेजता
है और वे उन्हें खा लेती हैं और मेंडुक और वे उन्हें नष्ट
करते हैं । और उस ने उन के फल कीड़े को और उन
का परिश्रम टिड्डी को दिया । वह उन के दाख को
ओलों से और उन के गूलरों को पाले से मारता है ।
और उस ने उन के ढोर ओलों को और उन के झुण्ड
बिजुलियों को सौंपे । वह उन पर अपने कोप की
ज्वलन क्रोध और जलजलाहट और व्याकुलता अर्थात्
आपत्ति के दूतों की जथा भेजता है । वह अपने क्रोध
के लिये मार्ग सिद्ध करता है उस ने उन के प्राण को
मृत्यु से नहीं बचाया और उन के प्राण मरी को सौंपे ।
और मिस्र में हर एक पहिलौठे को हाम के तंबुओं
में उन के बलों के पहिले फल को मारा । और अपने
लोगों को भेड़ों की नाईं चलाया और झुण्ड की नाईं
बन में उन की अगुआई किई । और कुशल के संग
उन की अगुआई किई ऐसा कि वे न डरे और समुद्र
ने उन के बैरियों को ढांप लिया । और उन्हें अपने
पवित्र सिवाने लों इस पहाड़ पर जिसे उस के दहिने
हाथ ने मोल लिया पहुंचाया । और उन के आगे से

जातिगणों को दूर किया और रस्सी के साथ उन जातिगणों को अधिकार ठहराया और इसराएल की गोष्ठियों को उन के तंबुओं में बसाया ।

तिस पर भी उन्हों ने ईश्वर अति महान को परखा और उस्से फिर गये और उस की साक्षियों को पालन न किया । और फिर गये और अपने पितरों की नाईं छल किया वे बररे हुए धनुष की नाईं फिर गये । और अपने ऊंचे स्थानों के कारण से उस को खिजाया और अपनी खोदी हुई मूर्त्तों के कारण से उसे ज्वलित किया ।

ईश्वर ने सुना और कोपित हुआ और इसराएल से अति घिन किया । और सैला के निवास को उस तंबू को जिसे उस ने मनुष्यों के मध्य में खड़ा किया था त्यागा । और अपने बल को बंधुआई में दिया और अपने बिभव को बैरी के हाथ में । और अपने लोगों को तलवार को सौंपा और अपने अधिकार पर क्रुद्ध हुआ । आग ने उस के तरुणों को भस्म किया और उस की कुंआरियों के बिवाह के गीत गाये न गये । उस के याजक तलवार से मारे गये और उन की राड़ें बिलाप नहीं करतीं ।

तब प्रभु उस की नाईं जो नींद से चौंके जागा उस महाबीर के समान जो मदिरा के अमल से ललकारता है । और उस ने अपने बैरियों को मारके पीछे हटा दिया सदा की लज्जा उन्हें दिई ।

और यूसुफ़ के तंबू से घिन किई और इफ़रायम की गोष्ठी को न चुना । और यहूदाह की गोष्ठी को

सैहून के पहाड़ को जिसे उस ने प्यार किया चुन लिया। और ऊंचे पहाड़ों के समान पृथिवी की नाईं जिस की नेव उस ने सदा के लिये डाली अपने धर्म्मधाम को बनाया। और दाऊद को अपना सेवक होने के लिये चुन लिया और उसे झुण्डों के भेड़शालों में से निकाल लाया। उस ने बच्चेवाली भेड़ियों के पीछे से उसे ले लिया जिसतें उस के लोग यअ़क़ूब को और उस के अधिकार इसराएल को चरावे। सो उस ने अपने मन की खराई के समान उन्हें चराया है और अपने हाथों की गुणता से उन की अगुआई किया करेगा।

उनासीवां गीत।

आसफ़ का गीत।

हे ईश्वर अन्यदेशी तेरे अधिकार में आये हैं उन्हों ने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया यरूसलम को ढेर ढेर कर दिया है। उन्हों ने तेरे सेवकों की लोथों को आकाश के पक्षियों का और तेरे साधुन का मांस पृथिवी के बनपशुन का आहार ठहराया है। उन्हों ने उन का लोहू यरूसलम की चारों ओर पानी की नाईं बहाया है और कोई गाड़नेहारा नहीं है। हम अपने परोसियों के लिये निन्दा अपने आस पासियों के लिये ठट्ठा और उपहास हो गये हैं।

हे परमेश्वर तू कब लों सदा रिसियाता रहेगा और तेरा ज्वलन आग की नाईं बरा करेगा। अपना क्रोप उन जातिगणों पर उंडेल जिन्हों ने तुझे नहीं

जाना और उन राज्यों पर जिन्हों ने तेरा नाम लेके नहीं पुकारा है। क्योंकि उन्हों ने यअक़ूब को निगल लिया और उस के निवास को उजाड़ कर दिया है।

अगिली पीढ़ियों के पापों का स्मरण हमारे बिषय न कर शीघ्र कर तेरी दया हमारे आगे आयें क्योंकि हम बहुत क्षीण हो गये। हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर अपने नाम की महिमा के लिये हमारी सहाय कर और अपने नाम के लिये हमें छुड़ा और हमारे पापों को क्षमा कर। अन्यदेशी किस लिये कहें कि उन का ईश्वर कहां है अन्यदेशियों के मध्य हमारी दृष्टि के आगे तेरे दासों के उस लोहू का पलटा जो बहाया गया है प्रगट हो।

बंधुए का कराहना तेरे आगे पहुंचे अपनी भुजा की महिमा के समान मृत्यु के बालकों को जीता रहने दे। और जिस रीति कि उन्हों ने हे प्रभु तेरी निन्दा किई तू उन की इस निन्दा का पलटा शतगुण हमारे परोसियों की गोद में रख दे। और हम तेरे लोग और तेरी चराई की भेड़ें सदा तेरा धन्य मानेंगे पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरी स्तुति बर्णन करेंगे।

अस्सीवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये सोसनों के बिषय।

साक्षी। आसफ़ का गीत।

हे इसराएल के चरवाहे जो झुण्ड की नाईं यूसुफ़ की अगुआई करता है कान धर हे करोबीम पर के बैठवैये बिभूषित हो। इफ़रायम और बिनयमीन और

मुनस्सी के आगे अपने बल को जगा और हमारे बचाव के लिये आ। हे ईश्वर हमें फिर स्थिर कर और अपने मुख को हम पर चमका और हम बच जायेंगे।

हे परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के ईश्वर तू ने कब से अपने लोगों की प्रार्थना पर धूआं उठाया है। तू ने उन्हें आंसुओं की रोटी खिलाई और उन्हें मटके भर भर आंसू पिलाये हैं। तू हमें हमारे परोसियों के लिये झगड़े का कारण ठहराता है और हमारे बैरी अपने को मुदित करते हैं। हे ईश्वर सेनाओं के ईश्वर हमें फिर स्थिर कर और अपना मुख चमका और हम बच जायेंगे।

तू एक लता मिस्र से निकालता अन्यदेशियों को दूर करता और उसे लगाता है। तू ने उस के आगे ठिकाना सिद्ध किया और उस ने जड़ पकड़ लिई और पृथिवी को भर दिया। पहाड़ उस की छाया से ढंप गये और उस की डालियों से सर्बशक्तिमान के देवदारु। वह अपनी डालियां समुद्र लों पहुंचाता है और अपनी टहनियां नदी लों। तू ने उस के बाड़ों को किस कारण तोड़ डाला कि सारे पथिक उसे खसोटते हैं। बनैला सूअर उसे उजाड़ता है और बनपशु उसे चर जाता है।

हे ईश्वर सेनाओं के ईश्वर दया करके फिर आ स्वर्ग से दृष्टि कर और देख और इस लता पर दृष्टि कर। और जो तेरे दहिने हाथ ने लगाया है उसे स्थिर कर और उस बेटे पर जिसे तू ने अपने लिये पोसा है रक्षा कर। वह आग से जलाया गया

काटा गया वे तेरे मुख की दपट से नाश होते हैं। तेरा हाथ अपने दहिने हाथ के मनुष्य पर हो उस मनुष्य के पुत्र पर जिसे तू ने अपने लिये पोसा है।
तो हम तुझ से न फिरेंगे तू हमें जिलावेगा और हम तेरा ही नाम पुकारेंगे। हे परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के ईश्वर हमें फिर स्थिर कर अपना मुख चमका और हम बच जायेंगे।

एकासीवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये। गित्तीत पर।

आसफ़ का गीत।

ईश्वर के लिये जो हमारा बल है पुकारके गाओ यअ़क़ूब के ईश्वर की ओर आनन्द से ललकारो। गीत उठाओ और तबला बजाओ मनोहर बीणा सितार समेत। पर्बमास में पूर्णमासी में और हमारे पर्ब के दिन में तुरही फूंको।
क्योंकि यह इसराएल के लिये आज्ञा और यअ़क़ूब के ईश्वर का अधिकार है। उस ने उसे यूसुफ़ में साक्षी के लिये ठहराया जब वह मिस्र की भूमि पर से होके निकला जहां मैं ने एक ऐसी भाषा सुनी जो नहीं जानता था।
मैं ने उस के कांधे पर से बोझ उतारा उस के हाथ टोकरी से निर्बन्ध होते हैं। तू ने बिपत्ति में पुकारा और मैं ने तुझे छुड़ाया है मैं गर्ज्जन के ओट में होके तुझे उत्तर दूंगा मरीबः के पानी पर तुझे परखूंगा। सिलाह। हे मेरे लोग सुन और मैं तेरे

बिरुद्ध साक्षी दूंगा हे इसराएल मैं बोलूंगा यदि तू मेरी सुनेगा। तेरे मध्य और कोई सर्बशक्तिमान न हो और तू अन्य सर्बशक्तिमान की पूजा न कर। मैं हीं परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं जो तुझे मिस्र देश से बाहर लाया अपना मुंह फैला और मैं उसे भर दूंगा। पर मेरे लोग मेरे शब्द के सुन्नेहारे न हुए और इसराएल ने मुझे न माना। और मैं ने उन्हें उन के मन की कठोरता पर छोड़ दिया वे अपने ही मतों पर चलते हैं।

हाय कि मेरे लोग मेरी सुनें और इसराएल मेरे मार्गों पर चलें। तो मैं शीघ्र उन के बैरियों को झुकाऊंगा और उन के सतानेहारों पर अपना हाथ फेरूंगा। परमेश्वर के बैर रखनेहारे उस्से दब जायेंगे और उन का समय सदा लों रहेगा। और वह उसे अच्छे से अच्छा गेहूं खिलायेगा और पत्थर के मधु से मैं तुझे तृप्त करूंगा।

बयासीवां गीत।

आसफ़ का गीत।

ईश्वर सर्बशक्तिमान की मण्डली में खड़ा होता है वह देवों के मध्य में बिचार करेगा। तुम कब लों अधर्म्म से बिचार करोगे और दुष्टों की पक्ष करोगे। सिलाह। दुर्बल और अनाथ का बिचार करो दुखी और कंगाल का न्याय करो। दुर्बल और कंगाल को छुड़ाओ दुष्टों के हाथ से उसे बचाओ।

वे नहीं जानते और न समझेंगे वे अंधियारे में चला करेंगे पृथिवी की सारी नेवें हिल जायेंगी।

में ने तो कहा कि तुम देव हो और तुम सब कोई अति महान के पुत्र हो । पर निश्चय तुम मनुष्य के समान मरोगे और राजपुत्रों में से एक की नाईं गिरोगे। हे ईश्वर उठ पृथिवी का बिचार कर क्योंकि तू ही सारे जातिगणों को अधिकार में लेगा ।

तिरासीवां गीत ।

आसफ़ का गान और गीत ।

हे ईश्वर चुप मत हो चुपका मत रह और चैन न ले हे सर्वशक्तिमान ।

क्योंकि देख तेरे बैरी हुल्लर करते हैं और तुझ से डाह रखनेहारे सिर उठाते हैं । वे तेरे लोगों पर छल का परामर्श करते हैं और तेरे छिपे हुओं के बिरुद्ध चिन्ता करते हैं । उन्हों ने कहा है कि आओ और हम उन्हें काट डालें जिसतें वे एक जाति न रहें और इसराएल का नाम फिर स्मरण न हो । क्योंकि उन्हों ने आपुस में मन से परामर्श किया है वे तेरे बिरुद्ध नियम बांधते हैं । अर्थात् अदूम के तम्बू और इसमअएली मोअब और हाजरी । जिबाल और अमून और अमालीक़ फ़िलिस्त सूर के बासी समेत । असूर भी उन के संग मिल गया वे लूत के सन्तान की बांह हो गये । सिलाह ।

तू उन से ऐसा कर जैसा मिदियान से जैसा सीसरा से जैसा याबीन से कैसून की तराई में तू ने किया । वे ऐनदोर में नाश हुए पृथिवी के लिये खाद हो गये । उन्हें हां उन के कुलीनों को गुराब की नाईं और

जिश्रब की नाईं कर और जिबह की नाईं और जिल
मनअ की नाईं उन के समस्त अध्यक्षों को। जिन्हों
ने कहा है कि हम अपने लिये ईश्वर के भवनों को
अधिकार में लें। हे मेरे ईश्वर उन्हें बवंडर की नाईं
कर भूसे की नाईं पवन के सन्मुख। जैसे आग बन
को भस्म करती है और जैसे लवर पहाड़ों को दहन
करता है। वैसा ही तू अपनी आंधी से उन का पीछा
करेगा और अपनी झंकोर से उन्हें डरावेगा। उन
का मुंह लाज से भर दे तब हे परमेश्वर लोग तेरे
नाम का पीछा करेंगे। वे सदा लों लज्जित और
भयवान रहेंगे और लज्जित और नाश होंगे। और
लोग जानेंगे कि तू ही जिस का नाम परमेश्वर है
अकेला सारी पृथिवी पर महान है।

चौरासीवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये। गित्तीत पर। कोरह के
पुत्रों के लिये गीत।

हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर तेरे तम्बू कैसे
मनभावने हैं। मेरा प्राण परमेश्वर के आंगनों के
लिये अभिलाषी और मूर्च्छित भी है मेरा मन और
मेरा तन जीवते सर्वशक्तिमान के लिये आनन्द का
शब्द करता है। हां गौरैये ने घर पाया और सुपा-
बिना ने अपने लिये खोंथा जहां वह अपने गदे
रखती है अर्थात् तेरी बेदियों को हे परमेश्वर सेनाओं
के ईश्वर मेरे राजा और मेरे ईश्वर।

तेरे घर के निवासी क्या ही धन्य हैं वे सदा तेरी

स्तुति किया करेंगे । सिलाह । क्या ही धन्य वह मनुष्य जिस का बल तुझ से है जिस के मन में मार्ग हैं । वे रोने की तराई में चलते चलते उसे कुण्ड ठहराते हैं हां मार्गदर्शक आशीषों से ढंप जाता है । वे बल पर बल बढ़ाते हुए चला करेंगे ईश्वर के आगे सैहून में प्रगट होंगे ।

हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन हे यअ़कूब के ईश्वर कान धर । सिलाह । हे हमारी ढाल देख हे ईश्वर और अपने अभिषिक्त के मुंह पर दृष्टि कर । क्योंकि एक दिन तेरे आंगनों में सहस्र से भला है मैं ने अपने ईश्वर के घर की डेवढ़ी पर खड़ा रहना चुन लिया है उस्से अधिक कि दुष्टता के तम्बुओं में रहूं । क्योंकि परमेश्वर ईश्वर सूर्य्य और ढाल है परमेश्वर अनुग्रह और बिभव देगा जो खराई से चलते हैं वह उन से भलाई न रख छोड़ेगा । हे परमेश्वर सेनाओं के प्रभु क्या ही धन्य वह मनुष्य जो तुझ पर भरोसा रखता है ।

पचासीवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये । कोरह के पुत्रों का गीत ।

हे परमेश्वर तू ने अपनी भूमि पर प्रसन्नता प्रगट किई तू यअ़कूब की बंधुआई की दशा में फिर आया । तू ने अपने लोगों के अधर्म्म को क्षमा किया उन के सारे पाप को ढांप लिया । सिलाह । तू ने अपने सारे कोप को उठा लिया अपने क्रोध की ज्वलन से फिर गया ।

हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर हमारे पास फिर आ और अपनी रिस को हम पर से रोक। क्या तू सदा लों हम से रिसियावेगा पीढ़ी से पीढ़ी लों अपने क्रोध को बढ़ाता रहेगा। क्या तू न फिरेगा और हमें जिलावेगा और क्या तेरे लोग तुझ से आनन्द न होंगे। हे परमेश्वर अपनी दया हमें दिखला और निश्चय तू अपनी मुक्ति हमें देगा।

मैं सुनूंगा कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर क्या कहेगा क्योंकि वह अपने लोगों के लिये और अपने साधुन के लिये कुशल का बचन कहेगा पर वे मूर्खता की ओर न फिरें। केवल उस के डरवैयों के पास उस की मुक्ति है जिसतें बिभव हमारी भूमि में बास करे। दया और सच्चाई मिल गई हैं धर्म्म और कुशल चूमा ले चुके हैं। सच्चाई पृथिवी से उगती है और धर्म्म स्वर्ग से झांकता है। परमेश्वर भलाई भी देगा और हमारी भूमि अपना फल देगी। धर्म्म उस के आगे आगे चला करेगा और हमें उस के डगों के मार्ग पर रक्खेगा।

छियासीवां गीत।

दाऊद की प्रार्थना।

हे परमेश्वर अपना कान धर और मेरी सुन क्योंकि मैं दुखी और कंगाल हूं। मेरे प्राण की रक्षा कर क्योंकि मैं तेरा अनुगृहीत हूं हे तू मेरे ईश्वर अपने दास को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है। हे प्रभु मुझ पर दया कर क्योंकि मैं प्रतिदिन तुझ को पुकारता

ही रहूंगा। अपने दास के प्राण को आनन्दित कर क्योंकि हे प्रभु मैं अपने प्राण को तेरी ओर उठाता हूं। क्योंकि तू ही हे प्रभु भला और क्षमावान है और अपने सारे पुकारवैयों पर दया में बहुत। हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना पर कान धर और मेरी बिनतियों के शब्द पर ध्यान रख। मैं अपनी बिपत्ति के दिन तुझे पुकारूंगा क्योंकि तू मेरी सुनेगा।

हे प्रभु देवों में तेरे तुल्य कोई नहीं और तेरे से कार्य्य कहीं नहीं। सारे जातिगणें जिन्हें तू ने सिरजा है आवेंगे और तेरे आगे दण्डवत करेंगे हे प्रभु और तेरे नाम की बड़ाई करेंगे। क्योंकि तू ही महान और आश्चर्य्यकर्त्ता है तू ही अकेला ईश्वर है। हे परमेश्वर अपना मार्ग मुझे दिखला मैं तेरी सच्चाई में चलूंगा मेरे मन को एकाग्र कर जिसतें तेरे नाम से डरूं। हे प्रभु मेरे ईश्वर मैं अपने सारे मन से तेरी स्तुति करूंगा और सदा लों तेरे नाम की बड़ाई किया करूंगा। क्योंकि तेरी दया मुझ पर बड़ी थी और तू ने मेरे प्राण को अति नीचे पाताल से छुड़ाया है।

हे ईश्वर अहङ्कारी मेरे बिरुद्ध उठे हैं और अंधेरियों की मण्डली मेरे प्राण की गाहक हुई और उन्हों ने तुझे अपने आगे नहीं रक्खा। और तू ही हे प्रभु सर्वशक्तिमान दयालु और कृपालु धैर्य्यवान और दया और सच्चाई में परिपूर्ण है। मेरी ओर फिर और मुझ पर दया कर अपने दास को अपनी सामर्थ्य दे और अपनी दासी के पुत्र को छुटकारा दे। मेरे

संग भलाई के लिये चिन्ह कर तो मेरे बैरी देखेंगे और लज्जित होंगे क्योंकि हे परमेश्वर तू ही ने मेरी सहाय किई और मुझे शान्ति दिई है।

सतासीवां गीत।

कोरह के पुत्रों का गीत और गान।

उस की नेव पवित्र पर्वतों पर है। परमेश्वर सैहून के फाटकों को यअ़कूब के सारे निवासों से अधिक प्यार करता है। हे ईश्वर के नगर तुझ में बिभवमय बातें कही गईं। सिलाह।

मैं अपने जान्नेहारों के साथ रहब और बाबुल का चर्चा करूंगा देखो फिलिस्त और सूर कूश समेत इन में से हर एक के बिषय कहा जायेगा कि यह जातिगण वहां उत्पन्न हुआ। और सैहून के बिषय कहा जायेगा कि यह जन और वह जन उस में उत्पन्न हुआ और अत्यन्त महान आप उसे स्थिर करेगा। जब जातिगण लिखे जायेंगे तब परमेश्वर गिनेगा कि यह वहां उत्पन्न हुआ। सिलाह। और जैसे गवैये वैसे बजवैये कहते होंगे कि मेरे सारे सोते तुझ में हैं।

अठासीवां गीत।

कोरह के पुत्रों का गीत और गान। प्रधान बजनिये के लिये। पीड़ादायक रोग के बिषय। हैमान इज़राही का उपदेश देनेहारा गीत।

हे परमेश्वर मेरी मुक्ति के ईश्वर मैं ने दिन रात तेरे आगे दोहाई दिई है। मेरी प्रार्थना तेरे आगे पहुंचे अपना कान मेरे रोने पर रख।

क्योंकि मेरा प्राण बिपत्तों से भरा है और मेरा जीवन पाताल के लग आ रहा है। मैं गड़हे में गिरनेहारों के संग गिना गया निर्बल मनुष्य की नाईं हो गया। मृतकों में निर्बन्ध घायलों के नाईं जो समाधि में लेटते हैं जिन्हें तू फिर स्मरण नहीं करता और वे ही तेरे हाथ से कट गये हैं। तू ने मुझे नीचे स्थानों के गड़हे में अंधियारे स्थानों में गहिराओं में रक्खा है। तेरे कोप ने मुझ पर दबाव डाला और तू ने अपनी सारी लहरों से मुझे दुख दिया है। सिलाह। तू ने मेरे जान पहिचानों को मुझ से दूर रक्खा है तू ने मुझे उन के लिये घिनित किया मैं बन्दीगृह में हूं और न निकलूंगा। मेरी आंख दुख के मारे धुंधला गई हे परमेश्वर मैं ने प्रतिदिन तुझे पुकारा है अपने हाथ तेरी ओर फैलाये हैं।

क्या तू मृतकों के लिये आश्चर्य्यकर्म्म करेगा क्या मृतक उठेंगे और तेरी स्तुति करेंगे। सिलाह। क्या तेरी दया समाधि में और तेरी सच्चाई बिनाश में बर्णन किई जायेगी। क्या तेरे आश्चर्य्यकर्म्म अंधियारे में जाने जायेंगे और तेरा धर्म्म भुलावा के देश में। और हे परमेश्वर मैं ने तेरी दोहाई दिई है और बिहान को मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने पहुंचेगी।

हे परमेश्वर तू किस कारण मेरे प्राण को त्यागेगा अपना मुंह मुझ से छिपावेगा। मैं लड़काई से दुखी और मरने पर हूं मैं ने तेरे भयों को सहा है मैं

घबरा गया। तेरे कोपानल मुझ पर बीत गये तेरे भयों ने मुझे काट डाला है। उन्हों ने पानी की नाईं मुझे दिन भर घेरे में रक्खा अकस्मात मुझे चारों ओर से घेर लिया है। तू ने प्रिय और मित्र को मुझ से दूर कर दिया है मेरे चीन्ह पहिचान अंधियारे स्थान हैं।

नवासीवां गीत।

ऐतान इज़राही का उपदेश देनेहारा गीत।

मैं सदा लों परमेश्वर की दया को गाया करूंगा पीढ़ी से पीढ़ी लों अपने मुंह से तेरी सच्चाई का सन्देश देता रहूंगा। क्योंकि मैं ने कहा है कि दया का घर सदा लों बनाया जायेगा तू अपनी सच्चाई स्वर्गों ही पर स्थिर रक्खेगा। मैं ने अपने चुने हुए से बाचा बांधी अपने दास दाऊद से किरिया खाई है। कि सदा लों तेरे बंश को स्थिर रक्खूंगा और पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरा सिंहासन बनाये रक्खूंगा। सिलाह।

और स्वर्ग हे परमेश्वर तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों का स्वीकार करेंगे हां तेरी सच्चाई सिद्धों की मण्डली में स्वीकार किई जायेगी। क्योंकि स्वर्ग में कौन परमेश्वर के तुल्य हो सक्ता और सर्बशक्तिमान के पुत्रों में कौन परमेश्वर के समान होगा। उस सर्बशक्तिमान के समान जो अपने सिद्धों की सभा में अत्यन्त भयङ्कर है और उन सब से जो उस की चारों ओर हैं अति प्रतिष्ठा के योग्य है। हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर

हे परमेश्वर कौन तेरे तुल्य बलवान है और तेरी
सच्चाई तेरे आस पास है। तू ही समुद्र की प्रचण्डता
पर प्रभुता करता है उस की लहरें जब उठती हैं तब
तू ही उन्हें स्थिर कर देता है। तू ही ने रहब को
घायल के समान कुचल डाला अपनी बलवन्त भुजा
से अपने बैरियों को छिन्न भिन्न किया। स्वर्ग तेरा है
पृथिवी भी तेरी भूमण्डल और उस की भरपूरी की तू
ही ने नेव डाली। उत्तर और दक्षिण को तू ही ने
सिरजा तबूर और हरमून तेरे नाम से आनन्द करते
हैं। तेरी बाहु बल सहित है तेरा हाथ शक्तिमान है
तेरा दहिना हाथ ऊंचा। धर्म्म और बिचार तेरे सिंहा-
सन का स्थान है दया और सत्य तेरे मुंह के आगे
चला करेंगे।

वह जातिगण क्या ही धन्य है जो मङ्गल के शब्द
को जानता है हे परमेश्वर वह तेरे मुंह की ज्योति
में चला करेगा। वह तेरे नाम से सारे दिन आनन्द
रहेगा और तेरे धर्म्म से ऊंचा होगा। क्योंकि उन के
बल का बिभव तू ही है और तू अपनी कृपा से हमारे
सींग को ऊंचा करेगा। क्योंकि हमारी ढाल परमेश्वर
की और हमारा राजा इसराएल के धर्म्ममय का है।

तब तू ने दर्शन में अपने साधुन से वार्त्ता किई
और बोला कि मैं ने एक सामर्थी पर सहायता रक्खी
है जातिगण में से एक चुने हुए को बढ़ाया है।
मैं ने दाऊद अपने दास को पाया अपने पवित्र तेल
से उसे अभिषिक्त किया है। जिस के साथ मेरा हाथ

उपस्थित रहेगा मेरी भुजा भी उसे बल देगी। बैरी उसे दुख न पहुंचायेगा और दुष्टता का सन्तान उसे क्लेश न देगा। और मैं उस के सन्मुख उस के दुखदायकों को कुचल डालूंगा और उस के बैरियों को मारूंगा। और मेरी सच्चाई और मेरी दया उस के संग रहेगी और मेरे नाम से उस का सींग ऊंचा होगा। और मैं उस का हाथ समुद्र पर रक्खूंगा और उस का दहिना हाथ नदियों पर। वह मुझे पुकारेगा कि मेरा पिता तू ही है मेरा सर्वशक्तिमान और मेरी मुक्ति की चटान। मैं भी उसे अपना पहिलौठा ठहराऊंगा पृथिवी के राजाओं से महान। मैं सदा अपनी दया उस के लिये रक्खूंगा और मेरी बाचा उस के साथ दृढ़ है। और मैं उस के बंश को सदा लों और उस के सिंहासन को स्वर्ग के दिनों के समान स्थिर करूंगा।

यदि उस के बालक मेरी ब्यवस्था को त्याग देंगे और मेरे न्यायों पर न चलेंगे। यदि वे मेरी बिधि को अपवित्र करेंगे और मेरी आज्ञाओं को पालन न करेंगे। तो मैं छड़ी के साथ उन के पापों का और कोड़ों से उन के अधर्म्म का दण्ड देऊंगा। तथापि अपनी दया उस्से दूर न करूंगा और अपनी सच्चाई में झूठा न होऊंगा। मैं अपनी बाचा को भङ्ग न करूंगा और जो मेरे मुंह से निकला उसे न पलटूंगा। मैं ने अपनी पवित्रता के साथ एक बात की किरिया खाई है मैं दाऊद से झूठ न बोलूंगा। उस का बंश

तदा लों और उस का सिंहासन मेरे आगे सूर्य्य की नाईं बना रहेगा । जिस रीति कि चन्द्रमा सदा लों स्थिर रहेगा और स्वर्ग पर वह साक्षी सच्चा है। सिलाह।

पर तू ने तो दूर और घिन किया है तू तो अपने अभिषिक्त पर क्रुद्ध हुआ । तू ने अपने दास से नियम को तोड़ा भूमि पर उस का मुकुट अपवित्र कर दिया है । तू ने उस की सारी बाड़ों को तोड़के गिरा दिया उस के गढ़ों को बिनाश कर दिया है । सारे पथिक उसे लूटते हैं वह अपने परोसियों के निकट निन्दा हुआ । तू ने उस के शत्रुन का दहिना हाथ ऊंचा किया उस के सारे बैरियों को मगन किया है। तू उस की तलवार की धार को भी मोड़ देता है और उसे युद्ध में ठहरने नहीं देता । तू ने उसे उस के बिभव से दूर कर दिया और उस के सिंहासन को भूमि पर गिरा दिया है । तू ने उस की तरुणाई के दिनों को अल्प किया तू ने उसे लाज से ढांपा है । सिलाह ।

हे परमेश्वर तू कब लों सदा के लिये आप को छिपायेगा कब लों तेरा क्रोध आग की नाईं धधकता रहेगा । चेत कर कि मैं कितना जीवन रखता हूं तू ने किस लिये सारे मनुष्य के सन्तानों को व्यर्थ उत्पन्न किया । कौन मनुष्य जीता रहेगा और मृत्यु को न देखेगा और अपने प्राण को समाधि के हाथ से बचावेगा । सिलाह । हे प्रभु तेरी अगिली दया जिन की तू ने दाऊद से अपनी सच्चाई में किरिया खाई कहां हैं । हे प्रभु अपने दासों की निन्दा को स्मरण

कर और यह कि मैं अपनी गोद में बहुत जातिगणों
को लिये हूं। मैं जिसे हे परमेश्वर तेरे उन बैरियो
ने तुच्छ समझा है जिन्हों ने तेरे अभिषिक्त के पां
के चिन्ह की निन्दा किई है। परमेश्वर सदा लों धन्य
हो। आमीन और आमीन।

नब्बेवां गीत।

ईश्वर के जन मूसा की प्रार्थना।

हे प्रभु पीढ़ी से पीढ़ी लों हमारा शरणस्थान तू
ही रहा है। उस्से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए और
तू ने पृथिवी और जगत को सिरजा और सनातन से
सनातन लों तू ही सर्वशक्तिमान है। तू मनुष्य को
धूर लों फिर पहुंचाता है और कहता है कि हे मनुष्य
के सन्तानो फिरो। क्योंकि तेरी दृष्टि में सहस्र बरस
कल की नाईं हैं जो बीत गया और रात का एक पहर।
तू उन्हें बहा ले जाता है वे मानो नींद हैं बिहान को
वे घास की नाईं जाते रहते हैं। बिहान को वह
फूलता तब जाता रहता है क्योंकि सन्ध्या को वह काटा
जाता और सूख जाता है। क्योंकि हम तेरे क्रोध से
नाश हो गये और तेरे कोप से व्याकुल हो गये। तू
ने हमारे अधर्म्मों को अपने आगे रक्खा है हमारे गुप्त
पाप को अपने रूप के प्रकाश में। क्योंकि हमारे सारे
दिन तेरे क्रोध में बीत गये हम अपने बरसों को ध्यान
की नाईं बिताते हैं। हमारे जीवन के दिन उन में
सत्तर बरस हैं और यदि बल से अस्सी बरस हों तथापि
उन का अहङ्कार क्लेश और दुख है क्योंकि हम शीघ्र

हंकाये जाते और उड़ जाते हैं । तेरे क्रोध के पराक्रम का और तेरे डर के समान तेरे कोप का कौन जानकार है । हमें ऐसा ज्ञान दे जिसतें अपने दिनों को गिनें और हम बुद्धिमान मन भेंट के लिये लायेंगे ।

हे परमेश्वर हमारी ओर फिर कब लों हमें छोड़े रहेगा और अपने सेवकों के बिषय पछता । बिहान को हमें अपनी दया से तृप्त कर तो हम अपने जीवन भर आनन्द करेंगे और मगन रहेंगे । उन दिनों के समान जिन में तू ने हमें दुख में रक्खा और उन बरसों के समान जिन में हम ने बुराई देखी है हमें आनन्दित कर । तेरा कार्य्य तेरे दासों को प्रगट हो और तेरा बिभव उन के बेटों पर । और प्रभु हमारे ईश्वर की सुन्दरता हम पर हो और हमारे हाथों के कार्य्य हम पर दृढ़ कर हां हमारे हाथों का कार्य्य दृढ़ कर ।

एकानबेवां गीत ।

१ अति महान के ओझल में बैठनेहारा सर्बशक्तिमान
२ की छाया के नीचे रहा करेगा । मैं परमेश्वर से कहूंगा
कि मेरा शरणस्थान और मेरा गढ़ मेरा ईश्वर तू ही
३ है जिस पर मैं भरोसा रक्खूंगा । क्योंकि वह तुझे
ब्याधा के जाल से और नाशक मरी से मुक्ति देगा ।
४ वह अपने पर से तुझे ढांप लेगा और उस के पंखों
के नीचे तू शरण पायेगा उस की सच्चाई फरी और
५ ढाल है । तू रात के भय से न डरेगा न उस बान

से जो दिन को उड़ता है। न उस मरी से जो अंधियारे में चलती है न उस बिनाश से जो मध्यान्ह में उजाड़ करता है। तेरे लग सहस्र गिरेंगे और तेरे दहिने हाथ सहस्रों के सहस्र पर यह बिपत्ति तुझ लों न पहुंचेगी। तू केवल अपनी आंखों से दृष्टि करेगा और दुष्टों के पलटे को देखेगा।

क्योंकि हे परमेश्वर तू ही मेरा शरणस्थान है तू ने अति महान को अपना शरण ठहराया है। बिपत्ति तुझ लों आने न पायेगी और मरी तेरे निवास के पास न आवेगी। क्योंकि वह तेरे लिये अपने दूतों को आज्ञा करेगा जिसतें तेरे सारे मार्गों में तेरी रक्षा करें। वे अपने हाथों पर तुझे उठा लेंगे जिसतें न हो कि तू अपना पांव पत्थर पर पटके। तू सिंह और सांप को लताड़ेगा सिंह के बच्चे और अजगर को कुचलेगा।

क्योंकि वह मुझ पर मोहित हुआ और मैं उसे छुड़ाऊंगा उसे ऊंचे पर रक्खूंगा क्योंकि उस ने मेरे नाम को जाना है। वह मुझे पुकारेगा और मैं उस की सुनूंगा बिपत्ति में मैं उस के संग हूं मैं उसे छुड़ाऊंगा और उसे प्रतिष्ठा दूंगा। मैं उसे बय की बृद्धि से सन्तुष्ट करूंगा और अपनी मुक्ति उसे दिखाऊंगा।

बानबेवां गीत।

बिश्राम दिन के लिये गीत और गान।

परमेश्वर का धन्य मान्ना और हे अति महान तेरे नाम की स्तुति में गान करना भला है। कि बिहान को तेरी दया का और रातों को तेरी सच्चाई का बर्णन

करें। दसतार का बाजा और बीण बरबत के संग सोच और बिचार से बजा बजाके। क्योंकि हे परमेश्वर तू ने अपने कार्य्य से मुझे आनन्दित किया है मैं तेरे हाथों की क्रिया से आनन्द के शब्द करूंगा।

हे परमेश्वर तेरे कार्य्य क्या ही बड़े हैं तेरी चिन्ता अति गहिरी हैं। पशुवत जन न जानेगा और मूर्ख इसे न समझेगा। जब दुष्ट घास की नाईं उगते और सारे कुकर्म्मी फूलते हैं तो यह उन के सदा के नाश होने के लिये है। और हे परमेश्वर तू ही सर्बदा लों अति महान है।

क्योंकि देख तेरे बैरी हे परमेश्वर क्योंकि देख तेरे बैरी नाश होंगे सारे कुकर्म्मी अपने को छिन्नभिन्नता में डालेंगे। और तू ने मेरे सींग को गैंडे के नाईं ऊंचा किया मैं ने टटके तेल से अपने सिर को चिकना किया है। और मेरी आंख ने मेरे बैरियों पर दृष्टि किई है मेरे कान उन दुष्टों के बिषय सुनेंगे जो मेरे बिरोध में उठते हैं।

धर्म्मी खजूर के पेड़ की नाईं लहलहावेगा लुबनान के देवदारु बृक्ष के समान बढ़ेगा। परमेश्वर के घर में लगाये हुए वे हमारे ईश्वर के आंगनों में लहलहावेंगे। वे बुढ़ापे में भी फला करेंगे मोटे और हरे रहेंगे। जिसतें बर्णन करें कि परमेश्वर खरा है और मेरी चटान और उस में अनीति नहीं है।

तिरानबेवां गीत।

परमेश्वर राज्य करता है उस ने बिभव का वस्त्र

पहिना है परमेश्वर ने बल का बस्त्र पहिना और उस ने अपनी कटि बांधी है जगत भी स्थिर रहेगा और न टलेगा। तेरा सिंहासन सदा से स्थिर है सनातन से तू ही है। नदियों ने उठाया हे परमेश्वर नदियों ने अपना महा शब्द उठाया है नदियां अपना महा शब्द उठावेंगी। बड़े और बलवन्त पानियों के महा शब्द से समुद्र की लहरों से परमेश्वर उच्चता में अति बलवान है। तेरी साक्षियां अत्यन्त सच्ची हैं हे परमेश्वर सर्बदा लों तेरे घर को पवित्रता फबती है।

चौरानबेवां गीत।

हे पलटा लेनेहारे सर्बशक्तिमान परमेश्वर हे पलटा लेनेहारे सर्बशक्तिमान प्रकाशित हो। हे जगत के बिचारी अपने ताईं उठा घमंडियों पर उन का व्यवहार पलट दे।

हे परमेश्वर दुष्ट कब लों कब लों दुष्ट फूला करेंगे। सारे कुकर्म्मी कब लों बचन निकालेंगे कठोरता से बातें करेंगे और फूला करेंगे। हे परमेश्वर वे तेरे लोगों को पीस डालते हैं और तेरे अधिकार को दुख देते हैं। वे रांड और परदेशी को घात करते हैं और अनाथों को बधन करते हैं। और वे कहते हैं कि परमेश्वर न देखेगा और यअकूब का ईश्वर न समझेगा।

अरे पशुवत लोगो समझो और अरे मूर्खो तुम कब बुद्धिमान होओगे। क्या कान का उत्पन्न करनेहारा न सुनेगा अथवा आंख का बनानेहारा न देखेगा। क्या जातिगणों का शिक्षक ताड़ना न करेगा मनुष्य को ज्ञान

ठनेहारा क्या वह हर एक को नहीं शिक्षा दे सक्ता। रमेश्वर मनुष्य की चिन्ताओं को जानता है कि वे मिथ्या हैं।

हे परमेश्वर वह मनुष्य क्या ही धन्य है जिसे तू ताड़ना करता है और अपनी व्यवस्था से उसे सिखाता है। जिसतें उसे बिपत्ति के दिनों से बचाके चैन देवे जब लों कि दुष्ट के लिये गड़हा खोदा जाय। क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को छोड़ न देगा और अपने अधिकार को न त्यागेगा। क्योंकि बिचार धर्म्म लों फिर आयेगा और उस के पीछे सारे खरे अन्तःकरणी चलेंगे।

कौन मेरे लिये दुष्टों पर उठेगा कौन मेरे लिये अधर्म्मियों का साम्ना करेगा। यदि परमेश्वर मेरे लिये सहायक न होता तो शीघ्र मेरा प्राण सुनसानी में चुपका हो जाता। यदि मैं कहूं कि मेरा पांव फिसलता है तो हे परमेश्वर तेरी दया मुझे संभालेगी। जब मेरे मन में मेरी चिन्तायें बढ़ जाती हैं तब तेरी शान्ति मेरे प्राण को आनन्दित करती हैं।

क्या अधर्म्मों का सिंहासन जो व्यवस्था की रीति बुराई उत्पन्न करता है तेरा साझी होगा। वे धर्म्मी के प्राण के विरोध में एकट्ठे होते हैं और निर्दोष के लोहू बहाने की आज्ञा करते हैं। परन्तु परमेश्वर मेरा ऊंचा स्थान हुआ और मेरा ईश्वर मेरे शरण की चटान। और वह उन का अधर्म्म उन्हीं पर फेर देता है और वह उन्हें उन की दुष्टता में नष्ट करेगा हां परमेश्वर हमारा ईश्वर उन्हें नष्ट करेगा।

पञ्चानबेवां गीत ।

आओ परमेश्वर के लिये गान करें अपनी मुक्ति की चटान की ओर ललकारें। धन्यबाद के साथ उस के आगे आवें और गीतों के संग उस की ओर ललकारें। क्योंकि परमेश्वर बड़ा महेश्वर है और सारे देवों के ऊपर महाराजा। जिस के हाथ में पृथिवी की गहिराइयां और पहाड़ों की ऊंचाइयां उस की हैं। समुद्र उस का है और उसी ने उसे बनाया और उस के हाथों ने स्थल को बनाया।

आओ दण्डवत करें और झुकें परमेश्वर अपने कर्त्ता के आगे घुटने टेकें। क्योंकि वही हमारा ईश्वर है और हम उस की चराई के लोग और उस के हाथ की भेड़ें आज यदि तुम उस का शब्द सुनो। अपने मन को कठोर मत करो मरीबः की नाईं मस्सः के दिन के समान बन में। जहां तुम्हारे पितरों ने मुझे परखा मेरी परीक्षा किई मेरे कार्य्य को भी देखा। मैं चालीस बरस लों उस बुरी पीढ़ी से उदास रहता हूं और मैं ने कहा कि वे एक मन फिरी हुई जाति हैं और उन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं जाना। जिन से मैं ने अपने क्रोध में किरिया खाई कि वे मेरे बिश्राम में कभी प्रवेश न करेंगे।

छियानबेवां गीत ।

परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ हे सारी पृथिवी परमेश्वर के लिये गाओ। परमेश्वर के लिये गाओ उस के नाम का धन्य मानो प्रतिदिन उस की मुक्ति

को प्रगट करो । अन्यदेशियों में उस की महिमा प्रगट करो सारे लोगों में उस के आश्चर्य्यकर्म्म । क्योंकि परमेश्वर महान है और अति स्तुति के योग्य वह सारे देवों के ऊपर भयवान है । क्योंकि जातिगणों के सारे देव तुच्छ हैं और परमेश्वर ने स्वर्ग को बनाया । प्रतिष्ठा और महिमा उस के आगे हैं बल और सुन्दरता उस के धर्म्मधाम में ।

परमेश्वर को दो हे जातिगणों के परिवारो परमेश्वर को प्रतिष्ठा और बल दो । परमेश्वर को उस के नाम की प्रतिष्ठा दो भेंट लाओ और उस के आंगनों में आओ । पवित्रताई की सुन्दरता के संग परमेश्वर को दण्डवत करो हे सारी पृथिवी उस के आगे कांपो । अन्यदेशियों के मध्य में कहो कि परमेश्वर राज्य करता है हां जगत स्थिर रहेगा और न टलेगा वह खराइयों के संग जातिगणों का बिचार करेगा । स्वर्ग आनन्द करें और पृथिवी मगन हो समुद्र और उस की भरपूरी गर्जन करे । खेत और सब जो उस में हैं आनन्दित होवे तब बन के सारे पेड़ आनन्द के शब्द करेंगे । परमेश्वर के आगे क्योंकि वह आता है क्योंकि वह पृथिवी का न्याय करने को आता है वह धर्म्म के साथ जगत का और अपनी सच्चाई के साथ जातिगणों का न्याय करेगा ।

सतानबेवां गीत ।

परमेश्वर राज्य करता है पृथिवी आनन्दित हो सारे टापू आल्हादित होवें ।

मेघ और काली घटा उस के आस पास है धर्म्म और न्याय उस के सिंहासन का स्थान। आग उस के आगे चलती है और उस के बैरियों को चारों ओर जलाती है। उस की बिजलियों ने जगत को उंजियाला किया तब पृथिवी ने देखा और थर्थरा गई। पहाड़ परमेश्वर के आगे सारे जगत के प्रभु के आगे मोम की नाईं पिघल गये। स्वर्ग उस के धर्म्म को प्रगट करते हैं और सारे लोग उस के बिभव को देखते हैं। खोदी हुई मूर्त्ति के सारे पूजनेहारे जो तुच्छ बस्तुन पर फूलते हैं लज्जित होंगे हे सारे देवगण उस को दण्डवत करो।

सैहून सुनती और मगन होती है और यहूदाह की बेटियां आनन्दित होती हैं हे परमेश्वर तेरे बिचारों के लिये। क्योंकि हे परमेश्वर तू ही सारी पृथिवी के ऊपर महेश्वर है तू सारे देवों के ऊपर अत्यन्त ही बड़ा है।

हे परमेश्वर के प्रेमियो बुराई से घिन करो वह अपने साधुओं के प्राणों का रक्षक है दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ावेगा। धर्म्मी मनुष्य के लिये उंजियाला बोया गया और खरे अन्तःकरणियों के लिये आनन्द। हे धर्म्मियो परमेश्वर से आनन्दित होओ और उस की पवित्रता का बर्णन करते हुए धन्यबाद करो।

अठानबेवां गीत।

गीत।

परमेश्वर के लिये गाओ नया गीत गाओ क्योंकि

उस ने आश्चर्य्यकार्य्य किये हैं उस के दहिने हाथ
और उस की पवित्र भुजा ने उस के लिये उस के
लोगों को बचाया है ।
२ परमेश्वर ने अपनी मुक्ति को प्रगट किया है अन्य-
देशियों की दृष्टि में अपने धर्म्म को प्रगट किया है ।
३ उस ने अपनी दया और अपनी सच्चाई को इसराएल
के घराने के लिये स्मरण किया है पृथिवी के सारे
खूंटों ने हमारे ईश्वर की मुक्ति को देखा है ।
४ हे सारी पृथिवी परमेश्वर की ओर ललकारो फूट
निकलो और आनन्द करो और गाओ बजाओ ।
५ बीणा के संग परमेश्वर के लिये गाओ बजाओ बीणा
६ और गान के शब्द के साथ । तुरहियों और नरसिंगे
के शब्द के संग परमेश्वर राजा के आगे ललकारो ।
७ समुद्र और उस की भरपूरी गर्ज्जन करे जगत और
८ उसके रहनेवाले । नदियां ताल दें पहाड़ मिलके आनन्द
९ करें । परमेश्वर के आगे क्योंकि वह पृथिवी का न्याय
करने आता है वह धर्म्म के साथ जगत का और खराइयों
के संग लोगों का न्याय करेगा ।

निन्नानबेवां गीत ।

१ परमेश्वर राज्य करता है जातिगणें थर्थराते हैं वह
करोबीम पर बैठा हुआ राज्य करता है पृथिवी कांपती
२ है । परमेश्वर सैहून में महान है और सारे जातिगणों
३ के ऊपर वही श्रेष्ठ है । वे तेरे बड़े और भयङ्कर नाम
४ का स्वीकार करेंगे कि पवित्र वही है । और राजा का
बल बिचार से प्रीति रखता है तू ही ने खराइयों को

स्थिर किया है न्याय और धर्म्म यअकूब में तू ही ने किया है। परमेश्वर हमारे ईश्वर की बड़ाई करो और उस के चरणों के नीचे की चौकी को दण्डवत करो पवित्र वही है।

मूसा और हारून उस के याजकों के मध्य और समुएल उन के बीच जो उस का नाम लेते हैं परमेश्वर की ओर पुकारते हैं और वह उन की सुनता है। वह मेघ के खंभे में से उन से बातें करता है उन्हों ने उस की साक्षियों को और उस आज्ञा को जो उस ने उन्हें दिई पालन किया। हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तू ही ने उन की सुनी तू उन के लिये क्षमा करनेवाला सर्बशक्तिमान था और उन के बुरे कार्य्यों का पलटा लेनेहारा। परमेश्वर हमारे ईश्वर की बड़ाई करो और उस के पवित्र पहाड़ को दण्डवत करो क्योंकि परमेश्वर हमारा ईश्वर पवित्र है।

सौवां गीत।

धन्यबाद का गीत।

हे सारी पृथिवी परमेश्वर की ओर ललकारो। आनन्दता के संग परमेश्वर की सेवा करो जयध्वनि के संग उस के आगे आओ। जानो कि परमेश्वर वही ईश्वर है उसी ने हमें अपनी जाति और अपनी चराई की भेड़ें बनाया और हम ने नहीं। धन्यबाद करते हुए उस के फाटकों में और स्तुति करते हुए उस के आंगनों में प्रवेश करो उस का धन्य मानो उस के नाम को धन्यबाद कहो। क्योंकि परमेश्वर भला

है सदा लों उस की दया और पीढ़ी से पीढ़ी लों उस की सच्चाई है।

एकसौ पहिला गीत।

दाऊद का गीत।

मैं दया और न्याय का गीत गाऊंगा तेरी स्तुति में हे परमेश्वर बजाऊंगा। मैं सिद्ध मार्ग में चौकसी दिखलाऊंगा तू कब मेरे पास आवेगा मैं अपने घर के भीतर सिद्ध मन से चला करूंगा। मैं अपनी आंखों के आगे बुराई की बात न रक्खूंगा कुटिलता करने से मैं बैर रखता हूं वह मुझ से न लिपटेगी। कुटिल अन्तःकरण मुझ से जाता रहेगा मैं बुराई को न जानूंगा। जो छिपके अपने परोसी पर दोष लगाता है मैं उसे नाश करूंगा जो ऊंची दृष्टि और अभिमानी है मैं उस को न सहूंगा। मेरी आंखें पृथिवी के बिश्वस्तों पर हैं जिसतें वे मेरे संग रहें जो सिद्ध मार्ग में चलता है वही मेरी सेवा करेगा। मेरे घर के भीतर छली और झूठ बोलनेहारा न रहेगा वह मेरी आंखों के साम्हने न ठहरेगा। बिहान को मैं पृथिवी के सारे दुष्टों को नाश किया करूंगा जिसतें परमेश्वर के नगर से सारे कुकर्म्मियों को काट डालूं।

एकसौ दूसरा गीत।

दुखी की प्रार्थना जब वह शोकित है और परमेश्वर के आगे अपनी दोहाई देता है।

हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन और मेरी दोहाई तुझ लों पहुंचे। मुझ से अपना मुंह न छिपा मेरी

बिपत्ति के दिन मेरी ओर अपना कान धर जिस दिन मैं पुकारूं शीघ्र मेरी सुन।

क्योंकि मेरे दिन धूंए में बीत गये और मेरी हड्डियां लुकटी की नाईं जल गईं। मेरा मन घास की नाईं कुम्हला गया और सूख गया क्योंकि मैं अपनी रोटी खाना भूल गया। मेरे कराहने के शब्द से मेरी हड्डियां मेरे मांस से सट गईं। मैं जंगली गरुड़ के तुल्य हूं मैं खंडहरों के उल्लू के समान हो गया। मैं जागता रहा और उस चिड़िया की नाईं हो गया जो अकेली छत के ऊपर रहती है। सारे दिन मेरे बैरियों ने मुझ पर निन्दा किई है जो मेरे बिरोध में उन्मत्त हैं वे मेरे नाम से कोसते हैं। क्योंकि मैं ने रोटी के समान राख फांकी और अपने पानी में आंसू मिलाया है। तेरी जलजलाहट और तेरे कोप के कारण से क्योंकि तू ने मुझे उठाकर फेंक दिया है।

मेरे दिन छाया के समान बीत गये और मैं घास के समान कुम्हलाने पर हूं। और तू हे परमेश्वर सदा लों सिंहासन पर बैठा रहेगा और तेरा स्मरण पीढ़ी से पीढ़ी लों। तू उठेगा सैहून पर दया करेगा क्योंकि उस पर कृपा करने का समय हां उस का ठहराया हुआ समय आया है। क्योंकि तेरे सेवक उस के पत्थरों से मगन हैं और उस की धूल पर अनुग्रह करते हैं। और जातिगण परमेश्वर के नाम से डरेंगे और पृथिवी के सारे राजा तेरे बिभव से।

क्योंकि परमेश्वर ने सैहून को बनाया है अपने

बिभव में प्रगट हुआ है। वह कंगाल की प्रार्थना की ओर फिरा है और उस ने उन की प्रार्थना को तुच्छ नहीं जाना है। यह अवैया पीढ़ी के लिये लिखा जायगा और उत्पन्न होनेहारी जाति परमेश्वर की स्तुति करेगी। क्योंकि उस ने अपने धर्म्मधाम की ऊंचाई पर से झांका परमेश्वर ने स्वर्ग पर से पृथिवी की ओर दृष्टि किई है। जिसतें बंधुए का कराहना सुने जिसतें मृत्यु के सन्तानों को छुड़ावे। जिसतें सैहून में परमेश्वर का नाम बर्णन किया जाये और यरूसलम में उस की स्तुति। जब जातिगण आपुस में एकट्ठे होंगे और राज्य जिसतें परमेश्वर की सेवा करें।

उस ने मार्ग में उस दुखी का बल घटा दिया मेरी बय को घटा दिया है। मैं कहूंगा कि हे मेरे सर्ब-शक्तिमान मेरी आधी बय में मुझे न उठा ले पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरे बरस हैं। तू ने आरम्भ से पृथिवी की नेव डाली और स्वर्ग तेरे हाथों के कार्य्य हैं। वे नाश होंगे और तू स्थिर रहेगा और वे सब बस्त्र की नाईं पुराने हो जायेंगे तू बस्त्र की नाईं उन्हें पलटेगा और वे पलट जायेंगे। और तू वही है और तेरे बरसों का अन्त न होगा। तेरे सेवकों के लड़के बने रहेंगे और उन के बंश तेरे आगे स्थिर रहेंगे।

एकसौ तीसरा गीत।

दाऊद का गीत।

हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य कह और सब जो मुझ में है उस के पवित्र नाम को। हे मेरे प्राण

परमेश्वर को धन्य कह और उस के सारे उपकारों को न भूल ।

जो तेरे सारे अधर्म्मों को क्षमा करता है जो तेरे सारे रोगों को चंगा करता है । जो समाधि से तेरे प्राण को छुड़ाता है जो तुझ पर अनुग्रह और दया का मुकुट रखता है । जो तेरे प्राण को भलाई से तृप्त करता है तब तेरी तरुणाई गिद्ध की नाईं अपने ताईं नये सिरे से नवीन करती है ।

परमेश्वर सारे सताये हुओं के लिये धर्म्म और बिचार करता है । वह मूसा को अपने मार्गों की इसराएल के सन्तान को अपने बड़े कार्य्य जनाता है । परमेश्वर दयालु और कृपालु है क्रोध में धीमा और दया में बड़ा । न सदा लों वह झगड़ा करेगा और न सदा लों कोप रक्खेगा । उस ने हमारे पापों के समान हमारे साथ नहीं किया और न हमारे अधर्म्मों के समान हम से व्यवहार किया है । क्योंकि जैसा स्वर्ग पृथिवी के ऊपर ऊंचा है वैसा ही उस की दया उस के डरवैयों के ऊपर दृढ़ है । जैसा पूरब पच्छिम से दूर है वैसा ही उस ने हमारे पापों को हम से दूर किया है । जैसा पिता बालकों पर मया करता है वैसा ही परमेश्वर अपने डरवैयों पर दया करता है ।

क्योंकि वही हमारी बनावट को जानता है स्मरण करता है कि हम माटी हैं । मरनहार मनुष्य जो है उस के दिन घास की नाईं हैं जैसा बन का फूल वैसा

ही वह फूलता है। क्योंकि पवन उस पर बही और वह है ही नहीं और उस का ठौर फिर उसे न पहिचानेगा। और परमेश्वर की दया उस के डरवैयों पर सनातन से सनातन लों है और उस की सच्चाई सन्तानों के सन्तानों पर। उस के नियम के धारण करवैयों पर और उस की बिधों के स्मरण करवैयों पर जिसतें उन्हें पूरा करें।

परमेश्वर ने स्वर्गों पर अपना सिंहासन स्थिर किया और उस का राज्य सब पर प्रभुता करता है। परमेश्वर का धन्य मानो हे उस के दूतो बल में सामर्थी उस के बचन पर इस रीति से चलनेहारो कि उस के बचन का शब्द सुनो। परमेश्वर का धन्य मानो हे उस की सारी सेनाओ उस के सेवको उस की इच्छा पर चलनेहारो। परमेश्वर का धन्य मानो हे उस के सारे कार्य्यो उस के राज्य के सारे स्थानों में हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान।

एकसौ चौथा गीत।

हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू अति महान है तू प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य्य से बिभूषित है। वह ज्योति को बस्त्र की नाईं पहिरता है स्वर्गों को घूंघट की नाईं फैलाता है। पानी से अपनी ऊपर की कोठरियों को बनाता है मेघों को अपना रथ बनाता पवन के डैनों पर चलता है। पवनों को अपने दूत बनाता है जलती आग अपने सेवक। उस ने पृथिवी की नेवें उस के ठौरों पर डालीं वह

सनातन लों न टलेगी। तू ने उसे बस्त्र की नाईं गहिराव से ढांपा पानी पहाड़ों के ऊपर खड़े होते हैं। वे तेरी दपट से भाग जाते हैं तेरे गर्ज्जन के शब्द से शीघ्र करते हैं। वे पहाड़ों पर चढ़ते हैं तराइयों में बहते हैं इस स्थान लों जिस की नेव तू ने उन के लिये डाली है। तू ने सिवाना बांधा वे उस्से पार न जायेंगे पृथिवी को ढांपने के लिये न फिरेंगे।

वह नालों में सोते बहाता है वे पहाड़ों के बीचों बीच बहते हैं। वे बन के हर एक पशुन को पिलाते हैं उन से बनैले गदहे अपनी पियास मिटाते हैं। उन के ऊपर आकाश के पक्षी बसते हैं डालियों के बीच में से वे चहचहाते हैं। अपनी ऊपर की कोठरियों से पर्बतों को सींचता है पृथिवी तेरे कार्य्य के फल से तृप्त होती है।

वह पशु के लिये घास उगाता है और हरियाली मनुष्य के जोतने बोने के लिये जिसतें पृथिवी से रोटी निकाले। और मदिरा मनुष्य के मन को मगन करती है जिसतें उस के मुंह को तेल से अधिक चमकावे और रोटी मनुष्य के मन को बल देती है। परमेश्वर के पेड़ रस से परिपूर्ण हैं लुबनान के देवदारु जिन्हें उस ने लगाया है। जहां छोटी चिड़ियां खोंते बनाती हैं लगलग जो है सरो उस का घर है। पहाड़ ऊंचे पहाड़ पहाड़ी बकरों के लिये हैं चटान खरहों के लिये शरणस्थान हैं।

उस ने चन्द्रमा को ठहराई हुई ऋतों के लिये

बनाया सूर्य्य अपने अस्त होने को पहिचानता है। तू अंधियारे को उत्पन्न करता है और रात हो जाती है उस में जंगल का हर एक पशु चलने लगता है। सिंह के बच्चे अहेर के लिये गर्ज्जते हुए और सर्व-शक्तिमान से अपना अहेर ढूंढ़ने के लिये। सूर्य्य उदय होते ही वे एकट्ठे हो जाते हैं और अपनी अपनी मांदों में लेट जाते हैं। मनुष्य अपने काम काज के लिये बाहर निकलता है और अपने परिश्रम के लिये सांझ लों।

हे परमेश्वर तेरी रचना क्या ही बहुत हैं तू ने उन सभों को बुद्धि के साथ बनाया पृथिवी तेरे धन से परिपूर्ण है। यह समुद्र है बड़ा और हर ओर से चौड़ा वहां अगणित रेंगवैये हैं छोटे जन्तु बड़ों समेत। वहां नावें चलती हैं और यह लिवियातान जिसे तू ने उस में कलोल करने के लिये बनाया। वे सब तुझ पर भरोसा रखते हैं जिसतें समय पर उन का आहार देवे। तू उन्हें देता है वे उठा लेते हैं तू अपनी मुट्ठी खोलता है वे उत्तम वस्तु से तृप्त होते हैं। तू अपना मुंह छिपाता है वे व्याकुल होते हैं तू उन का स्वास फेर लेता है वे मर जाते हैं और अपनी माटी में फिर मिल जाते हैं। तू अपना आत्मा भेजता है वे उत्पन्न होते हैं और तू पृथिवी के स्वरूप को नवीन करता है।

परमेश्वर का ऐश्वर्य्य सर्बदा लों हो परमेश्वर अपनी क्रिया पर आनन्दित रहे। जो पृथिवी पर दृष्टि

करता और वह थर्थराती है पहाड़ों को छूता है और उन से धूआं उठता है। मैं अपने जीवन भर परमेश्वर के लिये गाऊंगा अपने जीते रहने लों अपने ईश्वर के लिये गान करूंगा। मेरा उस के बिषय सोच करना अच्छा होगा मैं परमेश्वर से मगन रहूंगा। पापी भूमि पर से नाश होंगे और दुष्ट आगे को है ही नहीं हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान। हलिलूयाह।

एकसा पांचवां गीत।

परमेश्वर का धन्य माना उसे उस के नाम से पुकारो जातिगणों में उस के बड़े कार्य्यों को प्रगट करो। उस के लिये गाओ उस के लिये बजाओ उस के सारे आश्चर्य्यकार्य्यों पर सोच करो। उस के पवित्र नाम से फूलो परमेश्वर के खाजियों का मन आनन्दित रहेगा। परमेश्वर और उस के बल को ढूंढ़ो सदा उस के रूप के खाजनेहारे रहो। उस के अचम्भित कार्य्यों को जो उस ने किये उस के आश्चर्य्यों को और उस के मुंह के बिचारों को स्मरण करो। हे उस के दास अबिरहाम के बंश यअकूब के सन्तान उस के चुने हुओ। वही परमेश्वर हमारा ईश्वर है सारी पृथिवी पर उसी के न्याय हैं। उस ने अपने नियम को सदा के लिये उस बचन को जो उस ने सहस्र पीढ़ियों के लिये कहा चेत किया। जिस नियम को उस ने अबिरहाम के संग बांधा और अपनी किरिया को जो इज़हाक से खाई। और उसे यअकूब के संग ब्यवस्था इसराएल के संग सर्बदा का नियम ठहराया। यह कहते हुए कि

मैं तुझे कनआन की भूमि तुम्हारे अधिकार के भाग में देऊंगा।

जब उन की गिनती हो सक्ती थी थोड़े से और उस में परदेशी थे। और वे जातिगण से जातिगण में और एक राज्य से दूसरे लोगों में फिरा किये। उस ने किसी मनुष्य को उन पर अंधेर करने नहीं दिया और उन के लिये राजाओं को धिक्कारा। कि मेरे अभिषिक्तों को न छूओ और मेरे भविष्यद्वक्तों को हानि न पहुंचाओ। और उस ने देश पर अकाल की आज्ञा किई रोटी के हर टेकन को तोड़ डाला।

उस ने एक मनुष्य को उन के आगे भेजा यूसुफ़ बेचा गया कि दास हो। उन्हों ने बेड़ी से उस के पाओं को दुख दिया उस का प्राण लोहे में पड़ा। उस समय लों कि उस का बचन पूरा हुआ परमेश्वर के बचन ने उसे परखा। राजा ने भेजके उसे छुड़ाया लोगों के अध्यक्ष ने भेजा और उसे निर्बन्ध किया। उस ने उसे अपने घर का अधिपति और अपने सारे अधिकार का प्रधान ठहराया। जिसतें अपनी इच्छा से उस के अध्यक्षों को बांधे और उस के महतों को बुद्धिमान बनाये।

और इसराएल मिस्र में आया और यअ़कूब हाम के देश में परदेशी हुआ। और उस ने अपने लोगों को बहुत ही बढ़ाया और उन्हें उन के बैरियों से अधिक बलवान किया। उस ने उन के मनों को फेरा जिसतें उस के लोगों से बैर रक्खें उस के सेवकों से

छल करें। उस ने मूसा अपने दास को भेजा हारून को जिसे उस ने चुन लिया।

उन्हों ने उन के मध्य उस के चिन्हों के बचन और हाम के देश में आश्चर्य्य प्रगट किये। उस ने अंधियारा भेजा और अन्धकार कर दिया और उन्हों ने उस के बचनों की बिरुद्धता न किई। उस ने उन के पानियों को लोहू कर डाला और उन की मछलियों को मार डाला। उन की भूमि मेंडकों से भर गई और वे उन के राजाओं की कोठरियों में आये। उस ने आज्ञा किई और मक्खियां और मच्छड़ उन के सारे सिवानों में आये। उस ने उन पर मेंह की संती ओले बरसाये उन के देश में जलती आग। और उन के दाख और उन के गूलर के बृक्षों को बिनाश किया और उन के सिवानों के पेड़ों को तोड़ डाला। उस ने आज्ञा किई और टिड्डियां आईं और कीड़े और वे असंख्य थे।
और उन्हों ने उन के देश की सारी हरियाली को
खा लिया और उन के खेत के फल को भक्षण कर
लिया। और उस ने उन के देश में हर पहिलौठे
को उन के सारे बल के पहिले फल को मार डाला।
और उन्हें चांदी और सोने के साथ निकाल लाया
और उन की गोष्ठियों में ठोकर खानेहारा कोई न
था। मिस्र उन के निकलने से आनन्दित था क्योंकि ३
उन का भय उन पर पड़ा था। उस ने छाये के लिये ३
मेघ फैलाया और रात को उंजियाला देने के लिये
आग। लोगों ने मांगा और उस ने बटेर पहुंचाये ४

श्रोर स्वर्गीय रोटी से उन्हें तृप्त किया । उस ने चटान को खोल दिया श्रोर पानी बह निकला वह सूखी भूमि पर नदी की नाईं चला ।

क्योंकि उस ने अपने उस पवित्र बचन को स्मरण किया जो अबिरहाम उस के दास के साथ था । श्रोर अपनी जाति को आनन्द के संग अपने चुने हुओं को गाते बजाते निकाल लाया । श्रोर उन्हें अन्यदेशियों का देश दिया श्रोर वे जातिगणों का परिश्रम अधिकार में पाते हैं । जिसतें वे उस की बिधिन को मनन करें श्रोर उस की व्यवस्थाओं को मानें । हलिलूयाह ।

एकसौ छठवां गीत ।

हलिलूयाह । परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वह भला है क्योंकि उस की दया सदा लों है । कौन परमेश्वर के पराक्रमों का बर्णन करेगा कौन उस की सारी स्तुति सुनायेगा । बिचार के पालन करवैये क्या ही धन्य हैं श्रोर वह जो सदाकाल धर्म्म करता है ।

हे परमेश्वर जो अनुग्रह तू अपने लोगों पर प्रगट करता है उस के संग मुझे स्मरण कर मुझ पर कृपा करके मुक्ति दे । जिसतें तेरे चुने हुओं की भलाई को देखूं तेरे लोगों के आनन्द से आनन्दित होऊं तेरे अधिकार के संग बड़ाई करूं ।

हम ने अपने पितरों समेत पाप किया टेढ़ाई किई दुष्टता किई । हमारे पितर मिस्र में तेरे आश्चर्य्य कार्य्यों को न समझे उन्हों ने तेरी दया की अधिकाई को स्मरण न किया श्रोर समुद्र पर अर्थात् लाल

समुद्र पर फिर गये। और उस ने उन्हें अपने नाम के
लिये बचाया जिसतें अपने पराक्रम को प्रगट करे
और उस ने लाल समुद्र को दपटा और वह सूख गया
और उन्हें गहिराव में ऐसा चलाया जैसा बन में।
और उस ने उन्हें शत्रु के हाथ से बचाया और उन्हें
बैरी के हाथ से छुड़ाया। और पानी ने उन के बैरियों
को ढांप लिया उन में से एक भी न बचा। तब वे उस
की बातों पर बिश्वास लाये उस की स्तुति गाई।
उन्हों ने झट उस के कार्य्यों को भुला दिया उस के मंत्र
की बाट न जोही। और उन्हों ने जंगल में कुइच्छा के
संग इच्छा किई और बन में सर्बशक्तिमान को परखा।
और उस ने उन की बाञ्छा पूरी किई पर उन के प्राण
में क्षीणता भेजी।

और उन्हों ने मूसा से और परमेश्वर के सिद्ध हारून
से डाह किया। तब पृथिवी ने अपना मुंह खोला और
दातान को निंगल गई और अबीराम की जथा को
ढांप लिया। और आग ने उन की जथा को खा लिया
लवर ने उन दुष्टों को भस्म किया।

उन्हों ने होरेब में बछड़ा बनाया और ढाली हुई
मूर्त्ति को दण्डवत किई। और अपने ऐश्वर्य्य को घास
खानेहारे बैल की मूर्त्ति से बदल डाला। उन्हों ने
सर्बशक्तिमान को भुला दिया जिस ने उन्हें बचाया मिस्र
में बड़े बड़े कार्य्य किये। हाम के देश में आश्चर्य्यकार्य्य
लाल समुद्र पर भयङ्कर कर्म्म। और उस ने कहा कि
मैं उन्हें नाश करूंगा यदि उस का चुना हुआ मूसा उस

के सन्मुख दरार में खड़ा न होता जिसतें उस के कोप को नाश करने से फेरे ।

और उन्हों ने मनोनीत भूमि को तुच्छ जाना वे उस के बचन पर बिश्वास न लाये । और अपने तम्बुओं में कुड़कुड़ाये वे परमेश्वर के शब्द के श्रोता न हुए । तब उस ने किरिया खाने में उन की ओर अपना हाथ उठाया कि उन्हें बन में गिरा दे । और उन के बंश को जातिगणों में गिरा दे और उन्हें देशों में बिथरावे ।

और वे बअलपिऊर से मिल गये और मृतकों के बलिदानों को खाया । और उन्हों ने अपने बुरे कर्म्मों से उसे रिसाया और मरी उन में टूट पड़ी । तब फ़िनिहास खड़ा हुआ और न्याय किया और मरी थम गई । और यह उस के लिये धर्म्म गिना गया पीढ़ी से पीढ़ी लों सर्बदा के लिये ।

और उन्हों ने उसे मरीबः के पानियों पर रिस दिलाई और उन के कारण से मूसा की हानि हुई । क्योंकि उन्हों ने उस के आत्मा से दंगा किया और उस ने अपने होंठों से अनुचित बातें कहीं ।

उन्हों ने उन जातिगणों को नाश न किया जिन के विषय में परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई । और उन्हों ने अपने ताईं जातिगणों में मिला दिया और उन के स्वभाव सीखे । और उन की मूर्त्तिन की सेवा किई और वे उन के लिये फंदा हो गईं । और उन्हों ने अपने बेटों और अपनी बेटियों को पिशाचों के

लिये बलिदान किया । और उन्हों ने निर्दोष लोहू अर्थात् अपने बेटों और अपनी बेटियों का लोहू बहाया जिन्हें उन्हों ने कनआन की मूर्त्तिन के लिये बलि किया और देश लोहू से अशुद्ध हुआ । और वे अपने कार्य्यों से अपवित्र हो गये और अपनी बुराइयों से व्यभिचारी ।

तब परमेश्वर का कोप अपने लोगों पर भड़का और उस ने अपने लोगों से घिन किया । और उस ने उन्हें जातिगणों के हाथ में सौंपा और उन के बैरी उन पर अधिकृत हो गये । और उन के शत्रुन ने उन पर बरबस किया और वे उन के हाथ के नीचे दब गये । उस ने कई बार उन्हें छुड़ाया और उन्हों ने अपने परामर्श से उस्से दंगा किया और वे अपने अधर्म्म के कारण से हीन हो गये । और उस ने उन की इस कठिनता पर दृष्टि किई है जब उस ने उन का रोना सुना । और उस ने उन के लिये अपनी बाचा को स्मरण किया और अपनी दया की अधिकाई के समान पछताया है । और उस ने उन के सारे बंधुआई करवैयों को उन पर दयावन्त किया है ।

हे परमेश्वर हमारे ईश्वर हमें बचा और हमें जाति-गणों में से बटोर जिस्तें तेरे पवित्र नाम का धन्यबाद करें और तेरी स्तुति में बड़ाई करें । परमेश्वर इसरा-एल का ईश्वर धन्य हो सनातन से सनातन लों और सारे लोग कहते हैं आमीन । हलिलूयाह ।

एकसौ सातवां गीत ।

परमेश्वर का धन्य माना क्योंकि वह भला है क्योंकि उस की दया सदा लों है । परमेश्वर के वे छुड़ाये हुए यह कहते हैं जिन्हें उस ने कष्ट के हाथ से छुड़ाया है । और उन्हें देशों से एकट्ठा किया है पूरब और पच्छिम से उत्तर और समुद्र से ।

वे बन में सूने मार्ग में भ्रमते फिरे उन्हों ने बसने के लिये कोई नगर न पाया । वे भूखे प्यासे भी हैं उन का प्राण उन में मूर्च्छित होता है । और उन्हों ने अपनी बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारा उस ने उन के कठिन क्लेशों से उन्हें छुड़ाया । और उस ने सीधे पथ पर उन की अगुआई किई जिसतें रहने के लिये नगर में पहुंचे ।

वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों के लिये जो मनुष्य के सन्तान के लिये हैं स्तुति करें । क्योंकि उस ने लालसित प्राण को तृप्त किया और भूखे प्राण को भलाई से सन्तुष्ट किया है ।

अंधेरे और मृत्यु की छाया में रहते थे दुख और लोहे के बन्धायमान । क्योंकि उन्हों ने सर्बशक्तिमान के बचनों से बिरुद्धता किई और अति महान के मंत्र को तुच्छ जाना । और उस ने उन के अन्तःकरण को परिश्रम से घटाया उन्हों ने ठोकर खाई और कोई सहायक न था । और उन्हों ने अपनी बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारा उस ने उन के कठिन क्लेशों

से उन्हें बचाया। वह उन्हें अंधियारे और मृत्यु की छाया से निकालता है और उन के बन्धनों को तोड़ डालता है।

वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों के लिये जो मनुष्य के सन्तान के लिये हैं स्तुति करें। क्योंकि उस ने पीतल के फाटकों को टुकड़े टुकड़े कर दिया और लोहे के बेंड़ों को काट डाला है।

मूर्ख अपने अपराध के मार्ग से और अपने अधर्म्म के कारण से अपने ताईं दुख देते हैं। उन का प्राण हर प्रकार के भोजन से घिन करता है और वे ठीक मृत्यु के फाटकों के निकट पहुंचते हैं। तब वे अपनी बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारते हैं वह उन्हें उन के कठिन क्लेशों से बचाता है। वह अपना बचन भेजता है और उन्हें चंगा करता है और उन्हें उन के नाशों से छुड़ाता है।

वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों के लिये जो मनुष्य के सन्तान के लिये हैं स्तुति करें। और धन्यवाद के बलिदान बलि करें और आनन्द के शब्द के संग उस के कार्य्यों का बर्णन करें।

समुद्र में नौकों पर चढ़े हुए बड़े पानियों में कार्य्य करते हुए। उन्हों ने परमेश्वर के कार्य्यों को और गहिराव में उस के आश्चर्य्यों को देखा। और उस ने कहा और प्रचण्ड पवन उठी और उस ने अपनी

लहरों को उठाया । वे स्वर्ग लों चढ़ते हैं गहिराव में नीचे जाते हैं उन का प्राण अपने ताईं बुराई से गला देता है। वे मतवाले की नाईं डगमगाते और लड़खड़ाते हैं और उन का सम्पूर्ण ज्ञान लोप हो जाता है । और उन्हों ने अपनी बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारा और उस ने उन्हें उन के कठिन क्लेशों से निकाला । वह आंधी को शान्ति कर देता है और उन की लहरें थम जाती हैं । तब वे मगन होते हैं कि आनन्द में हैं और वह उन्हें उन की इच्छा के घाट में पहुंचाता है ।

वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों के लिये जो मनुष्य के सन्तान के लिये हैं स्तुति करें । और जातिगणों की मण्डली में उस की बड़ाई करें और प्राचीनों की सभा में उस की स्तुति करें ।

वह नदियों को बन और पानी के सोतों को सूखी भूमि कर देता है । फलवन्त भूमि को नोनखार उन की बुराई के कारण से जो उस में रहते हैं। वह बन को झील कर देता है और सूखी भूमि को पानी के सोते । और उस ने वहां भूखों को बसाया है और उन्हों ने बसने के लिये नगर सिद्ध किया है । और खेतों को बोया है और दाख की बारी लगाई है और बढ़ती के फल कमाये हैं । और उस ने उन्हें आशीष दिया और वे बहुत बढ़ गये हैं और वह उन के पशुन को घटने नहीं देता । और वे अंधेर बुराई और शोक के मारे घट और दीन हो गये । और

अध्यक्षों पर तुच्छता उंडेलते हुए उस ने उन्हें अपथ अरण्य में भ्रमाया है। और कंगाल को दुख से उठाया और घरानें को झुण्ड की नाईं बनाया है। खरे जन देखेंगे और आनन्दित होंगे और सारी अधर्म्मता अपना मुंह बंद करेगी। कौन बुद्धिमान है कि इन बातों का सोच करेगा और कौन बुद्धिमान लोग परमेश्वर की दया पर ध्यान करेंगे।

एकसौ आठवां गीत।

दाऊद का गान और गीत।

हे ईश्वर मेरा मन स्थिर है मैं गाऊंगा और बजाऊंगा हां मेरा बिभव भी। हे बीणा और सितार जाग मैं भोर को जगाऊंगा। हे परमेश्वर मैं जातिगणों में तेरी स्तुति करूंगा और देशगणों में तेरी स्तुति गाऊंगा। क्योंकि तेरी दया स्वर्गों के ऊपर ऊंची है और तेरी सच्चाई मेघों लों। हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर महान हो और सारी पृथिवी के ऊपर तेरा बिभव हो। जिसतें तेरे प्रिय छुड़ाये जायें तू अपने दहिने हाथ से बचा और हमारी सुन।

ईश्वर ने अपनी पवित्रता के संग बचन कहा इस कारण मैं आनन्दित होऊंगा सिकम को बिभाग करूंगा और सुक्कात की तराई को नापूंगा। जिलिअद मेरा है मनस्सी मेरा और इफ़रायम मेरे सिर का गढ़ यहूदाह मेरा व्यवस्थादायक। मोअब मेरे धोनेधाने का पात्र है मैं अदूम पर अपनी जूती फेकूंगा फिलिस्त पर जयजयकार करूंगा।

कौन मुझे दृढ़ नगर में ले जायगा किस ने मुझे अदूम लों पहुंचाया है। क्या ईश्वर नहीं है तू जिस ने हमें छोड़ दिया है और हे ईश्वर तू जो हमारी सेनाओं के संग न चलेगा। बिपत्ति में हमारी सहाय कर क्योंकि मानुषीय मुक्ति बृथा है। ईश्वर से हम शूरता पावेंगे और वही हमारे बैरियों को रौंद डालेगा।

एकसौ नवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत।

हे मेरे स्तुति के ईश्वर चुप मत हो। क्योंकि उन्हों ने दुष्ट मुंह और छल का मुंह मुझ पर खोला है वे मेरे साथ झूठ की जीभ से बोले हैं। और उन्हों ने बैर की बातों से मुझे घेरा है और अकारण मुझ से लड़े हैं। मेरे प्रेम की सन्ती वे मेरी बिरुद्धता करते हैं और मैं प्रार्थना में हूं। और भलाई की सन्ती वे मुझ पर बुराई लगाते हैं और मेरे प्रेम की सन्ती बैर।

उस पर दुष्ट को करोड़ा ठहरा और बैरी उस के दहिने हाथ पर खड़ा रहे। जब उस का बिचार किया जायेगा तो वह दोषी ठहरेगा और उस की प्रार्थना पाप गिनी जायेगी। उस के दिन थोड़े हों उस का पद दूसरा कोई ले। उस के बच्चे अनाथ हों और उस की स्त्री रांड हो। और उस के बच्चे भ्रमते फिरें और भीख मांगें और अपने उजाड़ों से अपना भोजन ढूंढ़ें। ब्याज लेनेहारा उस का सब कुछ फंसा ले और परदेशी उस की कमाई को लूट लें। उस पर कोई दया बढ़ानेहारा न हो और उस के अनाथों पर कोई अनुग्रह

करवैया न हो। उस का बंश काटा जाय अवैया पीढ़ी में उन का नाम मिटाया जाय। उस के पितरों का अधर्म्म परमेश्वर के आगे स्मरण किया जावे और उस की माता का पाप मिटाया न जाय। वे परमेश्वर के आगे नित्य रहें और वह पृथिवी पर से उन का स्मरण काट डाले।

इस कारण कि उस ने दया करना स्मरण न किया और दुखी और कंगाल मनुष्य को सताया और चूर्ण अन्तःकरण को जिसतें उसे बध करे। और उस ने स्राप को चाहा और वह उस पर पहुंच गया है और वह आशीष से प्रसन्न नहीं हुआ सो वह उस्से दूर हो गया है। और उस ने स्राप को अपने बस्त्र की नाईं पहिना है और वह पानी की नाईं उस के भीतर आया है और तेल की नाईं उस की हड्डियों में। वह उस के लिये उस बस्त्र के समान हो जिसे वह पहिनता है और पटुके के समान वह सदा उसे बांधे। मेरे बैरियों का पलटा परमेश्वर की ओर से और उन का जो मेरे प्राण के बिरोध में बुरा कहते हैं यही हो।

और तू हे परमेश्वर प्रभु अपने नाम के लिये मेरे संग ब्यवहार कर क्योंकि तेरी दया भली है मुझे छुड़ा। क्योंकि मैं दुखी और कंगाल हूं और मेरा अन्तःकरण मुझ में घायल है। छाया की नाईं जब वह फिर जाती मैं जाता रहता मैं टिड्डी की नाईं हंकाया गया। मेरे घुटने उपवास से डगमगाते हैं

और मेरा मांस ऐसा घट गया कि मोटा नहीं। और मैं उन के लिये निन्दा हुआ वे मुझे देखते हैं अपना सिर हिलाते हैं।

हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मेरी सहाय कर अपनी दया के समान मुझे बचा। और वे जानेंगे कि यह तेरा हाथ है हे परमेश्वर तू ही ने यह किया है। वे स्राप देंगे और तू आशीष देगा वे उठे हैं और लज्जित होंगे और तेरा दास आनन्दित होगा। मेरे बैरी दुर्नामी का बस्त्र पहिनेंगे और बस्त्र के समान अपनी लज्जा को पहिनेंगे। मैं अपने मुंह से परमेश्वर का अत्यन्त धन्य मानूंगा और बहुतों के मध्य उस की स्तुति करूंगा। क्योंकि वह कंगाल के दहिने हाथ पर खड़ा होगा जिसतें उसे उस के प्राण के बिचारियों से बचावे।

एकसौ दसवां गीत।

दाऊद का गीत।

परमेश्वर मेरे प्रभु से कहता है कि मेरे दहिने हाथ पर बैठ जब लों कि मैं तेरे बैरियों को तेरे चरण की पीढ़ी न करूं। परमेश्वर तेरे बल का राजदण्ड सैहून से भेजेगा तू अपने बैरियों के मध्य में प्रभुता कर। तेरे सामर्थ्य के दिन तेरे लोग पवित्रता की सुन्दरता के संग प्रसन्नता की भेंट होंगे बिहान के कोख से तेरे लिये तेरी तरुणाई की ओस है। परमेश्वर ने किरिया खाई है और न पछतावेगा कि तू मलिकिसिदक़ के समान सदा लों याजक रहेगा। प्रभु ने तेरे दहिने हाथ पर अपने कोप के दिन राजाओं को मारा है।

वह जातिगणों में बिचार करेगा उस ने उन्हें लोथों
से पूर्ण किया है उस ने बहुत देशों में सिरों को कुचला
है। वह मार्ग में नाले से पीयेगा इस कारण से वह
सिर को ऊंचा करेगा।

एकसौ ग्यारहवां गीत।

हालिलूयाह। मैं सारे अन्तःकरण से परमेश्वर की स्तुति करूंगा साधुन की सभा और मण्डली में। परमेश्वर के कार्य्य महान हैं और उन साधुन की सारी इच्छाओं के समान खोज किये गये हैं। उस का कार्य्य प्रतिष्ठित और ऐश्वर्य्यवान है और उस का धर्म्म सर्बदा लों स्थिर। उस ने अपने आश्चर्य्यकार्य्यों के लिये चिन्ह रक्खा है परमेश्वर कृपालु और दयालु है। उस ने अपने डरवैयों को अहेर दिया है वह सदा अपनी बाचा को स्मरण रक्खेगा। उस ने अपने कार्य्यों का बल अपने लोगों से बर्णन किया है जिसतें उन्हें अन्यदेशियों का अधिकार देवे। उस के हाथ की क्रिया सत्यता और बिचार हैं उस की सारी आज्ञायें सत्य हैं। सर्बदा के लिये स्थिर सच्चाई के संग किये गये और सीधे हैं। उस ने अपने लोगों को मुक्ति दिई है सदा के लिये अपनी बाचा को स्थिर किया है उस का नाम पवित्र और भयङ्कर है। परमेश्वर का भय बुद्धि का आरम्भ है उन सभों के मान्नेहारों की उत्तम बुद्धि है उस की स्तुति सदा लों स्थिर है।

एकसौ बारहवां गीत।

हालिलूयाह। वह मनुष्य क्या ही धन्य जो परमे-

श्वर से डरता है उस की आज्ञाओं पर अत्यन्त आनन्दित होता है। उस का बंश पृथिवी पर बलवन्त होगा खरों के सन्तान आशीषित होंगे। उस के घर में धन और सम्पत्ति है और उस का धर्म्म सदा लों स्थिर। खरों के लिये अंधियारे में उंजियाला उदय होता है जो कृपालु और दयालु और धर्म्मी हैं। क्या ही धन्य वह मनुष्य जो अनुग्रह करता और ऋण देता है वह अपने काम काज को बिचार से सुधारेगा। क्योंकि वह सदा लों न टलेगा सदा लों उस का धर्म्मी होना स्मरण किया जायगा। वह कुसमाचार से भय न करेगा उस का मन दृढ़ है परमेश्वर पर भरोसा रखता हुआ। उस का मन स्थिर है वह न डरेगा यहां लों कि अपने बैरियों पर दृष्टि करे। उस ने बिथराया कंगालों को दिया है उस का धर्म्म सदा लों स्थिर उस का सींग प्रतिष्ठा के संग ऊंचा होगा। दुष्ट देखेगा और कुढ़ेगा अपने दांत किड़किड़ावेगा और गल जायगा दुष्टों का अभिलाष नाश हो जायगा।

एकसौ तेरहवां गीत।

हलिलूयाह। स्तुति करो हे परमेश्वर के दासो परमेश्वर के नाम की स्तुति करो। परमेश्वर का नाम अब से और सदा लों धन्य हो। सूर्य्य के उदय से लेके उस के अस्त लों परमेश्वर के नाम की स्तुति हो। परमेश्वर सारे जातिगणों पर महान है और स्वर्ग पर उस का बिभव।

परमेश्वर हमारे ईश्वर की नाईं स्वर्ग और पृथिवी

पर कौन है। जो ऊंचाई पर रहता जो नीचे देखता है। जो कंगाल को धूल से उठा लेता है घूरे से दीन को ऊंचा करेगा। जिसतें उसे अध्यक्षों के संग अपने लोगों के अध्यक्षों के संग बैठावे। जो घर की रहनेहारी बांझ को बच्चों की आनन्द करनेहारी माता बनाकर बिठलाता है। हल्लिलूयाह।

एकसौ चौदहवां गीत।

जब इसराएल मिस्र से और यअ़कूब का घराना परदेशी भाषा की जाति में से निकला। तब यहूदाह उस का धर्म्मधाम और इसराएल उस का राज्य हो गया। समुद्र ने देखा और भागा यरदन उलटी बही। पहाड़ मेंढ़ों की नाईं उछले पहाड़ियां भेड़ के बच्चों की नाईं।

हे समुद्र तुझे क्या हुआ कि तू भागता है और हे यरदन तुझे क्या हुआ कि तू उलटी बहती है। हे पहाड़ो क्या हुआ कि तुम मेंढ़ों की नाईं उछलते हो और हे पहाड़ियो भेड़ के बच्चों की नाईं। हे पृथिवी प्रभु के आगे कांप यअ़कूब के ईश्वर के आगे। जो पत्थर को पानी का कुण्ड बनाता है और कड़े पाषाण को पानियों के सोते।

एकसौ पन्दरहवां गीत।

हम को नहीं हे परमेश्वर हम को नहीं परन्तु अपने नाम को महिमा दे अपनी दया के कारण अपनी सच्चाई के कारण। जातिगण क्यों कहें कि अब उन का ईश्वर कहां है। हमारा ईश्वर तो स्वर्ग पर है जो उस ने चाहा सो सब किया है।

उन की मूर्त्तें चांदी और सोना हैं मनुष्यों के हाथ

की बनाई हुई । वे मुंह रखती हैं पर बोलती नहीं
आंखें रखती हैं पर देखती नहीं । कान रखती हैं पर
सुनती नहीं नाक रखती हैं पर सूंघती नहीं । उन के
हाथ हैं पर छूती नहीं उन के पांव हैं पर चलती
नहीं वे अपने गले से कुछ शब्द नहीं निकालतीं ।
उन्हीं के समान उन के बनवैये होंगे और हर एक
जो उन पर भरोसा रखता है ।

हे इसराएल परमेश्वर पर भरोसा रख उन की
सहाय और उन की ढाल वही है । हे हारून के
घराने परमेश्वर पर भरोसा रक्खो उन की सहाय
और उन की ढाल वही है । हे परमेश्वर के डरवैयो
परमेश्वर पर भरोसा रक्खो उन की सहाय और
उन की ढाल वही है ।

परमेश्वर ने हमें स्मरण किया है वह आशीष देगा
इसराएल के घराने को आशीष देगा हारून के घराने
को आशीष देगा । वह परमेश्वर के डरवैयों को
आशीष देगा छोटों को बड़ों सहित । परमेश्वर तुम को
बढ़ती देवे तुम को और तुम्हारे लड़कों को । तुम
परमेश्वर के निकट स्वर्ग और पृथिवी के बनानेहारे
के निकट आशीषित हो ।

स्वर्ग परमेश्वर के लिये स्वर्ग हैं और उस ने मनुष्य
के बंश को पृथिवी दिई है । न मृतक परमेश्वर की
स्तुति करेंगे और न वे सब जो समाधि में उतरते हैं ।
और हम अब से और सदा लों परमेश्वर की स्तुति
किया करेंगे । हलिलूयाह ।

एकसौ सोलहवां गीत ।

मैं प्यार करता हूं क्योंकि परमेश्वर मेरा शब्द मेरी बिनतियां सुनता है। क्योंकि उस ने अपना कान मेरी ओर झुकाया है और मैं अपने सारे दिनों में उसे पुकारता रहूंगा। मृत्यु के बन्धनों ने मुझे घेरा समाधि के कष्टों ने मुझे पकड़ लिया मैं दुख और शोक को पाता हूं। और मैं परमेश्वर के नाम को पुकारता हूं कि हे परमेश्वर मैं बिनती करता हूं मेरे प्राण को बचा ले।

परमेश्वर अनुग्राहक और धर्म्मी है और हमारा ईश्वर दया दिखलाता है। परमेश्वर सूधे लोगों का रक्षक है मैं दीन हो गया और उस ने मुझे मोक्ष दिई। हे मेरे प्राण अपने चैनस्थानों में फिर क्योंकि परमेश्वर ने तुझ पर भलाई किई है। क्योंकि तू ने मेरा प्राण मृत्यु से मेरी आंखों को आंसू बहाने से मेरे पांओं को फिसलने से बचाया है। मैं परमेश्वर के आगे जीवतों के देशों में चला फिरा करूंगा। मैं बिश्वास लाया क्योंकि यों बोलता हूं मैं बड़ा दुखी हुआ। मैं ने अपनी घबराहट में कहा कि सारे मनुष्य झूठे हैं।

मैं किस रीति परमेश्वर को उस के सारे पदार्थों के लिये जो मुझ पर हैं पलटा दूंगा। मैं मुक्ति का कटोरा उठाऊंगा और परमेश्वर के नाम को पुकारूंगा। मैं परमेश्वर के लिये अपनी मनौतियां पूरी करूंगा उस के सारे लोगों के आगे मैं बिनती करता हूं।

परमेश्वर की दृष्टि में उस के साधुन की मृत्यु
बहुमूल्य है । हे परमेश्वर मैं बिनती करता हूं क्योंकि
मैं तेरा दास हूं मैं तेरा दास हूं तेरी दासी का पुत्र
तू ने मेरे बन्धनों को खोला है । मैं तुझे धन्यबाद का
बलि चढ़ाऊंगा और परमेश्वर के नाम को पुकारूंगा ।
मैं अपनी मनौतियां परमेश्वर के लिये पूरी करूंगा
उस के सारे लोगों के आगे मैं बिनती करता हूं ।
परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों में हे यरूसलम तुझ
में । हल्लिलूयाह ।

एकसौ सत्रहवां गीत ।

हे सारे जातिगणो परमेश्वर की स्तुति करो हे
सारे लोगो उस का धन्य मानो । क्योंकि उस की दया
हम पर बहुत है और परमेश्वर की सच्चाई सदा लों
है । हल्लिलूयाह ।

एकसौ अठारहवां गीत ।

परमेश्वर का धन्यबाद करो क्योंकि वह भला है
क्योंकि उस की दया सदा लों है । हाय कि इसराएल
कहे क्योंकि उस की दया सदा लों है । हाय कि
हारून का घराना कहे क्योंकि उस की दया सदा लों
है । हाय कि परमेश्वर के डरवैये कहें क्योंकि उस की
दया सदा लों है ।

मैं ने सकेती में परमेश्वर को पुकारा परमेश्वर
ने बिस्तारित स्थान में मेरी सुनी । परमेश्वर मेरी
ओर है मैं न डरूंगा मनुष्य मेरा क्या करेगा । परमेश्वर
मेरे सहायकों में मेरी ओर है और मैं अपने बैरियों

पर दृष्टि करूंगा । परमेश्वर पर भरोसा करना मनुष्य पर भरोसा करने से भला है । परमेश्वर पर भरोसा करना अध्यक्षों पर भरोसा करने से भला है । सारे जातिगणों ने मुझे घेर लिया है परमेश्वर के नाम से मैं किरिया खाता हूं कि उन्हें नाश करूंगा । उन्हों ने मुझे घेर लिया हां मुझे घेर लिया परमेश्वर के नाम से मैं किरिया खाता हूं कि उन्हें नाश करूंगा। उन्हों ने मधुमाखियों की नाईं मुझे घेर लिया है वे कांटों की आग के समान बुझ गये परमेश्वर के नाम से मैं किरिया खाता हूं कि उन्हें नाश करूंगा । तू ने ढकेला मुझे ढकेला जिसतें मैं गिर पड़ूं और परमेश्वर ने मेरी सहाय किई ।

मेरा बल और मेरा गान परमेश्वर है और वह मेरी मुक्ति हो गया है । आनन्द और मुक्ति का शब्द धर्म्मियों के तम्बुओं में है परमेश्वर के दहिने हाथ ने शूरता किई है । परमेश्वर का दहिना हाथ ऊंचा परमेश्वर का दहिना हाथ शूरता करता है । मैं न मरूंगा परन्तु जीता रहूंगा और परमेश्वर की क्रिया बर्णन करूंगा । परमेश्वर ने अति ताड़ना से मुझे ताड़ना किई पर मुझे मृत्यु को नहीं दिया ।

मेरे लिये धर्म्म के फाटक खोलो मैं उन में प्रवेश करूंगा परमेश्वर की स्तुति करूंगा । यह वह फाटक जो परमेश्वर का है धर्म्मी उस में जायेंगे । मैं तेरी स्तुति करूंगा क्योंकि तू ने मेरी सुनी है और मेरी मुक्ति हो गया है । जिस पत्यर को थवइयों ने निकम्मा

ठहराया वह कोने का सिरा हो गया है। परमेश्वर से यह हुआ वह हमारी दृष्टि में आश्चर्य्यित है। यह वह दिन है जिसे परमेश्वर ने बनाया है हम उस में आनन्द करेंगे और मगन होंगे। हे परमेश्वर हम बिनती करते हैं कृपा करके बचा हे परमेश्वर हम बिनती करते हैं कृपा करके भाग्यवानी दे। जो आता है वह परमेश्वर के नाम से धन्य हो हम ने परमेश्वर के घर से तुम्हें आशीष दिई है।

परमेश्वर शक्तिमान है और उस ने हमें उंजियाला दिया है बलिदान को रस्सियों से बांधो यज्ञबेदी के सींगों लों। मेरा सर्बशक्तिमान तू ही है और मैं तेरी स्तुति करूंगा मेरा ईश्वर मैं तेरी प्रतिष्ठा करूंगा। परमेश्वर का धन्यबाद करो क्योंकि वह भला है क्योंकि उस की दया सदा लों है।

एकसौ उन्नीसवां गीत।

अलिफ़।

क्या ही धन्य वे जो मार्ग में सिद्ध हैं जो परमेश्वर की व्यवस्था पर चलते हैं। क्या ही धन्य उस की साक्षियों के पालन करनेहारे जो सारे मन से उसे ढूंढ़ते हैं। वे बुराई भी नहीं करते और उस के मार्गों पर चलते हैं। तू ने अपनी आज्ञाएं प्रचारीं कि हम उन्हें दृढ़ता से पालन करें। हाय कि मेरे मार्ग तेरी बिधिन को पालन करने के लिये स्थिर हों। तब मैं लज्जित न होऊंगा जब तेरी सारी आज्ञाओं पर दृष्टि करूंगा। मैं मन की खराई से तेरी स्तुति

करूंगा जब तेरे धर्म्म के बिचारों का सीखूं। मैं तेरी बिधिन का पालन करूंगा तू मुझे सर्वथा न त्याग।

बेत।

तरुण किस रीति अपने मार्ग को पवित्र रक्खे जिसतें तेरे बचन के समान उसे पालन करे। मैं ने अपने सारे मन से तुझे ढूंढ़ा मुझे अपनी आज्ञाओं से भरमने मत दे। मैं ने अपने मन में तेरे बचन को छिपाया है जिसतें तेरे बिरुद्ध पाप न करूं। हे परमेश्वर तू धन्य हो अपनी बिधिन की मुझे शिक्षा दे। मैं ने तेरे मुंह के सारे न्याय अपने होंठों से बर्णन किये हैं। मैं तेरी साक्षियों के मार्ग में आनन्दित हुआ जैसे कि सारी बढ़ती पर। मैं तेरी आज्ञाओं पर ध्यान करूंगा और तेरे मार्गों पर दृष्टि करूंगा। मैं तेरी बिधिन में अपने ताईं मगन करूंगा तेरे बचन को न भूलूंगा।

गीमल।

अपने सेवक पर भलाई कर जिसतें मैं जीऊं और तेरे बचन को मानूं। मेरी आंखों को खोल और मैं देखा करूंगा तेरी व्यवस्था से आश्चर्य्य। मैं पृथिवी पर परदेशी हूं अपनी आज्ञाओं को मुझ से मत छिपा। मेरा प्राण हर घड़ी तेरे न्यायों की लालसा के मारे टूटा जाता है। तू ने अहङ्कारियों को स्रापितों को जो तेरी आज्ञाओं से भटकते हैं दपटा है। मेरे ऊपर से निन्दा और तुच्छता उलट दे क्योंकि मैं ने तेरी साक्षियों को पालन किया है। अध्यक्ष भी

बैठे और मेरे बिरुद्ध में बातें किईं तेरा सेवक तेरी बिधिन पर ध्यान लगाये है। तेरी साक्षियां मेरे लिये आनन्द भी हैं और मेरी मन्त्र देनेहारी।

दालेथ।

मेरा प्राण धूल से लिपट गया है अपने बचन के समान मुझे जिला। मैं ने अपने पथों को बर्णन किया और तू ने मेरी सुनी अपनी बिधिन की मुझे शिक्षा दे। अपनी आज्ञाओं का मार्ग मुझे समझा और मैं तेरे आश्चर्य्यों पर ध्यान लगाऊंगा। मेरा प्राण शोक के मारे आंसू बहाता है अपने बचन के समान मुझे उठा। झूठ के मार्ग को मुझ से अलग कर और अपनी व्यवस्था कृपा करके मुझे दे। मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है और तेरे न्यायों को अपने सन्मुख रक्खा है। मैं तेरी साक्षियों से लिपटा हुआ हूं हे परमेश्वर मुझे लज्जित न कर। मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ूंगा क्योंकि तू मेरे मन को बढ़ावेगा।

हे।

हे परमेश्वर मुझे अपनी बिधिन का मार्ग दिखा और मैं अन्त लों उसे पालन करूंगा। मुझे समुझ दे और मैं तेरी व्यवस्था को पालन करूंगा और सारे मन से उसे मानूंगा। मुझे अपनी आज्ञाओं के मार्ग पर चला क्योंकि मैं उस में आनन्दित हूं। मेरे मन को अपनी साक्षियों की ओर फिरा और न लालच की ओर। मेरी आंखों को झूठ पर दृष्टि करने से उलट दे अपने मार्ग में मुझे जिला। अपने सेवक के लिये अपने

उस बचन को स्थिर कर जो तेरे डरवैयों के लिये है। मैं अपनी जिस निन्दा से डरता हूं उसे फेर दे क्योंकि तेरे न्याय उत्तम हैं। देख मैं तेरी आज्ञाओं का लालसित हूं अपने धर्म्म में मुझे जिला।

वाव।

और हे परमेश्वर तेरी दया मुझ पर आवे तेरी मुक्ति तेरे बचन के समान। तो मैं अपने निन्दक से उत्तर का बचन बोलूंगा क्योंकि मैं तेरे बचन पर भरोसा रखता हूं। और सच्चाई का यह बचन मेरे मुंह से सर्वथा छीन न ले क्योंकि मैं तेरे बिचारों का आशावान हूं। और मैं तेरी व्यवस्था को सदा सर्वदा लों पालन करूंगा। और मैं निर्बन्धता में चला फिरा करूंगा क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाएं ढूंढ़ी हैं। और मैं राजाओं के आगे तेरी साक्षियों की चर्चा करूंगा और लज्जित न होऊंगा। और मैं तेरी उन आज्ञाओं में जिन्हें प्यार करता हूं अपने ताईं आनन्दित करूंगा। और मैं अपने हाथ तेरी उन आज्ञाओं की ओर जिन्हें प्यार करता हूं उठाऊंगा और तेरी बिधिन पर ध्यान लगाऊंगा।

ज़ैन।

अपना बचन अपने सेवक के लिये स्मरण कर क्योंकि तू ने मुझे आशावान किया है। यह मेरी शान्ति मेरे दुख में है कि तेरे बचन ने मुझे जिलाया है। अभिमानियों ने मुझे अति ठट्ठे में उड़ाया है मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा। हे परमेश्वर मैं ने तेरे पुरातन बिचारों को स्मरण रक्खा है और अपने को शान्ति दिई है।

कोपाग्नि ने मुझे पकड़ लिया है उन दुष्टों के कारण से जो तेरी व्यवस्था को त्यागते हैं। मेरे यात्रालय में तेरी बिधिन मेरे लिये गान हुई हैं। हे परमेश्वर मैं रात को तेरे नाम को स्मरण करता और तेरी व्यवस्था को पालन करता हूं। यह मुझ से बन पड़ा क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को पालन किया है।

खेत।

हे परमेश्वर मैं ने कहा कि मेरा भाग यह है कि तेरे बचनों को पालन करूं। मैं ने सारे मन से तेरे रूप की याचना किई है अपने बचन के समान मुझ पर दया कर। मैं ने अपने मार्गों पर सोच किया है और अपने पांव तेरी साक्षियों की ओर फिर फेरे हैं। मैं ने तेरी आज्ञाओं को पालन करने में फुरती किई और आलस्य न किई। दुष्टों के बन्धनों ने मुझे घेरा पर मैं ने तेरी व्यवस्था को नहीं भुलाया। मैं आधी रात को उठूंगा जिसतें तेरे धर्म्म के बिचारों के कारण तेरा धन्य मानूं। मैं उन सभों का संगी हूं जो तुझ से डरते हैं और उन का जो तेरी आज्ञाओं को मानते हैं। हे परमेश्वर पृथिवी तेरी दया से पूर्ण है अपनी बिधिन की मुझे शिक्षा दे।

तेथ।

हे परमेश्वर तू ने अपने बचन के समान अपने सेवक से अच्छा व्यवहार किया है। सुबिचार और ज्ञान की मुझे शिक्षा दे क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं पर बिश्वास लाया हूं। उस्से पहिले कि मैं ने दुख पाया

मैं भटका हुआ था पर अब मैं ने तेरे बचन को पालन किया है। तू भला है और भलाई करता है अपनी बिधिन का मुझे ज्ञान दे। अहङ्कारियों ने मेरे बिरुद्ध झूठ बना रक्खा है मैं सारे मन से तेरी आज्ञाओं को पालन करूंगा। उन का मन चिकनाई के समान चिकना है मैं तेरी व्यवस्था से आनन्दित हूं। मेरे लिये भला है कि मैं दुख में पड़ा जिसतें तेरी बिधिन को जानूं। तेरे मुंह की व्यवस्था मेरे लिये सोने और चांदी के सहस्रों से अच्छी है।

योद।

तेरे हाथों ने मुझे बनाया और मुझे सिद्ध किया मुझे समझ दे और मैं तेरी आज्ञाओं का ज्ञान प्राप्त करूंगा। तेरे डरवैये मुझे देखेंगे और आनन्दित होंगे क्योंकि मैं तेरे बचन का आशावान रहा। हे परमेश्वर मैं जानता हूं कि तेरे बिचार सत्य हैं और तू ने सत्यता के संग मुझे दुख दिया है। अपने उस बचन के समान जो अपने सेवक से किया हाय कि तेरी दया मुझे शान्ति देने के लिये हो। तेरी कृपायें मुझ पर आवें तो मैं जीता रहूंगा क्योंकि तेरी व्यवस्था मेरी आनन्दता है। अहङ्कारी लज्जित हों क्योंकि उन्हों ने झूठ से मेरे बिवाद को टेढ़ा किया है मैं तेरी आज्ञाओं पर ध्यान रक्खूंगा। तेरे डरवैये मेरी ओर फिरें और तेरी साक्षियों को जानें। मेरा मन तेरी बिधिन में सिद्ध हो जिसतें मैं लज्जित न होऊं।

काफ़ ।

मेरा प्राण तेरी मुक्ति के लिये मूर्च्छित है मैं तेरे बचन पर आशावान रहता हूं। मेरी आंखें तेरे बचन के बाट जोहने में मूर्च्छित हुईं यह कहते हुए कि तू कब मुझे शान्ति देगा। क्योंकि मैं उस चर्मरूपी जलपात्र के समान हुआ जो धूएं में है मैं ने तेरी बिधिन को नहीं भुलाया। तेरे सेवक के दिन कितने हैं तू कब मेरे सतानेहारों पर न्याय प्रगट करेगा। अहङ्कारियों ने मेरे लिये गड़हे खोदे हैं जो तेरी ब्यवस्था के समान नहीं हैं। तेरी सारी आज्ञाएं बिश्वासमय हैं वे झूठ से मुझे सताते हैं मेरी सहाय कर। निकट था कि वे मुझे पृथिवी पर से मिटा डालते पर मैं ने तेरी आज्ञाओं को त्याग न किया। अपनी दया के समान मुझे जीता रख और मैं तेरे मुंह की साक्षियों को पालन करूंगा।

लामद ।

हे परमेश्वर तेरा बचन सर्बदा स्वर्ग पर स्थिर है। तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों है तू ने पृथिवी को स्थिर किया और वह स्थिर है। वे तेरे न्यायों के कारण आज लों स्थिर हैं क्योंकि सब तेरे सेवक हैं। यदि तेरी ब्यवस्था मेरी आनन्दता न होती तो मैं अपनी बिपत्ति में नाश हो जाता। मैं कभी तेरी आज्ञाओं को न भूलूंगा क्योंकि तू ने उन के द्वारा से मुझे जिलाया है। मैं तेरा हूं मुझे बचा क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को खोज किया है। दुष्ट मेरी घात में लगे हैं जिसतें मुझे नाश करें मैं तेरी साक्षियों पर ध्यान

लगाऊंगा । मैं ने सारी सिद्धता का अन्त देखा पर तेरी आज्ञा अत्यन्त चौड़ी है ।

मीम ।

वाह मैं तेरी व्यवस्था से क्या ही प्रीति रखता हूं सारे दिन मेरा ध्यान वही है । तेरी आज्ञाएं मुझे मेरे बैरियों से अधिक बुद्धिमान बनाती हैं क्योंकि वे सदा मेरे लिये हैं । मैं अपने सारे उपदेशकों से अधिक समझ रखता हूं क्योंकि तेरी साक्षियों पर मेरा ध्यान है । मैं प्राचीनों से अधिक समझता हूं क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को पालन किया है । मैं ने अपने पांव को हर कुमार्ग से रोक रक्खा है जिसतें तेरे बचन को पालन करूं । मैं तेरे बिचारों से नहीं हटा क्योंकि तू ही ने मेरी अगुआई किई है । तेरी बातें मेरे तालू में क्या ही मीठी लगती हैं मधु से अधिक मेरे मुंह में । मैं तेरी आज्ञाओं से समझ पाता हूं इस लिये मैं ने हर झूठे मार्ग से घिन किया है ।

नून ।

तेरा बचन मेरे पांव के लिये दीपक है और मेरे मार्ग के लिये उंजियाला । मैं ने किरिया खाई है और उसे पूरा करूंगा कि तेरे धर्म्म के बिचारों को पालन करूंगा । मैं अति दुखी हूं हे परमेश्वर अपने बचन के समान मुझे जिला । हे परमेश्वर मैं बिनती करता हूं मेरे मुंह की मनमनता की भेंटों से प्रसन्न हो और अपने न्यायों का मुझे ज्ञान दे । मेरा प्राण सदा मेरी हथेली पर है पर मैं ने तेरी व्यवस्था को नहीं

११० बिसराया। दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया है पर
१११ मैं तेरी आज्ञाओं से भटक नहीं गया। मैं ने सदा
के लिये तेरी साक्षियों को अधिकार में लिया है
११२ क्योंकि मेरे मन का आनन्द वेही हैं। मैं ने अपने
मन को झुकाया है कि सदा लों हां अन्त लों तेरी
बिधिन को पालन करूं।

सामिख।

११३ मैं कुभावनाओं से घिन करता हूं और तेरी
११४ ब्यवस्था से प्रेम रखता हूं। मेरे छिपने का स्थान
और ढाल तू ही है मैं तेरे बचन का आशावान
११५ हूं। हे कुकर्म्मियो मेरे पास से दूर होओ और मैं
११६ अपने ईश्वर की आज्ञाओं को मानूंगा। अपने
बचन के समान मुझे संभाल और मैं जीता रहूं और
११७ मेरी आशा से मुझे लज्जित न कर। मुझे थाम ले
और मैं बचा रहूंगा और सदा तेरी बिधिन पर
११८ दृष्टि रक्खूंगा। तू अपनी बिधिन के सारे भटके
हुओं को तुच्छ जानता है क्योंकि उन का छल मिथ्या
११९ है। तू ने पृथिवी के सारे दुष्टों को सोने चांदी के
मैल की नाईं मिटा डाला है इस लिये मैं तेरी
१२० साक्षियों से प्रीति रखता हूं। मेरा शरीर तेरे डर
से थर्थराता है और मैं तेरे न्यायों से डरता हूं।

ऐन।

१२१ मैं ने न्याय और धर्म्म किया है मुझे मेरे सता-
१२२ नेवालों के बश में न छोड़। भलाई के लिये अपने
सेवक का बिचवई हो अहङ्कारी मुझे न सतावें।

मेरी आंखें तेरी मुक्ति के और तेरे धर्म्म के बचन की बाट जोहने में मूर्छित हो गईं। अपनी दया के समान अपने सेवक से व्यवहार कर और अपनी बिधिन का मुझे ज्ञान दे। मैं तेरा सेवक हूं मुझे समझ दे जिसतें तेरी साक्षियों को जानूं। परमेश्वर के लिये कार्य्य करने का समय है वे तेरी व्यवस्था को भङ्ग करते हैं। इस लिये मैं तेरी आज्ञाओं को सोने हां चोखे सोने से अधिक प्यार करता हूं। इस लिये मैं तेरी सारी आज्ञाओं को सभों के बिषय ठीक जानता हूं और झूठ के हर मार्ग से घिन करता हूं।

पे।

तेरी साक्षियां आश्चर्य्यित हैं इस लिये मेरा प्राण उन्हें पालन करता है। तेरे बचनों का खुल जाना सूधे मनों को समझाके उंजियाला करता है। मैं अपना मुंह फैलाता और हांफता हूं क्योंकि तेरी आज्ञाओं के लिये अभिलाषी हूं। अपने नाम के प्रेमियों के आचरण के समान मेरी ओर दृष्टि कर और मुझ पर दया कर। अपने बचन के कारण से मेरे डगों को स्थिर कर और कोई अधर्म्म मुझ पर राज्य न करे। मनुष्य के अंधेर से मुझे छुड़ा और मैं तेरी आज्ञाओं को पालन किया करूंगा। अपने सेवक पर अपने मुंह को चमका और अपनी बिधिन का मुझे ज्ञान दे। मेरी आंखें पानी की नदियां होके बह जाती हैं इस कारण कि वे तेरी व्यवस्था को पालन नहीं करते।

ज़ादि ।

हे परमेश्वर तू ही धर्म्मी है और अपने बिचारों में सच्चा । तू ने अति धर्म्म और सच्चाई के संग अपनी साक्षियां प्रचारी हैं । मेरी ज्वलन मुझे खा लेती है क्योंकि मेरे बिरोधी तेरे बचनों को भुला देते हैं । तेरा बचन भली भांति ताया गया और तेरा दास उस्से प्रेम रखता है । मैं अधम हूं और तुच्छ पर तेरी आज्ञाओं को नहीं भूलता । तेरा धर्म्म सर्बदा सच्चा है और तेरी व्यवस्था सत्य । सकेती और कष्ट ने मुझे ले लिया है तेरी आज्ञाएं मेरी आनन्दता हैं । तेरी साक्षियां सनातन लों सच्ची हैं मुझे ज्ञान दे तो मैं जीता रहूंगा ।

क़ाफ़ ।

मैं सारे मन से पुकारता हूं हे परमेश्वर मेरी सुन
३ मैं तेरी बिधिन को पालन करूंगा । मैं तुझे पुकारता
हूं मुझे बचा और मैं तेरी साक्षियों को ताकता
७ रहूंगा । मैं पौ फटने के समय तेरे आगे आता हूं
और दोहाई देता हूं तेरे बचनों का आशावान हूं ।
८ मेरी आंखें रात के पहरों को आगे से ले लेती हैं
९ जिसतें तेरे बचन पर ध्यान रक्खूं । अपनी दया के
समान मेरा शब्द सुन हे परमेश्वर अपने बिचारों
० के अनुसार मुझे जिला । बुराई के पीछा करवैया
१ समीप हैं वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं । हे परमे-
श्वर तू ही निकट है और तेरी सारी आज्ञाएं
२ सत्य हैं । मैं ने आगे से तेरी ही साक्षियों से जाना

है कि तू ने उन्हें सदा के लिये स्थिर किया है।

रेश।

मेरी बिपत्ति को देख और मुझे छुड़ा क्योंकि मैं ने
तेरी ब्यवस्था को नहीं भुलाया है। मेरे पद के बिवाद
में मेरी सहायता कर और मुझे छुड़ा अपने बचन
के समान मुझे जिला। मुक्ति दुष्टों से दूर है क्योंकि
वे तेरी बिधिन को नहीं ढूंढ़ते। हे परमेश्वर तेरी
दया बहुत हैं अपने न्यायों के समान मुझे जिला।
मेरे सतानेहारे और दुखदेनेहारे बहुत हैं मैं
तेरी साक्षियों से नहीं हटा। मैं उन परपंचियों
को देखता और घिन करता हूं जो तेरे बचन को
पालन नहीं करते। देख कि मैं तेरी आज्ञाओं से
प्रीति रखता हूं हे परमेश्वर अपनी दया के समान
मुझे जिला। तेरे बचन का आरम्भ सत्य है और
तेरी सच्चाई का हर एक बिचार सदा के लिये है।

शीन।

अध्यक्ष अकारथ मेरे पीछे पड़े हैं और मेरा मन
तेरे बचनों से भयवान है। मैं बहुत लूट पानेहारों १
की नाईं तेरे बचन पर मगन रहता हूं। मैं झूठ १
से घिन करता और बैर रखता हूं तेरी ब्यवस्था से
प्रीति रखता हूं। मैं तेरे धर्म्म के न्याय के कारण १
प्रतिदिन सात बेर तेरी स्तुति करता हूं। तेरी १
ब्यवस्था के प्रेमियों को बड़ा चैन है और उन के
लिये किसी प्रकार की ठोकर नहीं है। हे परमेश्वर १
मैं तेरी मुक्ति का आशावान हूं और तेरी आज्ञाओं

के अनुसार करता हूं। मेरा प्राण तेरी साक्षियों को पालन करता है और मैं उन से अत्यन्त प्रेम रखता हूं। मैं तेरी आज्ञाओं और तेरी साक्षियों को पालन करता हूं क्योंकि मेरी सारी चाल तेरे आगे हैं।

ता।

हे परमेश्वर मेरा बिलाप तेरे आगे पहुंचे अपने बचन के समान मुझे समझ दे। मेरी बिनती तेरे आगे आये अपने बचन के समान मुझे छुड़ा। मेरे होंठ स्तुति बर्णन किया करेंगे क्योंकि तू अपनी बिधिन का मुझे ज्ञान देगा। मेरी जीभ तेरे बचन का यह उत्तर दे कि तेरी सारी आज्ञाएं सच्ची हैं। तेरा हाथ मेरी सहायता के लिये निकट रहे क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को अङ्गीकार किया है। हे परमेश्वर मैं तेरी मुक्ति की लालसा रखता हूं और तेरी व्यवस्था मेरे आनन्द हैं। मेरा प्राण जीता रहे और तेरी स्तुति करे और तेरे न्याय मेरी सहायता करें। मैं खोई हुई भेड़ की नाईं भटक गया अपने दास को ढूंढ़ क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को नहीं भुलाया।

एकसौ बीसवां गीत।

यात्राओं का गान।

मैं ने अपनी सकेती में परमेश्वर को पुकारा और उस ने मेरी सुनी। हे परमेश्वर मेरे प्राण को झूठ के होंठ से और छली जीभ से छुड़ा।

हे छली जीभ वह तुझे क्या देगा और तुझे क्या

अधिक करेगा । बलवान के चोखे किये हुए बा
रतमबृक्ष के कोएले सहित ।

हाय मुझ पर कि मैं मसक के संग परदेशी
और किदार के तंबुओं के निकट रहता हूं । मेरा प्रा
कुशल के बैर रखनेहारे के संग अपनी भलाई के लि
अबेर लों रहा है । मैं कुशल हूं और जब बातें करत
हूं तब वे लड़ाई के लिये लैस होते हैं ।

एकसौ एक्कीसवां गीत ।

यात्राओं का गान ।

मैं अपनी आंखें पहाड़ों की ओर उठाता हूं मेर
सहाय कहां से आवेगी । मेरी सहाय परमेश्वर स्व
और पृथिवी के बनानेहारे से है । वह तेरे पांव को
टलने न दे तेरा रक्षक न ऊंघे । देख इसराएल का
रक्षक न ऊंघेगा और न सोवेगा । परमेश्वर तेर
रक्षक है परमेश्वर तेरे दहिने हाथ पर तेरा छाया है
दिन को सूर्य्य तुझे कुछ दुख न देगा और रात को
चन्द्रमा । परमेश्वर तुझे सारी बुराई से बचावेगा ते
प्राण को बचावेगा । परमेश्वर तेरे आने जाने
तुझे बचावेगा अब से सदा लों ।

एकसौ बाईसवां गीत ।

यात्राओं का गान । दाऊद का ।

मैं उन से आनन्दित हूं जो मुझ से कहते हैं वि
परमेश्वर के मन्दिर में चलें । हे यरूसलम हमा
पांव तेरे फाटकों में खड़े होते हैं । यरूसलम में जो ऐ
नगर की नाईं बनाया गया जो अपने घरों में आप

संयुक्त है। जहां गोष्ठियां परमेश्वर की गोष्ठियां इसराएल को साक्षी देने के लिये ऊपर चढ़ती हैं जिसतें परमेश्वर के नाम का धन्यबाद करें। क्योंकि वहां न्याय के लिये सिंहासन दाऊद के घराने के लिये सिंहासन धरे हुए हैं।

यरूसलम के कुशल के लिये प्रार्थना करो तेरे प्यार करनेहारे कुशल से रहें। तेरी भीतों के भीतर कुशल हो तेरे भवनों में चैन। मैं अपने भाइयों और अपने संगियों के लिये कहूं कि तुझ में कुशल हो। मैं परमेश्वर अपने ईश्वर के मन्दिर के कारण तेरी भलाई का खोजी रहूंगा।

एकसौ तेईसवां गीत।

यात्राओं का गान।

मैं अपनी आंखें तेरी ओर उठाता हूं हे स्वर्ग पर बैठनेहारे। देख जिस रीति से कि सेवक अपने स्वामियों के हाथों को ताकते हैं जिस रीति से कि दासी अपनी स्वामिनी के हाथों को ताकती है उसी रीति हमारी आंखें परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर हैं जब लों कि वह हम पर दया न करे। हम पर दया कर हे परमेश्वर हम पर दया कर क्योंकि हम निन्दा से अत्यन्त परिपूर्ण हुए। हमारे प्राण सुखियों की निन्दा से अहङ्कारियों के ठट्ठे से अपने लिये अत्यन्त परिपूर्ण हुए।

एकसौ चौबीसवां गीत।

यात्राओं का गान। दाऊद का।

यदि परमेश्वर न होता जो हमारी ओर हुआ

हाय कि इसराएल कहे। यदि परमेश्वर न होता जो हमारी ओर हुआ जब मनुष्य के सन्तान हमारे बिरोध में उठे। तो वे उसी समय हमें जीता निंगल जाते जब उन का क्रोध हम पर भड़का। उसी समय पानी हम पर बहि जाता और धारा हमारे प्राण के ऊपर जाती। उस समय पानी उमड़ता हुआ पानी हमारे प्राण के ऊपर जाता।

परमेश्वर धन्य हो जिस ने हमें उन के दांतों में अहेर के समान नहीं दिया। हमारा प्राण चिड़िया की नाईं ब्याधों के जाल से छूट गया फंदा टूट गया और हम छूट गये। हमारी सहाय परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी के बनानेहारे के नाम से है।

एकसौ पचीसवां गीत।

यात्राओं का गान।

परमेश्वर पर भरोसा रखनेहारे सैहून पर्बत की नाईं हैं जो न टलेगा परन्तु सदा लों स्थिर रहेगा। यरूसलम उस के आस पास पर्बत हैं और परमेश्वर अपने लोगों के चहुंओर है अब से और सदा लों। क्योंकि दुष्टता का दण्ड धर्म्मियों के भाग पर न रहेगा जिसतें धर्म्मी अपने हाथ बुराई पर न बढ़ावें।

हे परमेश्वर भलों से भलाई कर और उन से जो अपने अन्तःकरणों में खरे हैं। और जो अपने टेढ़े टेढ़े मार्गों की ओर बहक जाते हैं उन्हें परमेश्वर कुकर्म्मियों के संग चलावेगा इसराएल पर कुशल हो।

एकसौ छब्बीसवां गीत।

यात्राओं का गान।

जब परमेश्वर सैहून के फिरनेहारों की ओर फिरा तब हम स्वप्नदर्शियों की नाईं थे। उसी समय हमारा मुंह हंसी से और हमारी जीभ आनन्द के शब्द से भर गई उसी समय उन्हों ने जातिगणों में कहा कि परमेश्वर ने इन के साथ बड़े कार्य्य किये हैं। परमेश्वर ने हमारे साथ बड़े कार्य्य किये हैं हम आनन्दित हैं।

हे परमेश्वर हमारी बंधुआई की ओर फिर उन धारों की नाईं जो दक्षिण में हैं। जो आंसुओं के साथ बोते हैं वे आनन्द के साथ लवेंगे। वह अपने बीज का बोझ उठाये हुए रोता हुआ चला जायेगा अपने पूले उठाये हुए आनन्द के साथ आयेगा आयेगा।

एकसौ सत्ताईसवां गीत।

यात्राओं का गान। सुलेमान का।

यदि परमेश्वर घर न बनावे तो उस के बनवैया अकार्थ उस में परिश्रम करते हैं यदि परमेश्वर नगर की रक्षा न करे तो उस का रखवाल व्यर्थ जागता है। तुम्हारे लिये वृथा है कि तुम तड़के उठते अबेर में बैठते परिश्रमों की रोटी खाते हो वह तो ऐसी वस्तें अपने प्यार करनेहारे को नींद में देता है।

देखो लड़के परमेश्वर की ओर से अधिकार हैं गर्भ का फल प्रतिफल है। जैसे बलवान के हाथ में बाण तैसे ही तरुणाई के लड़के हैं। क्या ही धन्य वह

मनुष्य जिस ने अपने तूण को उन से भर दिया है वे लज्जित न होंगे जब अपने शत्रुओं से द्वार पर बार्त्ता करेंगे ।

एकसौ अट्ठाईसवां गीत ।

यात्राओं का गान ।

परमेश्वर का हर एक डरवैया क्या ही धन्य है जो उस के मार्गों पर चलता है । जब तू अपने हाथों की कमाई खायेगा तब तू क्या ही धन्य और तेरे लिये भलाई । तेरी पत्नी फलवन्त दाख की नाईं तेरे घर के भीतर तेरे बच्चे तेरे मञ्च की चारों ओर जल-पाई के पौधों की नाईं होंगे ।

देख कि जो मनुष्य परमेश्वर से डरता है वह इसी रीति से धन्य होगा । परमेश्वर तुझे सैहून से आशीष दे और तू जीवन भर यरूसलम की भलाई पर दृष्टि किया कर । और अपने बच्चों के बच्चों को देख इस-राएल पर कुशल हो ।

एकसौ उंतीसवां गीत ।

यात्राओं का गान ।

मेरी तरुणाई से उन्हों ने बहुधा मुझे सताया हाय कि इसराएल कहे । मेरी तरुणाई से उन्हों ने बहुधा मुझे सताया तद भी मुझ पर प्रबल न हुए । हल-वाहों ने मेरी पीठ पर हल जोता उन्हों ने अपनी रेघारियां लंबी किईं । परमेश्वर धर्म्मी है उस ने दुष्टों की रस्सी को काट डाला ।

सैहून के सारे बैर रखनेहारे लज्जित होंगे और

पीछे हटाये जायेंगे। वे छत्तों की घास की नाईं होंगे जो उस्से पहिले कि कोई उसे उखाड़े सूख जाती है। जिस्से लवनेहारा अपने हाथ को नहीं भरता और पूलों का बंधवैया अपनी अंकवार को। और मार्ग के जवैया नहीं कहते हैं कि परमेश्वर की आशीष तुम पर आवे हम तुम को परमेश्वर के नाम से आशीष देते हैं।

एकसौ तीसवां गीत।

यात्राओं का गान।

हे परमेश्वर मैं गहिराओं में से तुझे पुकारता हूं। हे प्रभु मेरा शब्द सुन तेरे कान मेरे शब्द की बिन्तियों पर लगे रहें। हे परमेश्वर यदि तू अधर्म्मों पर दृष्टि करे तो हे प्रभु कौन खड़ा रहेगा। क्योंकि तेरे पास क्षमा है जिसतें तुझ से डरें।

मैं परमेश्वर की बाट जोहता हूं मेरा प्राण बाट जोहता है और मैं उस के बचन का आशावान हूं। मेरा प्राण बिहान के बाट जोहनेहारों से हां बिहान के बाट जोहनेहारों से अधिक प्रभु की बाट जोहता है।

हे इसराएल परमेश्वर पर आशा रख क्योंकि परमेश्वर के पास दया है और उस के पास मुक्ति की बहुताई। और वही इसराएल को उस के सारे अधर्म्मों से छुड़ावेगा

एकसौ एकतीसवां गीत।

यात्राओं का गान। दाऊद का।

हे परमेश्वर मेरा मन अहङ्कारी नहीं है और

मेरी आंखें ऊंची नहीं हैं और मैं बड़ी बातों में और उन में जो मेरे लिये आश्चर्य्यित हैं नहीं लवलीन होता। यदि मैं ने अपने प्राण को सदृश और चुपचाप नहीं किया है जैसा दूध छुड़ाया हुआ बालक अपनी माता पर बिश्राम करता है तो ईश्वर जानता है दूध छुड़ाये हुए बालक के समान मेरा प्राण मुझ पर बिश्राम करता है। हे इसराएल परमेश्वर का आशावान हो अब से और सदा लों।

एकसौ बत्तीसवां गीत।

यात्राओं का गान।

हे परमेश्वर दाऊद के लिये उस के सारे क्लेशित होने को स्मरण कर। जिस ने परमेश्वर से किरिया खाई और यअकूब के शक्तिमान की मनौती मानी। कि यदि मैं अपने घर के डेरे में जाऊं अपने बिछौने की खाट पर चढ़ूं। यदि अपनी आंखों में नींद अपने पलकों में ओंघाई को आने दूं। जब लों परमेश्वर के लिये स्थान यअकूब के शक्तिमान के लिये निवास-स्थान न पाऊं तो ईश्वर बूझे। देखो हम ने इफ़राता में उस के बिषय में सुना हम ने उसे अरण्य के खेतों में पाया। हम उस के तंबुओं में आवें उस के पांव के नीचे की पीढ़ी को दण्डवत करें।

हे परमेश्वर अपने बिश्रामस्थान को उठ तू और तेरे पराक्रम की मञ्जूषा। तेरे याजक सच्चाई का बस्त्र पहिरे हों और तेरे साधु आनन्द का शब्द करें। अपने दास दाऊद के कारण सुन अपने अभिषिक्त के मुंह को न फिरा।

परमेश्वर ने सच्चाई के साथ दाऊद से किरिया खाई है और उस्से न फिरेगा कि मैं तेरी देह के फल से तेरे लिये सिंहासन पर बैठाऊंगा। यदि तेरे लड़के मेरी बाचा को पालन करेंगे और मेरी साक्षियों को जो मैं उन्हें सिखाऊंगा तो उन के लड़के भी सदा लों तेरे लिये सिंहासन पर बैठे रहेंगे। क्योंकि परमेश्वर ने सैहून को चुन लिया है और चाहा कि वह उस के लिये निवास हो। यह सदा लों मेरा बिश्रामस्थान है यहीं मैं बास करूंगा क्योंकि मैं ने उसे चाहा है। मैं उस के भोजन पर आशीष देऊंगा आशीष देऊंगा उस के कंगालों को रोटी से तृप्त करूंगा। और उस के याजकों को मुक्ति का बस्त्र पहिराऊंगा और उस के साधु आनन्द का शब्द करेंगे आनन्द का शब्द करेंगे। वहां मैं दाऊद के लिये सींग जमाऊंगा मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये दीपक सिद्ध किया है। मैं उस के बैरियों को लाज का बस्त्र पहिराऊंगा और उस पर उस का मुकुट खिला रहेगा।

एकसौ तेंतीसवां गीत।

यात्राओं का गान। दाऊद का।

देखो क्या ही भला और क्या ही मनोहर भाइयों का साथ साथ रहना है। उस तेल उस अच्छे तेल की नाईं है जो सिर पर और दाढ़ी अर्थात् हारून की दाढ़ी पर बहि जाता है जो उस के पहिरावे के खूंट लों बहि जाता है। हरमून की ओस की नाईं वह ओस है जो सैहून के पहाड़ों पर गिरती है क्योंकि

वहां परमेश्वर ने आशीष अर्थात् जीवन को सदा के लिये आज्ञा किया।

एकसौ चौंतीसवां गीत।

यात्राओं का गान।

देखो हे परमेश्वर के सारे सेवको जो रातों को परमेश्वर के घर में खड़े रहते हो परमेश्वर को धन्यबाद कहो। अपने हाथ धर्म्मधाम की ओर उठाओ और परमेश्वर को धन्यबाद कहो। परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी का बनानेहारा सैहून से तुझे आशीष दे।

एकसौ पैंतीसवां गीत।

हल्लिलूयाह। परमेश्वर के नाम की स्तुति करो हे परमेश्वर के सेवको उस की स्तुति करो। जो परमेश्वर के घर में हमारे ईश्वर के घर के आंगनों में खड़े रहते हो। हल्लिलूयाह। क्योंकि परमेश्वर भला है उस के नाम की स्तुति गाओ क्योंकि वह सुन्दर है। क्योंकि परमेश्वर ने यअ़कूब को चुन लिया इसराएल को अपने बिशेष अधिकार के लिये। क्योंकि मैं जानता हूं कि परमेश्वर महान है और हमारा प्रभु सारे देवों से श्रेष्ठ। जो कुछ परमेश्वर चाहता है वह सब स्वर्ग और पृथिवी में समुद्रों में और गहिराओं में करता है। पृथिवी की सीमों से भाफों को उठाता है मेंह के लिये उस ने बिजलियों को बनाया पवन को अपने भंडारों से निकालता है। जिस ने मिस्र के पहिलौठों को मनुष्य से लेके पशु लों मार डाला। लक्षण और आश्चर्य्य हे मिस्र तेरे मध्य फ़िरऊ़न और

उस के सारे सेवकों पर भेजे । जिस ने बहुत जातिगणों को मार डाला और पराक्रमी राजाओं को घात किया । अर्थात् अमूरियों के राजा सीहून को और बसनिया के राजा ऊज को और कनआन के सारे राज्यों को । और उन का देश अधिकार में अपने लोगों इसराएल को अधिकार में दिया ।

हे परमेश्वर तेरा नाम सर्बदा है हे परमेश्वर तेरा स्मरण पीढ़ी से पीढ़ी लों है । क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करेगा और अपने सेवकों के लिये पछतायेगा । अन्यदेशियों की मूर्त्ति रूपा और सोना हैं मनुष्य के हाथों की क्रिया । वे मुंह रखती हैं पर बोलती नहीं आंखें रखती हैं पर देखती नहीं । कान रखती हैं पर सुनती नहीं हां उन के मुंह में कुछ स्वास नहीं है । उन्हीं के समान उन के बनवैये होंगे और हर एक जो उन पर भरोसा रखता है ।

हे इसराएल के घराने परमेश्वर को धन्यबाद कहो हे हारून के घराने परमेश्वर को धन्यबाद कहो । हे लावी के घराने परमेश्वर को धन्यबाद कहो हे परमेश्वर के डरनेहारो परमेश्वर को धन्यबाद कहो । परमेश्वर जो यरूसलम में बास करता है सेहून से धन्य हो । हलिलूयाह ।

एकसौ छत्तीसवां गीत ।

परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वह भला है क्योंकि उस की दया सर्बदा है । ईश्वरों के ईश्वर का धन्य मानो क्योंकि उस की दया सर्बदा है ।

प्रभुओं के प्रभु का धन्य माना क्योंकि उस की दया सर्बदा है।

उस का जो अकेला आश्चर्य्य और बड़े काम करता है क्योंकि उस की दया सर्बदा है। उस का जिस ने स्वर्ग को बुद्धि के साथ बनाया क्योंकि उस की दया सर्बदा है। उस का जिस ने पृथिवी को पानी के ऊपर फैलाया क्योंकि उस की दया सर्बदा है। उस का जिस ने बड़ी बड़ी ज्योति बनाईं क्योंकि उस की दया सर्बदा है। सूर्य्य को दिन पर प्रभुता के लिये क्योंकि उस की दया सर्बदा है। चन्द्रमा और तारागण को रात पर प्रभुता के लिये क्योंकि उस की दया सर्बदा है।

उस का जिस ने मिस्र को उन के पहिलौठों की मृत्यु में मारा क्योंकि उस की दया सर्बदा है। और इसराएल को उन के मध्य से निकाल लाया क्योंकि उस की दया सर्बदा है। प्रबल हाथ और फैली हुई भुजा से क्योंकि उस की दया सर्बदा है। उस का जिस ने लाल समुद्र को दो भाग किया क्योंकि उस की दया सर्बदा है। और इसराएल को उस के मध्य से पार कर दिया क्योंकि उस की दया सर्बदा है। और फ़िरऊन और उस की सेना को लाल समुद्र में झाड़ डाला क्योंकि उस की दया सर्बदा है। उस का जिस ने अरण्य में अपने लोगों की अगुआई किई क्योंकि उस की दया सर्बदा है।

उस का जिस ने बड़े राजाओं को मार डाला

क्योंकि उस की दया सर्बदा है। और बलवान राजाओं को मार डाला क्योंकि उस की दया सर्बदा है। अमूरियों के राजा सीहून को क्योंकि उस की दया सर्बदा है। और ऊज बसनिये के राजा को क्योंकि उस की दया सर्बदा है। और उन की भूमि अधिकार के समान दिई क्योंकि उस की दया सर्बदा है। अपने सेवक इसराएल का अधिकार क्योंकि उस की दया सर्बदा है।

जिस ने हमारी दुर्दशा में हमें स्मरण किया क्योंकि उस की दया सर्बदा है। और हमें हमारे बैरियों से छीन लिया क्योंकि उस की दया सर्बदा है। जो सारे शरीर को भोजन देता है क्योंकि उस की दया सर्बदा है। स्वर्ग के सर्बशक्तिमान का धन्यबाद करो क्योंकि उस की दया सर्बदा है।

एकसौ सैंतीसवां गीत ।

बाबुल की नदियों पर वहां जब हम ने सैहून को स्मरण किया तो बैठे और रोये भी। बेत के बृक्षों पर उस के मध्य हम ने अपनी बीणों को लटका दिया। क्योंकि वहां हमारे बंधुआ करवैये गीतों के बचनों के और हमारे लूटनेहारे आनन्द के चाहक हुए कि हमारे लिये सैहून के गीतों से कुछ गाओ।

हम क्योंकर पराई भूमि पर परमेश्वर का गीत गावें। हे यरूसलम यदि मैं तुझे भूल जाऊं तो मेरा दहिना हाथ अपनी बुद्धि को भूल जाय। यदि मैं तुझे स्मरण न करूं यदि मैं यरूसलम को अपनी बड़ी से

बड़ी आनन्दता पर श्रेष्ठ न जानूं तो मेरी जीभ मेरे तालू से लग जाय।

हे परमेश्वर अदूम के सन्तान के दण्ड के लिये यरूसलम के दिन को स्मरण कर जो कहते थे कि उस की जड़ मूल लों उजाड़ करो उजाड़ करो। हे बाबुल की बेटी जो उजाड़ी गई क्या ही धन्य वह जो तुझे उस व्यवहार का पलटा देगा जो व्यवहार तू ने हमारे साथ किया। क्या ही धन्य वह जो तेरे बालकों को पकड़ लेगा और पत्थर पर पटकेगा।

एकसौ अठतीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

मैं अपने सारे मन से तेरी स्तुति करूंगा देवों के आगे तेरी स्तुति गाऊंगा। मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत करूंगा और तेरे नाम की स्तुति करूंगा तेरी दया और तेरी सत्यता के कारण क्योंकि तू ने अपने सारे नाम के ऊपर अपने बचन को अधिक बढ़ाया है। जिस दिन मैं ने पुकारा तू ने मेरी सुनी तू मुझे मेरे आत्मा में बल के साथ बलवन्त करता है। हे परमेश्वर पृथिवी के सारे राजा कि वे तेरे मुंह के बचन सुन चुके हैं तेरा स्वीकार करेंगे। और वे परमेश्वर के मार्गों में गायेंगे क्योंकि परमेश्वर का ऐश्वर्य्य महान होगा।

क्योंकि परमेश्वर महान है और नम्र को देखता है और अहङ्कारी को दूर से जानता है। यदि मैं सङ्कट के मध्य चलूं तो तू मुझे जीता रक्खेगा मेरे बैरियों के क्रोध के ऊपर अपना हाथ बढ़ावेगा और

अपने दहिने हाथ से मुझे बचावेगा । परमेश्वर ने जो मेरे लिये आरम्भ किया है उसे पूरा करेगा हे परमेश्वर तेरी दया सर्वदा है अपने हाथों की क्रिया को त्याग न कर ।

एकसौ उंतालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये। दाऊद का गीत।

हे परमेश्वर तू ने मेरा खोज किया और जानता है । तू ही मेरे बैठने और उठने को जानता है दूर से मेरी चिन्ता को बूझता है । तू मेरे मार्ग और मेरे शयन को जांचता है और मेरे सारे मार्गों को पहिचानता है । क्योंकि मेरी जीभ पर कोई ऐसी बात नहीं है देख जिसे हे परमेश्वर तू सर्वथा नहीं जानता। तू आगे पीछे मुझे घेरता है और अपना हाथ मुझ पर रखता है ।

यह ज्ञान मेरे लिये आश्चर्य्यित है और ऊंचा मैं उस लों नहीं पहुंच सक्ता । तेरे आत्मा से मैं किधर जाऊं और तेरे आगे से किधर भागूं । यदि स्वर्ग पर चढ़ जाऊं तो वहां तू है और समाधि को बिछौना बनाऊं देख तू वहां भी है । मैं बिहान के पंखों को फैलाऊंगा समुद्र के अन्त सिवाने में रहूंगा । वहां भी तेरा हाथ मेरी अगुआई करेगा और तेरा दहिना हाथ मुझे पकड़ेगा । और मैं कहता हूं कि केवल अंधियारा मुझे दबाये डालता है और उंजियाला मेरे आस पास रात हो गया । अंधियारा भी तुझ पर अंधियारी नहीं कर देता और रात दिन की नाईं

चमकती है जैसा अंधियारा वैसा उंजियाला। क्योंकि तू मेरे अन्तःकरण का स्वामी है मेरी माता की कोख में तू ने मुझे ढांप लिया। मैं तेरी स्तुति करता हूं क्योंकि मैं आश्चर्य्य रीति से बनाया गया हूं तेरे कार्य्य अद्भुत हैं और यह मेरा प्राण भली भांति जानता है। मेरा पिण्डा तुझ से छिपा न रहा जब मैं गुप्त में बनाया गया पृथिवी की नीचाई में बिना गया। तेरी आंखों ने मेरे अधूरे मूल को देखा और तेरी बही में मेरे सब दिन लिखे जाते चित्रकारी हो जाते थे यद्यपि उन में से एक भी भाववान न था।

और हे सर्वशक्तिमान मेरे निकट तेरे सङ्कल्प क्या ही बहुमूल्य हैं उन का समुदाय क्या ही बड़ा है। मैं उन्हें गिन्ने चाहता हूं पर वे बालू से कहीं अधिक हैं मैं जागा और अब लों तेरे साथ हूं।

हे ईश्वर हाय कि तू दुष्ट को नाश करे और हे हत्यारे मनुष्यो मेरे पास से दूर हो। जो दुष्टता के लिये तेरा स्मरण करते हैं और तेरे बैरी तेरा नाम झूठ पर लगाते हैं। हे परमेश्वर क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रक्खूं और तेरे बिरोधियों से घिन न करूं। अत्यन्त बैर के साथ मैं उन से बैर रखता हूं वे मेरे निकट बैरी समान हैं। हे सर्वशक्तिमान मेरा खोज कर और मेरे अन्तःकरण को जान मुझे ताड़ और मेरी चिन्ताओं को जान। और देख यदि मुझ में दुख का मार्ग है और सनातन के मार्ग पर मेरी अगुआई कर।

एकसौ चालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये । दाऊद का गीत ।

हे परमेश्वर मुझे दुष्ट मनुष्य से छुड़ा अन्धेरी मनुष्य
से तू मेरी रक्षा करेगा । जो मन में बुराइयों की
चिन्ता करते हैं वे नित लड़ाइयों के लिये एकट्ठा होते
हैं । उन्हों ने सांप की नाईं अपनी जीभ को चोखा
किया है नाग का बिष उन के होंठों के नीचे है ।
सिलाह । हे परमेश्वर मुझे दुष्ट के हाथों से बचा
अन्धेरी मनुष्य से तू मेरी रक्षा करेगा जिन्हों ने मेरे
पाओं को ढा देने की चिन्ता किई है । अहङ्कारियों
ने मेरे लिये फंदा और रस्सियां छिपाई हैं उन्हों ने
मार्ग की ओर जाल बिछाया है उन्हों ने मेरे लिये
फंदे लगाये हैं । सिलाह ।

मैं ने परमेश्वर से कहा है कि मेरा सर्बशक्तिमान
तू ही है हे परमेश्वर मेरी बिनतियों के शब्द पर कान
धर । हे परमेश्वर प्रभु मेरी मुक्ति के पराक्रम तू ने
सङ्ग्राम के दिन मेरे सिर को ढांपा है । हे परमेश्वर
दुष्ट की इच्छाओं को पूरी न कर उस की युक्ति को
पूरा न कर नहीं तो वे ऊंचे होंगे । सिलाह ।

मेरे घेरनेहारों के सिर को उन के होंठों की बुराई
१० ढांपेगी । उन पर अंगारे डाले जायेंगे वह उन्हें आग
में गिरायेगा और गहिरे पानियों में जहां से वे न
११ उठेंगे । कुवक्ता मनुष्य पृथिवी पर स्थिर न रहेगा और
न अन्धेरी जन वह दुष्ट को बिनाश लों अहेर
१२ करेगा । मैं जानता हूं कि परमेश्वर दुखी का न्याय

ओर दरिद्रों का बिचार करेगा । केवल धर्म्मी तेरे नाम का धन्य मानेंगे खरे जन तेरे आगे बैठेंगे ।

एकसौ एकतालीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

हे परमेश्वर मैं तुझे पुकारता हूं मेरी ओर शीघ्रता कर जब मैं तुझे पुकारूं तब मेरे शब्द पर कान धर। मेरी प्रार्थना सुगन्ध की नाईं तेरे आगे उपस्थित हो मेरे हाथों का उठाना सांझ की भेंट की नाईं। हे परमेश्वर मेरे मुंह पर पहरू बैठा मेरे होंठों के द्वार की रक्षा कर। मेरे मन को बुरी बात की ओर न झुकने दे कि कुकर्म्मियों के संग दुष्ट कर्म्म करूं उन मनुष्यों के संग जो बुराई करते हैं और मैं उन के स्वादित भोजनों में से न खाऊं। धर्म्मी ईश्वर मुझे कृपा के संग मारे और दपटे मेरा सिर सिर के तेल से नाह न करे क्योंकि वह फिर अवश्य होगा और मेरी प्रार्थना उन की बुराइयों के मध्य फिर किई जायेगी।

उन के न्यायी पत्थर के हाथों में गिराये गये तब उन्हों ने मेरी बातें सुनीं कि वे मीठी हैं। जैसा मनुष्य पृथिवी को हर से जोतता और चीरता है वैसा ही हमारी हड्डियां समाधि के मुंह पर बिथराई गईं। क्योंकि हे परमेश्वर प्रभु मेरी आंखें तेरी ओर हैं मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मेरे प्राण को न उंडेल। उस फंदे के हाथों से जो उन्हों ने मेरे लिये बनाया है और कुकर्म्मियों के जालों से मुझे बचा

रख । दुष्ट अपने फंदों में गिरें जिस समय कि मैं बच जाऊं ।

एकसौ बयालीसवां गीत ।

दाऊद का उपदेशदायक गीत जब वह खोह में था ।

प्रार्थना ।

मैं अपने शब्द से परमेश्वर को पुकारता हूं अपने शब्द से परमेश्वर से बिन्ती करता हूं । मैं अपना सोच उस के आगे प्रगट करता हूं अपना दुख उस्से बर्णन करता हूं । इस कारण कि मेरा प्राण मेरे भीतर व्याकुल है और तू मेरे मार्ग को जानता है उस मार्ग में जिस में मैं चलता हूं उन्हों ने मेरे लिये छिपाके फंदा लगाया है । दहिनी ओर ताक और देख कि मेरा पहिचान्नेहारा नहीं है शरण मुझ से जाता रहा कोई मेरे प्राण का पुछवैया नहीं । हे परमेश्वर मैं ने तुझ को पुकारा है मैं ने कहा कि तू ही मेरा शरणस्थान है जीवन के देश में मेरा भाग । मेरे रोने पर सुरत लगा क्योंकि मैं बहुत दुर्बल हो गया मुझे मेरे सतानेहारों से छुड़ा क्योंकि वे मुझ से बली हैं । मेरे प्राण को बन्दीगृह से छुड़ा जिसतें तेरे नाम की स्तुति किई जाय धर्म्मी मुझे घेरेंगे जब तू मुझ पर कृपा का व्यवहार करेगा ।

एकसौ तेंतालीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ।

हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन मेरी बिन्तियों पर कान रख अपनी सच्चाई के साथ मेरी सुन और अपने

धर्म्म के साथ। और अपने सेवक के संग लड़ने के लिये बिचार में मत आ क्योंकि तेरे सन्मुख कोई प्राणी निर्दोष न ठहरेगा।

क्योंकि बैरी मेरे प्राण के पीछे पड़ा है मेरे जीवन को भूमि लों लताड़ता है मुझे अगिले मृतकों की नाईं अंधियारे स्थानों में बैठाता है। और मेरा प्राण मुझ में मूर्च्छित है मेरा मन मुझ में उजड़ गया। मैं अगिले दिनों को स्मरण करता हूं तेरे सारे कार्य्यों पर सोच करता हूं तेरे हाथ की रचना पर ध्यान करता हूं। मैं अपने हाथ तेरी ओर फैलाता हूं मेरा प्राण सूखी भूमि की नाईं तेरा प्यासा है। सिलाह।

हे परमेश्वर शीघ्रता कर मेरी सुन मेरा प्राण क्षीण हो गया अपना मुंह मुझ से मत छिपा नहीं तो मैं गड़हे में गिरनेहारों के साथ मिलाया जाऊंगा। बिहान को मुझे अपनी दया सुना क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूं मुझे वह मार्ग बता जिस पर चलूं क्योंकि मैं अपना प्राण तेरी ओर उठाता हूं। हे परमेश्वर मुझे मेरे बैरियों से छुड़ा मैं तेरे पास अपने को छिपाता हूं। मुझे सिखला कि तेरी इच्छा के समान करूं क्योंकि तू ही मेरा ईश्वर है तेरा आत्मा भला है वह मुझे समथर भूमि पर अगुआई करे। हे परमेश्वर तू अपने नाम के लिये मुझे जिलावेगा तू अपने धर्म्म के साथ मेरे प्राण को सकेती से निकालेगा। और तू अपनी दया के साथ मेरे बैरियों

को नाश करेगा और मेरे प्राण के दुख देनेहारों को नाश करेगा क्योंकि मैं तेरा सेवक हूं ।

एकसौ चौंतालीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ।

परमेश्वर मेरी चटान धन्य हो जो मेरे हाथों को युद्ध करना मेरी अंगुलियों को लड़ना सिखलाता है। मेरा अनुग्रह करनेहारा और मेरा गढ़ मेरा ऊंचा स्थान और मेरा छुड़ानेवाला मेरी ढाल और मैं उस पर भरोसा रखता हूं जो मेरे लोगों को मेरे नीचे करता है ।

हे परमेश्वर मनुष्य क्या है कि तू उसे जाने मनुष्य का पुत्र कि तू उस का सोच करे । मनुष्य व्यर्थ बस्तु की नाईं है उस के दिन बीतते हुए छाये के समान हैं।

हे परमेश्वर अपने स्वर्गों को झुका और नीचे आ पहाड़ों को छू और उन से धूआं उठे । बिजुली गिरा और उन्हें बिथरा अपने बाण चला और उन्हें घबरा दे । अपने हाथ ऊपर से बढ़ा मुझे बचा और मुझे छुड़ा बहुत पानियों से परदेशी सन्तानों के हाथ से। जिन का मुंह बृथा कहता है और उन का दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है।

हे ईश्वर मैं तेरे लिये नया गीत गाऊंगा दसतार के बीन के साथ तेरे लिये गाऊंगा । जो राजाओं को मुक्ति देता है जो दाऊद अपने दास को दुखदायक की तलवार से छुड़ाता है । मुझे बचा और मुझे छुड़ा परदेशियों के बंश के हाथ से जिन का मुंह बृथा

कहता है और उन का दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है । जिस्तें हमारे बेटे पौधों की नाईं अपनी तरुणाई में बढ़े हों हमारी बेटियां कोने के पत्थरों की नाईं मन्दिर की बनावट के लिये खोदी जायें । हमारे खत्ते पूर्ण नाना प्रकार का अनाज देते हों हमारी भेड़ें हमारे खेतों में लखूखा सहस्र जनती रहें। हमारे बैल लदे हुए हों और कुछ हानि और बिगाड़ न हो और हमारे मार्गों में कुछ बिलाप न हो । क्या ही धन्य वे लोग जिन की यह दशा है क्या ही धन्य वे लोग जिन का ईश्वर परमेश्वर है ।

एकसौ पैंतालीसवां गीत ।

दाऊद की स्तुति ।

हे मेरे ईश्वर राजा मैं तेरी बड़ाई करूंगा और मैं सदा सर्बदा तेरे नाम का धन्यबाद करूंगा । मैं प्रतिदिन तेरा धन्यबाद करूंगा और सदा सर्बदा तेरे नाम की स्तुति करूंगा। परमेश्वर महान और अत्यन्त स्तुति के योग्य है और उस की महिमा खोज से बाहर । एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से तेरे कार्य्यों की स्तुति करती रहेगी और लोग तेरे महत कार्य्यों को बर्णन किया करेंगे । मैं तेरी महिमा की बिभवमय सुन्दरता पर और तेरे आश्चर्य्यकार्य्यों की बातों पर सोच किया करूंगा । और वे तेरे भयङ्कर कार्य्यों के बल की चर्चा करेंगे और मैं तेरी बड़ाइयों का बर्णन करूंगा । वे तेरी अत्यन्त भलाई का चर्चा किया करेंगे और तेरी सच्चाई पर गान करेंगे ।

परमेश्वर कृपालु और दयालु है धैर्य्यवान और दया में बड़ा। परमेश्वर सब के लिये भला है और उस की दया उस के सारे कार्य्यों पर हैं। हे परमेश्वर तेरी सारी क्रिया तेरी स्तुति करती हैं और तेरे साधु तेरा धन्यबाद करते हैं। वे तेरे राज्य के ऐश्वर्य्य की चर्चा करते हैं और तेरे सामर्थ्य की बातें करते हैं। जिसतें मनुष्य के सन्तान को उस के महान कार्य्यों का और उस के राज्य की सुन्दरता के बिभव का ज्ञान दें। तेरा राज्य सनातन का राज्य है और तेरी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी लों।

परमेश्वर सारे गिरवैयों का थामनेहारा और सारे झुके हुओं का उठानेहारा है। सभों की आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं और तू समय पर उन्हें उन का भोजन देता है। तू अपनी मुट्ठी खोलता है और हर एक जीवधारी को उस की इच्छा से सन्तुष्ट करता है। परमेश्वर अपने सारे मार्गों में धर्म्मी और अपने सब कार्य्यों में दयालु है।

परमेश्वर अपने सारे पुकारनेहारों के निकट है सभों के निकट जो सच्चाई के साथ उसे पुकारते हैं। वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करेगा और उन की दोहाई सुनेगा और उन्हें बचावेगा। परमेश्वर अपने सारे प्रेमियों का रक्षक है और सारे दुष्टों को नाश करेगा। मेरा मुंह परमेश्वर की स्तुति की बातें करेगा और सारे प्राणी सदा सर्बदा उस के पवित्र नाम को धन्यबाद कहा करेंगे।

एकसौ छियालीसवां गीत ।

हल्लिलूयाह । हे मेरे प्राण परमेश्वर की स्तुति कर । मैं जब लों जीता रहूंगा परमेश्वर की स्तुति करूंगा अपने अस्ति रहने लों अपने ईश्वर के लिये मैं गाऊंगा । अध्यक्षों पर भरोसा न करो मनुष्य के सन्तान पर जिस्से छुटकारा कुछ नहीं। उस का स्वास निकल जाता है वह अपनी मिट्टी में फिर जाता है उसी दिन उस की चिन्ता नाश हो जाती हैं ।

क्या ही धन्य वह जिस का उपकारक यअ़कूब का सर्बशक्तिमान है और उस का भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर है । जिस ने स्वर्ग और पृथिवी समुद्र और जो कुछ उन में है सब बनाया जो सदा सर्बदा सच्चाई का रक्षक है । जो सताये हुओं के लिये बिचार करता है भूखों को रोटी देता है परमेश्वर बंधुओं को खोल देता है ।

परमेश्वर अन्धों की आंखें खोल देता है परमेश्वर झुके हुओं को उठाता है परमेश्वर धर्म्मियों को प्यार करता है । परमेश्वर परदेशियों का रखवाल है अनाथ और रांड़ को संभालता है और दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा करता है । परमेश्वर सनातन लों राज्य करेगा तेरा ईश्वर हे सैहून पीढ़ी से पीढ़ी लों । हल्लिलूयाह ।

एकसौ सैंतालीसवां गीत ।

हल्लिलूयाह । क्योंकि हमारे ईश्वर के लिये स्तुति गाना भला है क्योंकि वह मनोहर है और स्तुति करना सुन्दर है । परमेश्वर यरूसलम को बनाता

है इसराएल के बिछुरे हुओं को एकट्ठा करता है। जो चूर्ण अन्तःकरणियों को चंगा करता है और उन के घावों को बांधता है। जो तारों की गिनती बतलाता है वह उन सभों को नाम ले ले बुलाता है। हमारा प्रभु महान है और महासामर्थ्य रखता है और उस की समुझ अगणित। परमेश्वर दीनों को उठाता है दुष्टों को भूमि पर दे मारता है।

परमेश्वर को धन्यबाद के संग उत्तर दो हमारे ईश्वर के लिये बीणा के संग गाओ। जो स्वर्ग को मेघों से ढांपता है जो पृथिवी के लिये मेंह सिद्ध करता है जो पहाड़ों पर घास उगाता है। जो पशु को उस का अहार देता है कौवे के बच्चों को जो चिल्लाते हैं। वह घोड़े के बल से आनन्दित नहीं है पुरुष की पिंडुलियों से प्रसन्न नहीं है। परमेश्वर अपने डरवैयों से प्रसन्न है उन से जो उस की दया के आश्रित हैं।

हे यरूसलम परमेश्वर की स्तुति कर हे सैहून अपने ईश्वर की स्तुति कर। क्योंकि उस ने तेरे फाटकों के अड़ंगों को दृढ़ किया है तेरे मध्य तेरे बालकों को आशीर्बाद दिया है। जो तेरे सिवानों को चैन ठहराता है तुझे गेहूं की चिकनाई से तृप्त करता है। जो अपनी आज्ञा पृथिवी पर भेजता है उस का वचन बहुत शीघ्र दौड़ा जाता है। जो हिम ऊन के नाईं देता है वह पाला राख की नाईं बियराता है। जो ग्रास की नाईं अपना तुषार फेंकता है उस की शीत के आगे कौन खड़ा हो सक्ता है। वह अपना

बचन भेजता है और उन्हें पिघलाता है वह अपनी पवन चलाता है पानी बह जाता है। वह अपना बचन यअकूब से बर्णन करता है अपनी बिधि और अपने न्याय इसराएल से। उस ने किसी जातिगण से ऐसा नहीं किया है और वे उस के न्यायों को नहीं जानते हैं। हलिलूयाह।

एकसौ अठतालीसवां गीत।

हलिलूयाह। स्वर्गों से परमेश्वर की स्तुति करो ऊंचाइयों पर उस की स्तुति करो। हे उस के सारे दूतो उस की स्तुति करो हे उस की सारी सेनाओ उस की स्तुति करो। हे सूर्य्य और चांद उस की स्तुति करो हे सारे ज्योतिमय तारो उस की स्तुति करो। हे स्वर्गों के स्वर्गो और हे पानियो जो स्वर्ग के ऊपर हो उस की स्तुति करो। वे परमेश्वर के नाम की स्तुति करें क्योंकि उसी ने आज्ञा किई और वे उत्पन्न हुए। और उन्हें सनातन के लिये स्थिर किया उस ने सीमा ठहराई और वे उस के पार नहीं जा सक्ते।

पृथिवी पर से परमेश्वर की स्तुति करो हे बड़ी मछलियो और सारी गहिराइयो। आग और ओले हिम और कुहिरे बड़ी आंधी जो उस के बचन का पालन करती है। पहाड़ो और सब पहाड़ियो फलवान पेड़ और सारे देवदारुओ। बनपशु और सारे चौपाये रेंगवैये और उड़नेवाले पक्षी। पृथिवी के राजाओ और सारे लोगो अध्यक्षो और पृथिवी के

सारे न्याइयो । तरुणो और कुंवारियो भी बृद्धो बालकों समेत । ये सब परमेश्वर के नाम की स्तुति करें क्योंकि उस का नाम अकेला श्रेष्ठ है उस का ऐश्वर्य्य पृथिवी और स्वर्ग के ऊपर है । और उस ने अपने लोगों के लिये एक सींग अपने सारे सिद्धों के लिये स्तुति ऊंची किई है अर्थात् इसराएल के सन्तान अपने समीपी लोगों के लिये । हलिलूयाह ।

एकसौ उंचासवां गीत ।

हलिलूयाह । परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ और उस की स्तुति उस के सिद्धों की सभा में । इसराएल अपने सृष्टिकर्त्ता से आनन्दित हो सैहून के बंश अपने राजा से मगन हों । वे नाच में उस के नाम की स्तुति करें तबले और बीणा के साथ उस के लिये गान करें । क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों से प्रसन्न है वह दीनों को मुक्ति से बिभूषित करता है ।

सिद्ध लोग प्रतिष्ठा में आनन्दता से बजायें अपने बिछौनों पर आनन्द के शब्द करें । सर्बशक्तिमान की बड़ी स्तुतें उन के मुंह में हों और दोधारा खड्ग उन के हाथ में । जिसतें जातिगणों में पलटा और लोगों में दण्ड चलावें । जिसतें उन के राजाओं को सीकरों से और उन के अध्यक्षों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ें । जिसतें लिखा हुआ बिचार उन पर करें वही बिचार उस के सारे सिद्धों के लिये प्रतिष्ठा है । हलिलूयाह ।

एकसौ पचासवां गीत ।

हलिलूयाह । सर्बशक्तिमान की स्तुति उस के

धर्म्मधाम में करो उस के सामर्थ्य के आकाश में उस की स्तुति करो। उस के महत कार्य्यों के लिये उस की स्तुति करो उस की महिमा की उत्तमता के समान उस की स्तुति करो। तुरही के शब्द के साथ उस की स्तुति करो बीणा और बरबत के साथ उस की स्तुति करो। तबले और नाच के साथ उस की स्तुति करो तार और बांसुरी के साथ उस की स्तुति करो। बड़े शब्द की झांझों के साथ उस की स्तुति करो आनन्द के शब्द की झांझों के साथ उस की स्तुति करो। हर एक स्वासधारी परमेश्वर की स्तुति करे। हलिलूयाह।

Proverbs

सुलेमान के दृष्टान्त।

पहिला पर्ब्ब।

दाऊद के बेटे इसराएल के राजा सुलेमान के दृष्टान्त। बुद्धि और उपदेश जान्ने को और समुझ की बातें बूझने को। बुद्धि धर्म्म और बिचार और खराई का उपदेश ग्रहण करने को। भोलों को चतुराई और तरुण को ज्ञान और समुझ देने को। बुद्धिमान सुनके बिद्या बढ़ावेगा और समुझवैया बुद्धि का मंत्र प्राप्त करेगा। जिसतें दृष्टान्त और उस के अर्थ और बुद्धिमान की बातें और उन की गुप्त कहावतें को समझे।

परमेश्वर का डर ज्ञान का आरम्भ है परन्तु मूढ़ लोग बुद्धि और उपदेश की निन्दा करते हैं। हे मेरे बेटे अपने पिता के उपदेश को सुन और अपनी माता की आज्ञा को त्याग मत कर। क्योंकि वे तेरे सिर के लिये अनुग्रह का मुकुट और तेरे गले की सीकरें होंगे।

हे मेरे बेटे यदि पापी तुझे फुसलावें तो मत मान। यदि वे कहें कि हमारे संग आ हम रक्तपात के लिये घात में लगें और अकारण निर्दोष के लिये छिपके बैठें। हम पाताल की नाईं उन्हें जीता और उन की नाईं जो गढ़हे में गिरते हैं समूचा निगल जायें। हमें सब बहुमूल्य सम्पत्ति मिलेगी लूट से हम अपना घर भरेंगे। तेरा भाग हमारे मध्य में गिरे एक ही थैली

हम सभों के लिये हो। हे मेरे बेटे तू मार्ग में उन के साथ मत चल उन के पथ से अपने पावों को रोके रह। क्योंकि उन के पांव बुराई पर दौड़ते हैं और लोहू बहाने में शीघ्रता करते हैं। क्योंकि पंछी की दृष्टि में जाल बिछाना बृथा है। और वे अपने लोहू के लिये ढूके में हैं वे अपने प्राणों के लिये घात में हैं। हर एक जो धन का लोभी है उस की चालें ऐसी ही हैं कि वह अपने स्वामियों के प्राण को ले लेता है।

बुद्धि बाहर खड़ी पुकारती है वह सड़कों में अपना शब्द करती है। वह सभास्थान में फाटकों के निकास में पुकारती है नगर में वह अपने बचन उच्चारती है। हे भोले लोगो कब लों भोलेपन से प्रीति रक्खोगे और निन्दक अपनी निन्दा में आनन्द करेंगे और मूढ़ ज्ञान से बैर रक्खेंगे। मेरी दपट से फिरो देखो मैं अपने आत्मा को तुम पर डालूंगा मैं अपने बचन तुम्हें जनाऊंगा।

इस कारण कि मैं ने बुलाया पर तुम ने नाह किया मैं ने अपना हाथ बढ़ाया पर किसी ने न माना। पर तुम ने मेरे समस्त मंत्र को तुच्छ जाना और मेरी दपट को न माना। मैं भी तुम्हारी बिपत्ति पर हंसूंगा जब तुम पर भय आवेगा मैं ठट्ठे मारूंगा। जब तुम्हारा भय उजाड़ की नाईं आवेगा और तुम्हारा बिनाश बवंडर की नाईं आ जायेगा जब कष्ट और दुख तुम पर पड़ेगा। तब वे मुझे पुकारेंगे परन्तु मैं उत्तर न देऊंगा वे मुझे तड़के ढूंढ़ेंगे परन्तु मुझे न

२९ पावेंगे । इस लिये कि उन्हों ने ज्ञान से बैर रक्खा
३० और परमेश्वर का भय न चुना । उन्हों ने मेरे मंत्र
को न माना उन्हों ने मेरी सारी दपट की निन्दा
३१ किई । सो वे अपनी ही चाल का फल खावेंगे और
३२ अपनी ही भावनाओं से पूर्ण होवेंगे । क्योंकि भोलों
का भटकना उन्हें नाश करेगा और भकुओं की भाग्य-
३३ वानी उन्हें नाश करेगी । परन्तु जो मेरी सुनता है
सो चैन से रहेगा और बुराई के भय से बचा रहेगा ।

दूसरा पर्ब्ब ।

हे मेरे बेटे यदि तू मेरे बचनों को मानेगा और मेरी आज्ञाओं को अपने पास छिपा रक्खेगा । कि तू अपने कान को बुद्धि की ओर झुकावे और समझ
३ की ओर अपना मन लगावे । क्योंकि यदि तू ज्ञान
के लिये पुकारेगा और समझ के लिये अपना शब्द
४ बढ़ावेगा । यदि तू चांदी की नाईं उसे खोजेगा और
५ छिपे हुए धन की नाईं उसे ढूंढ़ेगा । तब तू परमेश्वर
के भय को समझेगा और ईश्वर के ज्ञान को पावेगा ।
६ क्योंकि परमेश्वर बुद्धि देता है उस के मुंह से
७ ज्ञान और समझ है । वह धर्म्मियों के लिये चोखी
बुद्धि धर रखता है वह उन के लिये जो खराई से
८ चलते हैं एक ढाल है । जिसतें बिचार के पथों की रक्षा
करे और वह अपने साधुओं के मार्ग की चौकसी
९ करता है । तब तू ठीक धर्म्म और बिचार और खराई
हां हर एक अच्छे पथ को समझेगा ।
१० जब बुद्धि तेरे मन में प्रवेश करेगी और ज्ञान तेरे

जीव को अच्छा लगेगा। तब सोच तेरी रक्षा करेगा और समुझ तेरी रखवाली करेगी। जिसतें तुझे दुष्ट के मार्ग से और उस मनुष्य से जो छल की बातें करता है बचावे। उन से जो खराई के पथ को छोड़ देते हैं जिसतें अंधियारे मार्गों पर चलें। जो बुराई करने से आनन्दित होते हैं और दुष्ट के छल से मगन होते हैं। जिन की चालें टेढ़ी हैं और वे अपने पथों में तिरछे हैं। कि तुझे परस्त्री से बचावे उस उपरी स्त्री से जो अपने बचन से फुसलाती है। जो अपनी तरुणाई के मित्र को त्याग करती है और अपने ईश्वर की बाचा को बिसराती है। क्योंकि उस का घर मृत्यु की ओर और उस के मार्ग मृतकों की ओर झुके हैं। कोई उन में से जो उस पास गये सो फिर नहीं लौटे और वे जीवन के मार्गों को नहीं पहुंचे। जिसतें तू भलों के मार्ग पर चले और धर्म्मियों के पथों को धरे रहे। क्योंकि खरे देश में बसेंगे और सिद्ध उस में बने रहेंगे। परन्तु दुष्ट पृथिवी पर से काट डाले जायेंगे और धोखा देनेहारे उस्से उखाड़े जायेंगे।

तीसरा पर्ब्ब।

हे मेरे बेटे मेरी व्यवस्था को मत भूल परन्तु तेरा मन मेरी आज्ञाओं को पालन करे। क्योंकि दिनों की बढ़ती और जीवन के बरस और कुशल वे तुझे बढ़ायेंगे। दया और सत्यता तुझे त्याग न करें उन्हें अपने गले में लपेट उन्हें अपने मन की पटिया पर लिख। और ईश्वर और मनुष्य की दृष्टि में अनुग्रह और अच्छा ज्ञान पा।

अपने सारे मन से परमेश्वर पर भरोसा रख और अपनी ही समुझ पर आसा न कर । अपने सारे मार्गों में उस को पहिचान और वह तेरे पथों को सुधारेगा । अपनी दृष्टि में बुद्धिमान मत हो परमेश्वर से डर और बुराई से अलग हो । यह तेरी नाभी के लिये आरोग्यता और तेरी हड्डियों के लिये तरावट होगी ।

अपनी सम्पत्ति में से और अपनी सारी बढ़ती के पहिले फल से परमेश्वर की प्रतिष्ठा कर । तो तेरे खत्ते बहुताई से भर जायेंगे और तेरे कोल्हू नई मदिरा से फूट निकलेंगे ।

हे मेरे बेटे परमेश्वर की ताड़ना की निन्दा मत कर और उस के दण्ड से थक मत जा । क्योंकि परमेश्वर जिसे प्यार करता है उसे ताड़ना करता है जिस रीति बाप उस पुत्र को जिस्से वह प्रसन्न है ।

क्या ही धन्य वह मनुष्य जिस ने बुद्धि को पाया और वह मनुष्य जिस ने समुझ को प्राप्त किया है । क्योंकि उस का ब्योपार चांदी के ब्योपार से और उस का लाभ चोखे सोने के लाभ से अच्छा है । वह रत्नों से बहुमूल्य है और समस्त बस्तु जिन की तू लालसा कर सक्ता है उस के तुल्य नहीं । दिनों की बढ़ती उस के दहिने हाथ है धन और प्रतिष्ठा उस के बाएं में है । उस के मार्ग आनन्दता के मार्ग हैं और उस के समस्त पथ कुशल हैं । वह उन के लिये जो उसे ग्रहण करते हैं जीवन का बृक्ष है हर एक जो उसे थामता है धन्य

है। परमेश्वर ने बुद्धि से पृथिवी की नेंव डाली समझ से स्वर्ग को स्थिर किया। उस के ज्ञान से गहिराइयां फूट निकली हैं और मेघों से ओस टपकती है।

हे मेरे बेटे उन्हें अपनी आंखों से अलग मत होने दे बुद्धि और सोच को धर रख। सो वे तेरे प्राण के लिये जीवन और तेरे गले के लिये अनुग्रह होंगे। तब तू अपने मार्ग में कुशल से चलेगा और तेरा पांव ठोकर न खायेगा। जब तू लेट जायेगा तब न डरेगा हां तू लेट जायेगा और तेरी निद्रा मीठी होगी। अचानक भय से और दुष्टों के उजाड़ से जब वह आता है मत डर। क्योंकि परमेश्वर तेरा भरोसा होगा और तेरे पांव की रक्षा करेगा कि फन्दे में न पड़े।

भलाई उन से जो भलाई के योग्य हैं अलग मत रख जब कि तेरे हाथ में करने को सामर्थ्य हो। जब तेरे पास हो तो अपने परोसी को यह मत कह कि जा फिर आइयो और मैं कल देऊंगा। अपने परोसी से बुरा व्यवहार मत कर जब वह चैन से तेरे पास रहता है।

किसी मनुष्य से अकारण मत झगड़ यदि उस ने तुझ से कुछ खोटाई न किई हो।

अन्धेरी से डाह मत कर और उस के सारे मार्गों को मत चुन। क्योंकि द्रोही से परमेश्वर को घिन है परन्तु उस की मित्रता धर्म्मियों से है। परमेश्वर का स्राप दुष्ट के घर पर है परन्तु धर्म्मियों के निवास

पर वह आशीष देगा। निश्चय वह निन्दकों की निन्दा करता है पर दीनों पर दया करता है। बुद्धिमान बिभव के अधिकारी होंगे परन्तु मूढ़ों की बढ़ती लाज होगी।

चौथा पर्ब्ब ।

हे बालको पिता के उपदेश को सुनो और ज्ञान के प्राप्त करने पर ध्यान रक्खो। क्योंकि मैं तुम्हें अच्छा उपदेश देता हूं तुम मेरी ब्यवस्था को त्याग मत करो। क्योंकि मैं अपने पिता का बेटा था अपनी माता का एकलौता लाड़ला। उस ने भी मुझे सिखलाया और मुझ से कहा कि मेरे बचन तेरे मन में धरे रहें मेरी आज्ञाओं को पालन कर और जीता रह।

बुद्धि को प्राप्त कर समुझ को प्राप्त कर उसे न भूल और मेरे मुंह की बातों से मुंह मत फेर। उसे त्याग मत कर और वह तेरी रक्षा करेगी उसे प्यार कर और वह तुझे बचावेगी। बुद्धि सब से मूल वस्तु है बुद्धि को प्राप्त कर और अपनी समस्त सामर्थ्य से समुझ प्राप्त कर। तू उस की प्रतिष्ठा कर और वह तुझे बढ़ावेगी वह तुझे प्रतिष्ठा देगी जब तू उसे गोद में लेगा। वह तेरे सिर पर अनुग्रह का आभूषण रक्खेगी वह तुझे बिभव का मुकुट देगी। हे मेरे बेटे सुन और मेरी बातों को ग्रहण कर और तेरे जीवन के बरस बहुत होंगे। मैं ने बुद्धि के मार्ग में तेरी अगुआई किई ठीक पथों में तुझे चलाया है। जब तू चलेगा तब तेरे डग सकेत न होंगे और जब तू दौड़ेगा तब तू ठोकर न खायेगा। उपदेश को दृढ़ता

से धर रख उसे जाने मत दे उसे रख छोड़ क्योंकि वह तेरा जीवन है।

दुष्टों के पथ में मत पैठ और बुरों के मार्ग में मत जा। उसे छोड़ दे उस पर मत चल उधर से फिर और निकल जा। क्योंकि जब लों वे बुराई न कर लेवें तब लों सोते नहीं और जब लों किसी को गिरा न देवें तब लों उन्हें नींद नहीं आती। क्योंकि वे दुष्टता की रोटी खाते हैं और अन्धेर की मदिरा पीते हैं। परन्तु धर्म्मियों की चाल उस चमकती ज्योति के समान है जो मध्यान्ह लों चमकती चली जाती है। दुष्टों का मार्ग अंधेरे के समान है वे नहीं जानते हैं कि किस्से ठोकर खायेंगे। हे मेरे बेटे मेरी बातों पर ध्यान रख और मेरी कहावतों पर अपना कान झुका। उन्हें अपनी दृष्टि से जाने मत दे उन्हें अपने अन्तःकरण में धारण कर। क्योंकि वे उन के लिये जो उन्हें प्राप्त करते हैं जीवन और उन के सारे शरीर के लिये आरोग्यता हैं। अपने अन्तःकरण को समस्त धारणा से धारणा कर क्योंकि जीवन की धारें उसी से हैं। मुंह के हठ को अपने से अलग कर और होंठों की टेढ़ाई अपने पास से दूर रख। तेरी आंखें आगे देखा करें और तेरी पलकें तेरे साम्हने देखें। अपने पांव के पथ को तौल तो तेरे सारे मार्ग ठीक किये जायेंगे। न दहिने न बायें हाथ को मुड़ अपने पांव को बुराई से हटा।

पांचवां पर्ब्ब।

हे मेरे बेटे मेरी बुद्धि पर ध्यान रख और मेरे

समुझ की ओर अपना कान धर । जिसतें तू सोचे और तेरे होंठ ज्ञान को धारण करें ।

क्योंकि परस्त्री के होंठ मधु के समान टपकते हैं और उस का तालू तेल से अधिक चिकना है । पर उस का अन्त नागदौना की नाईं कड़ुवा है दोधारे खड्ग की नाईं चोखा । उस के पांव मृत्यु में उतरते हैं उस की डग पाताल को धारण करती हैं । जिसतें न हो कि तू जीवन के पथ को तौले उस के मार्ग चलायमान हैं कि तू उन्हें न जाने । सो अब हे बालको मेरी सुनो और मेरे मुंह के बचन से अलग मत हो । अपना मार्ग उस्से दूर बना और उस के घर के द्वार के पास मत जा । ऐसा न होवे कि तू अपनी प्रतिष्ठा औरों को और अपने बरस क्रूर को देवे । न होवे कि पराये लोग तेरे बल से पूर्ण होवें और तेरा सारा परिश्रम उपरी के घर में हो । और तू अन्त में बिलाप करेगा जब तेरा मांस और तेरी देह क्षीण हो जायेगी । और कहेगा कि हाय मैं ने उपदेश से क्यों बैर रक्खा और मेरे मन ने दपट की क्यों निन्दा किई । और अपने उपदेशकों के शब्द को न माना और जो मुझे उपदेश देते थे मैं ने उन की ओर कान न झुकाये । निकट था कि मैं मण्डली और सभा के मध्य हर प्रकार की बुराई में पड़ूं ।

अपने ही कुण्ड से पानी पी और अपने ही कूए से बहता पानी । तेरे सोते बाहर फैलें और मार्गों में पानी की नदियां । वे अकेले तेरे ही लिये हों और

कोई पराया तेरा साथी न हो। तेरे सोते में आशीष हो और अपनी तरुणाई की पत्नी से आनन्दित हो। वह प्रिय हरिणी और मनोहर मृग के समान हो उस के स्तन हर समय में तुझे सन्तुष्ट करें और उस की प्रीति में सर्बदा मगन हो। सो हे मेरे बेटे तू किस लिये परस्त्री से आल्हादित होवेगा और उपरी को किस लिये गोद में लेगा। क्योंकि मनुष्य की चालें परमेश्वर की आंखों के आगे हैं और वह उस के सारे चलनों को जांचता है। दुष्ट की बुराइयां उसी को पकड़ लेंगी और वह अपने ही पाप की डोरियों से जकड़ा जायगा। वह बिना शिक्षा से मर जायगा और अपनी अति मूढ़ता में भटकता फिरेगा।

छठवां पर्ब्ब।

हे मेरे बेटे यदि तू अपने मित्र का बिचवई हुआ हो यदि किसी परदेशी से हाथ मारा हो। यदि तू अपने ही मुंह की बातों से फंस गया हो और अपने ही मुंह की बातों से पकड़ा गया हो। तो हे मेरे बेटे अब यह कर और आप को बचा कि तू अपने मित्र के हाथ में पड़ा है तो जा आप को नम्र कर और अपने मित्र की बिन्ती कर। अपनी आंखों को नींद मत दे और अपनी पलकों को ऊंघने मत दे। अपने को हरिण की नाईं ब्याधा के हाथ से और चिड़िया के समान चिड़ीमार के हाथ से बचा।

हे आलसी चिउंटी के पास जा उस के मार्गों को बूझ और बुद्धिमान हो। यद्यपि उस का कोई अगुआ

अध्यक्ष और राजा नहीं। तथापि वह ग्रीष्म में अपने
लिये भोजन सिद्ध करती है और लवने में अपना
९ आहार बटोरती है। हे आलसी तू कब लों सोवेगा
१० तू कब अपनी नींद से उठेगा। थोड़ा सोना थोड़ा
ऊंघना थोड़ा और हाथों को नींद के लिये समेटना।
११ सो तेरा कंगालपन पथिक की नाईं आवेगा और तेरी
दरिद्रता हथियारबन्द की नाईं।
१२ क्रूर जन और दुष्ट मनुष्य मुंह की हठ से चलता
१३ है। वह अपनी आंखें मारता है अपने पांओं से बोलता
१४ है अपनी अंगुलियों से बताता है। टेढ़ाई उस के मन
में है वह सदा बुराई सोचता है वह बिगाड़ फैलाता
१५ है। सो उस पर अचानक बिपत्ति आ पड़ेगी वह
एकाएक टूट जायगा और कुछ औषध न होगी।
१६ परमेश्वर इन छओं से बैर रखता है हां सात से
१७ उस का जीव घिन करता है। अहङ्कारी आंखें झूठी
१८ जीभ और हाथ जो निर्दोष का लोहू बहाते हैं। मन
जो बुरा बिचार बांधता है पांव जो बुराई के लिये
१९ बेग दौड़ते हैं। झूठा साक्षी जो झूठ बोलता है और
भाइयों में बिगाड़ बोता है।
२० हे मेरे बेटे अपने पिता की आज्ञा को पालन
कर और अपनी माता की व्यवस्था को त्याग न कर।
२१ उन्हें सदा अपने मन में बांध ले उन्हें अपने गले में
२२ लपेट। जब तू चलेगा तब वह तेरी अगुआई करेगी
जब तू सोवेगा तब वह तेरी रक्षा करेगी और जब
२३ तू जागेगा तब वह तुझ से बातें करेगी। क्योंकि

आज्ञा एक दीपक है और व्यवस्था उंजियाला और उपदेश की दपट जीवन के मार्ग। जिसतें तुझे बुरी स्त्री से अलग रक्खें पराई स्त्री की जीभ की फुसलाहट से। अपने मन में उस की सुन्दरता की इच्छा मत कर और वह तुझे अपनी पलकों से पकड़ने न पाये। क्योंकि व्यभिचारिणी के कारण से पुरुष टुकड़े मांगता फिरता है और व्यभिचारिणी महंगमोल प्राण की अहेर करती है। क्या मनुष्य अपनी गोद में आग लेवे और उस के कपड़े न जलें। क्या कोई अंगारों पर चले और उस के पांव न जलें। ऐसा ही वह जो अपने परोसी की पत्नी के पास जाता है और जो कोई उसे छूता सो निर्दोष न रहेगा। मनुष्य चोर को जो भूखा होके चोरी करे निन्दा नहीं करते हैं। पर यदि वह पकड़ा जाय तो सातगुण भर देगा वह अपने घर की समस्त सम्पत्ति देगा। परन्तु वह जो किसी की स्त्री से व्यभिचार करता है सो निर्बुद्धि है जो यह करता है वही अपने प्राण को नाश करने के लिये करता है। वह घाव और निरादर पावेगा और उस का कलङ्क मिटाया न जायगा। क्योंकि डाह से मनुष्य को कोप होता है और वह पलटे के दिन न छोड़ेगा। वह किसी भांति के छुड़ावे को न मानेगा और प्रसन्न न होगा यद्यपि तू उसे घूस पर घूस देवे।

सातवां पर्ब्ब।

हे मेरे बेटे मेरी बातों को धारण कर और मेरी

आज्ञाओं को अपने पास छिपा रख। मेरी आज्ञाओं
को धारण कर और जीता रह और मेरी व्यव-
स्था को अपनी आंखों की पुतली की नाईं कर। उन्हें
अपनी अंगुलियों पर बांध उन्हें अपने मन की पटरी
पर लिख। बुद्धि से कह कि तू मेरी बहिन है और
समुझ को अपना कुटुम्ब जान। जिसतें वे तुझे परस्त्री
से और उस उपरी से जो तुझे अपनी बातों से फुस-
लाती है बचा रक्खें।
६ क्योंकि मैं ने अपने घर की खिड़की में बैठे हुए
७ झरोखे से झांका। और भकुओं में से एक को देखा
और बेटों में से एक अज्ञान तरुण पर ध्यान किया।
८ वह गली में उस के कोने के निकट चला जाता था
९ और उस ने उस के घर का मार्ग लिया। गोधूली
१० में सांझ को बड़ी अंधियारी रात को। और देखो
कि वहां बेश्या के पहिरावे में उसे एक स्त्री मिली
११ जो बड़ी चतुर थी। वह चिल्लाती है और ढीठ है
१२ उस के पांव उस के घर में नहीं ठहरते। कभी बाहर
है कभी चौकों में है और हर कोने के निकट घात
१३ में लगी है। सो उस ने उसे पकड़ा और उस का
१४ चूमा लिया और टकटकी बांधके उसे कहा। कि
मेरे यहां कुशल की भेंटें हैं आज के दिन मैं ने अपनी
१५ मनौतियां पूरी किई हैं। इस लिये मैं तुझ से मिलने
को निकली हूं कि यत्न से तुझे ढूंढूं और मैं ने तुझे
१६ पाया है। मैं ने अपने बिछौने को मिसर के बूटे
१७ काढ़े हुए झीने वस्त्र से संवारा है। मैं ने अपने

बिछौने को मुर और अगर और दारचीनी के सुगन्ध से सुगन्धित किया है। आ प्रातःकाल लों प्रेम से मिलके उन्मत्त होवें आपुस में प्यार से जी बहलावें। क्योंकि पति तो घर में नहीं है उस ने दूर की यात्रा किई है। वह एक थैला रोकड़ अपने हाथ में ले गया है और परिवा को घर आवेगा। सो यहां लों कि उस ने अपने छल की बातों से उसे बश में किया और अपने होंठों के फुसलाने से उसे खींचा। वह अचानक उस के पीछे चला जाता है जैसे बैल घात होने को जाता है अथवा मूढ़ की नाईं जो पांव में सीकरें पहिनके अपने दण्ड के लिये जाता है। यहां लों कि बरछी उस के कलेजे के पार हो गई उस चिड़िया के समान जो जाल की ओर शीघ्र जाती है और नहीं जानती कि वहां उस का प्राण जायगा।

सो अब हे बालको मेरी सुनो और मेरे मुंह के बचनों पर ध्यान रक्खो। अपने मन को उस के मार्गों पर झुकने मत देओ भटककर उस के पथों में मत जाओ। क्योंकि उस ने बहुतों को घायल करके गिरा दिया है हां बहुत से सूर उस्से जूझ गये हैं। उस का घर नरक के मार्ग हैं जो मृत्यु के भवनों में पहुंचाते हैं।

आठवां पर्ब्ब।

क्या बुद्धि नहीं पुकारती और क्या समझ अपना शब्द नहीं उठाती। वह ऊंचे स्थानों की चोटी पर मार्गों के सिरे पर और चौराहों के बीच में खड़ी रहती

है । वह फाटकों पर और नगर के पैठ पर और भीतर आने के द्वारों पर पुकारती है । कि हे लोगो मैं तुम्हें बुलाती हूं और मनुष्य के सन्तानों के लिये मेरा शब्द है । हे भोलो बुद्धि को समझो और हे मूर्खों समझ का मन रक्खो । सुनो क्योंकि मैं उत्तम बातें कहूंगी और मेरे होंठों के खुलने से ठीक बातें निकलेंगी । क्योंकि मेरा मुंह सच सच कहेगा और दुष्टता से मेरे होंठों को घिन है । मेरे मुंह की सारी बातें धर्म्म की हैं उन में टेढ़ी तिरछी कोई बस्तु नहीं । समझवैये के लिये सब खुला है और ज्ञानी के लिये सब ठीक । मेरे उपदेश को ग्रहण करो और रूपे को नहीं और ज्ञान को चोखे सोने से अधिक चुनो । क्योंकि बुद्धि मोतियों से भी अच्छी है और समस्त बस्तें जिन की लालसा किई जाती हैं उस के तुल्य हो नहीं सक्तीं ।

मैं जो बुद्धि हूं चौकसी के साथ रहती हूं और चतुराई के भेद के ज्ञान को प्राप्त करती हूं । बुराई से घिन करना परमेश्वर का भय है और मैं अहङ्कार और अभिमान और कुमार्ग और कुबचन से बैर रखती हूं । मंत्र और ठीक बुद्धि मेरी हैं मैं ही समझ हूं मुझी में बल है । मुझ से राजा राज्य करते हैं और राज-पुत्र बिचार करते हैं । मुझ से प्रधान और अध्यक्ष और पृथिवी के सारे न्यायी प्रभुता करते हैं । मैं उन से प्रेम करती हूं जो मुझ से प्रेम रखते हैं और वे जो मुझे तड़के ढूंढ़ते हैं मुझे पावेंगे । धन और

प्रतिष्ठा हां दृढ़ धन और धर्म्म मेरे साथ हैं। मेरा फल सोने से हां चोखे सोने से और मेरी प्राप्ति चोखी चांदी से भली है। मैं धर्म्म के मार्ग में और बिचार के पथ के मध्य में ले जाती हूं। जिसतें मैं उन्हें जो मुझे प्यार करते हैं सम्पत्ति का अधिकारी करूं और मैं उन के भण्डार भर देऊं।

परमेश्वर अपने मार्ग के आरम्भ में अपने प्राचीन कार्य्यों से आगे मुझे रखता था। मैं सनातन से स्थापित किई गई आरम्भ से पृथिवी के होने से आगे। जब गहिराव न थे मैं उत्पन्न हुई जब पानी से भरे सोते न थे। मैं पहाड़ों के स्थिर होने से पहिले पहाड़ियों से आगे उत्पन्न हुई। जब लों उस ने पृथिवी न बनाई थी न चौगान न जगत की रेणु का सिरा। जब कि उस ने स्वर्ग बनाये और गहिराव के मुंह को घेर लिया मैं वहां थी। जब उस ने ऊपर मेघों को ठहराया और जब कि उस ने गहिराव के सोतों को दृढ़ किया। जब उस ने समुद्र को आज्ञा दिई कि पानी उस की आज्ञा से बाहर न जावें जब उस ने पृथिवी की नेवें डालीं। तब मैं उस के पास प्रतिपालित के समान थी और मैं प्रतिदिन आनन्दित थी और सदा उस के आगे आनन्द करती थी। मैं उस की पृथिवी के मण्डल पर आनन्द करती थी और मेरा आनन्द मनुष्य के सन्तान के साथ था।

सो अब हे बालको मेरी सुनो क्योंकि जो मेरे मार्ग को धारण करते हैं सो क्या ही धन्य हैं। उपदेश

को सुनो और बुद्धिमान होओ और उसे टाल मत देओ।
क्या ही धन्य वह मनुष्य जो मेरी सुनता है और जो
प्रतिदिन मेरे फाटकों पर बाट जोहता है और मेरे
द्वारों के खंभों पर ठहरता है। क्योंकि जिस किसी ने
मुझे पाया उस ने जीवन को पाया और परमेश्वर
का अनुग्रह प्राप्त करेगा। परन्तु जो मेरा पाप करता
है सो अपने प्राण का बैर करता है वे सब जो मुझ
से बैर रखते हैं मृत्यु से प्रेम करते हैं।

नवां पर्ब्ब।

बुद्धि ने अपना घर बनाया है उस ने अपने सात खंभे गढ़े हैं। उस ने अपने पशुन को बध किया है उस ने अपनी मदिरा को मिलाया है उस ने अपना मञ्च भी बिछाया है। उस ने अपनी सहेलियों को भेजा है वह नगर के ऊंचे से ऊंचे स्थानों पर पुकारती है। जो कोई भोला हो सो इधर फिरे जो असमुझ है वह उस्से कहती है। कि आ और मेरी रोटी में से खा और उस मदिरा को पी जिसे मैं ने मिलाया है। मूढ़ों की संगत को त्यागो और जीओ और समुझ के मार्ग में जाओ। जो निन्दक को झिड़कता है सो अपने लिये लाज प्राप्त करता है और जो दुष्ट को दपटता है सो आप ही कलङ्क पाता है। निन्दक को मत झिड़क न हो कि वह तुझ से बैर करे बुद्धिमान को झिड़क तो वह तुझ से प्रेम रक्खेगा। बुद्धिमान को उपदेश कर तो वह अधिक बुद्धिमान होगा धर्म्मी को सिखला तो वह विद्या में बढ़ेगा। परमेश्वर का

का भय बुद्धि का आरम्भ है और पवित्रमय का ज्ञान समुझ है। क्योंकि मुझ से तेरे दिन बढ़ जायेंगे और तेरे जीवन के बरस अधिक होंगे। यदि तू बुद्धिमान होवे तो तू अपने ही लिये बुद्धिमान होगा और तू जो निन्दा करता है तो तू ही अकेला सहेगा।

मूढ़ स्त्री झगड़ालू है वह मूढ़ है और कुछ नहीं जानती। और वह अपने घर के द्वार पर नगर के ऊंचे स्थानों में पीढ़ी पर बैठी है। जिसतें पथिकों को जो अपने सीधे मार्गों पर चले जाते हैं बुलावे। कि जो कोई भोला हो सो इधर फिरे और जो बुद्धिहीन है वह उस्से कहती है। कि चोरी का पानी मीठा है और जो रोटी छिपके खाई जाय वह बड़ी स्वादित है। परन्तु वह नहीं जानता कि वहां मृतक हैं और उस के पाहुन नरक के गहिरावे में हैं।

दसवां पर्ब्ब।

सुलेमान के दृष्टान्त। बुद्धिमान बेटा पिता को आनन्दित करता है परन्तु मूढ़ बेटा अपनी माता को उदास करता है। दुष्टता के भण्डार से कुछ प्राप्त नहीं परन्तु धर्म्म मृत्यु से छुड़ाता है। परमेश्वर धर्म्मी के प्राण को भूख से मरने न देगा परन्तु वह दुष्ट की इच्छा को दूर करेगा। जो ढीले हाथ से कार्य्य करता है सो कंगाल है परन्तु चतुरों का हाथ धन बटोरेगा। जो ग्रीष्म में बटोरता है सो बुद्धिमान पुत्र है परन्तु जो लवनी में सोता है सो लाज देवैया पुत्र है। धर्म्मी के सिर पर आशीष हैं परन्तु अन्धेर दुष्टों के मुंह को

ढांपता है। धर्म्मी का स्मरण धन्य है परन्तु दुष्टों का
नाम सड़ जायगा। अन्तःकरण का बुद्धिमान आज्ञा
मानेगा परन्तु होंठों का मूर्ख गिराया जायगा। जो
खराई से चलता है सो कुशलता से चलता है परन्तु
जो अपने मार्गों को बिगाड़ता है सो प्रगट हो जायगा।
जो आंखें मटकाता है सो शोक करता है परन्तु गप्पी
मूर्ख गिराया जायगा। धर्म्मी का मुंह जीवन का कूआं
है परन्तु अन्धेर दुष्टों के मुंह को ढांपेगा। बैर झगड़ा
उठाता है पर प्रेम सारे पापों को ढांपता है। समुझवैये
के होंठों में बुद्धि पाई जाती है परन्तु जो मूर्ख है उस
की पीठ के लिये छड़ी है। बुद्धिमान ज्ञान को बटोरते
हैं परन्तु मूर्ख का मुंह नाश के समीप है। धनवान का
धन उस का दृढ़ नगर है परन्तु कंगालों की कंगालपन
उन का नाशक है। धर्म्मी का परिश्रम जीवन के लिये
है परन्तु दुष्ट का फल पाप के लिये है। जो उपदेश
धारण करता है सो जीवन के मार्ग पर है परन्तु जो
दपट को नहीं मानता है सो चूक करता है। जो झूठे
होंठों से बैर छिपाता है और जो अपबाद लगाता
९ है सो मूर्ख है। बचन की बहुताई पाप के बिना
नहीं होती परन्तु जो अपने होंठों को रोकता है सो
० बुद्धिमान है। धर्म्मी की जीभ चुनी हुई चांदी है दुष्टों
१ का मन न्यूनता की नाईं है। धर्म्मियों के होंठ बहुतों
को खिलाते हैं परन्तु मूर्ख लोग मूर्खता से मरते हैं।
२ परमेश्वर ही की आशीष धनी करती है और वह
३ उस में कुछ परिश्रम नहीं बढ़ाती। बुराई करना

मूर्ख के लिये ठट्ठा है परन्तु समुझवैये के पास बुद्धि है। दुष्ट का भय वही उस पर पड़ेगा परन्तु धर्म्मियों की इच्छा पूर्ण होगी। जिस रीति से बगूला जाता रहता है वैसा ही दुष्ट न बचेगा परन्तु धर्म्मी सनातन की नेव है। जैसा दांतों के लिये सिरका और आंखों के लिये धूआं ऐसा ही आलसी उन के लिये है जो उसे भेजते हैं। परमेश्वर का भय बय को बढ़ाता है परन्तु दुष्टों के बरस घटाये जायेंगे। धर्म्मियों की आशा आनन्द है परन्तु दुष्टों की आशा नाश होगी। परमेश्वर का मार्ग खरे मनुष्य के लिये गढ़ है परन्तु कुकर्म्मियों के लिये बिनाश। धर्म्मी कभी टलाया न जायेगा परन्तु दुष्ट पृथिवी के अधिकारी न होंगे। धर्म्मी के मुंह से बुद्धि निकलती है परन्तु टेढ़ी जीभ काट डाली जायेगी। धर्म्मी के होंठ जानते हैं कि ग्राह्य के योग्य क्या है परन्तु दुष्ट का मुंह टेढ़ा है।

ग्यारहवां पर्ब्ब।

छल की तुला से परमेश्वर को घिन है परन्तु पूरी तौल उस की प्रसन्नता है। अहङ्कार जब आता है तब लज्जा आती है परन्तु नम्रता के साथ बुद्धि है। सीधों की खराई उन की अगुआई करेगी परन्तु अपराधियों की टेढ़ाई उन्हें नाश करेगी। कोप के दिन धन से लाभ नहीं होता परन्तु धर्म्म मृत्यु से छुड़ाता है। सिद्ध का धर्म्म उस के मार्ग को सुधारेगा परन्तु दुष्ट अपनी दुष्टता से गिर पड़ेगा। खरों का धर्म्म उन्हें छुड़ावेगा परन्तु अपराधी नटखटी में पकड़े

जायेंगे। जब दुष्ट मनुष्य मरता है तब उस की आशा नष्ट होती है और असत्य का आसरा नष्ट होता है। धर्म्मी सङ्कट से छुड़ाया जाता है और उस की सन्ती दुष्ट आता है। अधर्म्मी मनुष्य मुंह से अपने परोसी का नाश करता है परन्तु धर्म्मी ज्ञान के द्वारा से छुड़ाये जाते हैं। धर्म्मियों की मगनता में नगर आनन्दित होता है और जब दुष्ट नष्ट होते हैं तब चिल्लाना होता है। खरों की आशीष से नगर बढ़ाया जाता है परन्तु दुष्टों के मुंह से उलटाया जाता है। मूर्ख अपने परोसी की निन्दा करता है परन्तु समुझवैया चुपका रहता है। लुतड़ा मनुष्य चलते फिरते भेद प्रगट करता है परन्तु जिस का बिश्वस्त प्राण है सो बात छिपाता है। जहां परामर्श नहीं तहां लोग गिर पड़ते हैं परन्तु मंत्रियों की बहुताई से बचाव है। जो परदेशी का मध्यस्थ होता है उस का बड़ा टूटा होगा और जो बिचवई होने से बैर रखता है सो निर्भय है। अनुग्रहीत स्त्री प्रतिष्ठा रख छोड़ती है और बलवन्त पुरुष धन को रख छोड़ता है। दयाल मनुष्य अपने ही प्राण पर भलाई करता है परन्तु कठोर अपने ही मांस को दुख देता है। दुष्ट छल के कार्य्य करता है परन्तु जो धर्म्म बोता है सो सच्चा प्रतिफल पावेगा। जैसा धर्म्म से जीवन है वैसा जो बुराई का पीछा करता है सो अपनी ही मृत्यु के लिये है। जिन के मन टेढ़े हैं वे परमेश्वर के आगे घिनित हैं परन्तु जिन की चाल खरी है सो उस का आनन्द है। यद्यपि हाथ से हाथ

मिले तथापि दुष्ट निर्दण्ड न जायगा परन्तु धर्म्मियों का बंश छुड़ाया जायगा। रूपवती स्त्री जो लाज को छोड़ती है सो उस सूअर की नाईं है जिस की थूथनी में सोने की नथुनी है। धर्म्मियों की लालसा केवल भलाई है परन्तु दुष्टों की आशा क्रोध है। कोई तो ऐसा है जो बिथराता है तथापि बहुत बढ़ाता है और कोई उचित से अधिक रख छोड़ता है परन्तु केवल दरिद्रता के कारण हो जाता है। आशीष का अन्तःकरण मोटा होगा और वह जो सींचता है आप भी सींचा जायगा। जो अन्न रख छोड़ता है उस को मनुष्य स्राप देंगे परन्तु बेचवैये के सिर पर आशीष होगी। जो यत्न से भलाई ढूंढ़ता है सो अनुग्रह प्राप्त करता है परन्तु जो बुराई को ढूंढ़ता है वह उसी पर आवेगी। जो अपने धन पर भरोसा रखता है सो गिर पड़ेगा परन्तु धर्म्मी पत्ती की नाईं लहलहावेंगे। जो अपने घराने को सताता है सो पवन का अधिकारी होगा और मूर्ख जन बुद्धिमान अन्तःकरण का सेवक होगा। धर्म्मी का फल जीवन का बृक्ष है और जो धर्म्म से प्राणों को मोल लेता है वह बुद्धिमान है। देख धर्म्मी को पृथिवी पर पलटा दिया जायगा तो कितना अधिक दुष्ट और पातकी को।

बारहवां पर्व्व।

जो उपदेश से प्रेम रखता है सो ज्ञान से प्रेम रखता है परन्तु जो दपट से बैर रखता है सो पशुवत है। उत्तम मनुष्य परमेश्वर से अनुग्रह पाता है परन्तु

दुष्ट जुगती मनुष्य को वह दोषी ठहरावेगा । दुष्टता से मनुष्य स्थिर न किया जायगा परन्तु धर्म्मियों की जड़ टलाई न जायगी । सुकर्म्मी स्त्री अपने पति के लिये मुकुट है परन्तु जो लज्जित करती है सो उस की हड्डियों में सड़ाहट की नाईं है । धर्म्मियों की चिन्ता ठीक है परन्तु दुष्टों का परामर्श कपट है । दुष्टों की बातें यही हैं कि घात में बैठके लोहू बहावें पर खरों का मुंह उन्हें छुड़ावेगा । दुष्ट उलट दिये जाते हैं और हैं ही नहीं पर धर्म्मियों का घर स्थिर रहेगा । मनुष्य का सराहना उस की बुद्धि के समान होगा परन्तु जो अन्तःकरण का टेढ़ा है सो निन्दित है । वह जो तुच्छ किया जाता है और जिस का सेवक है उस्से श्रेष्ठ है जो अपनी प्रतिष्ठा करता है और रोटी का आधीन है । धर्म्मी अपने पशुन के प्राण की चिन्ता करता है परन्तु दुष्टों की कोमल दया कठोरता है । जो अपनी भूमि को जोता बोया करता है सो रोटी से तृप्त होगा परन्तु जो तुच्छ लोगों का पीछा करता है सो मूर्ख है । दुष्ट की इच्छा यह है कि बुराई का जाल बिछाये परन्तु धर्म्मियों की जड़ फल देगी । होंठों के पाप से दुष्ट बझाया जाता है परन्तु धर्म्मी दुख से निकल आवेगा । अपने मुंह के अच्छे फलों से मनुष्य तृप्त किया जायगा और मनुष्य के हाथों का प्रतिफल उसे दिया जायगा । मूढ़ की चाल उस की दृष्टि में भली है परन्तु जो मंत्र को मानता है सो बुद्धिमान है । मूर्ख का क्रोध तुरन्त जाना जाता परन्तु चतुर लाज को

ढांपता है। जो सच बोलता है सो धर्म्म को प्रगट करता है परन्तु झूठा साक्षी छल देता है। किसी की बोली ऐसी है जैसे खड्ग का चुभना परन्तु बुद्धिमान की जीभ कुशल है। सच्चाई का होंठ सदा स्थिर रहेगा परन्तु झूठी जीभ पल भर की है। कुचिन्तक के मन में छल है परन्तु मिलाप के मंत्रियों को आनन्द है। धर्म्मी पर कोई बिपत्ति आने न पायेगी परन्तु दुष्ट बुराई से पूर्ण होंगे। झूठे होंठों से परमेश्वर को घिन है परन्तु जो सच्चा व्यवहार करते हैं सो उस की प्रसन्नता हैं। चतुर मनुष्य ज्ञान को छिपाता है परन्तु मूर्खों के मन मूर्खता प्रचारते हैं। चालाकों का हाथ प्रभुता करेगा परन्तु आलसी कर के बश में होगा। मनुष्य के मन का शोक उसे निहुड़ाता है परन्तु सुबचन मगन करता है। धर्म्मी अपने परोसी की अगुआई करता है परन्तु दुष्टों का मार्ग उन्हें भटकाता है। आलसी अपनी अहेर को नहीं भूंजता परन्तु चालाक मनुष्य की सम्पत्ति बहुमूल्य है। धर्म्म के मार्ग में जीवन है और उस के पथ मृत्यु नहीं।

तेरहवां पर्ब्ब।

बुद्धिमान बेटा अपने पिता का उपदेश सुनता है परन्तु निन्दक दपट को नहीं सुनता। मनुष्य अपने मुंह के फल में से अच्छा खायगा परन्तु अपराधियों का प्राण अन्धेर को। जो अपने मुंह को संभालता है सो अपने प्राण की रक्षा करता है जो अपने होंठों को पसारता है सो नाश होगा। आलसी का मन

बहुत कुछ चाहता है और कुछ नहीं पाता परन्तु
७ चालाकों का मन पुष्ट होगा । धर्म्मी जन झूठी बात
से बैर रखता है परन्तु दुष्ट बुराई करता और लाज
८ पहुंचाता है । धर्म्म उस की जिस का मार्ग सीधा है
रक्षा करता है परन्तु दुष्टता पापी को उलट देती है।
एक तो आप को धनी बनाता है तथापि उस के पास
कुछ नहीं एक आप को कङ्गाल करता है तथापि बड़ा
धनी है । मनुष्य के प्राण का प्रायश्चित्त उसी का धन
है परन्तु कङ्गाल दपट को नहीं सुनता । धर्म्मियों का
दिया जलता रहेगा परन्तु दुष्टों का दीपक बुझाया
जायगा । झगड़ा केवल अहङ्कार से उठता है परन्तु
सुमंत्रों के साथ बुद्धि है । जो धन कि अनर्थ से प्राप्त
किया गया सो घट जायगा परन्तु जो परिश्रम से
२ बटोरता है सो बढ़ जायगा । आशा का टालना मन
को रोगी करता है परन्तु आशा का पूर्ण होना जीवन
३ का बृक्ष है । जो कोई बचन की निन्दा करता है सो
नाश किया जायगा परन्तु वह जो आज्ञा से डरता है
४ कुशल से रहेगा । ज्ञानी की व्यवस्था जीवन का सोता
५ है जिसतें मृत्यु के जालों से अलग होवे । अच्छी
समझ अनुग्रह देती है परन्तु अपराधियों का मार्ग
६ कठिन है । हर एक चतुर जन ज्ञान से व्यवहार करता
७ है परन्तु मूर्ख अपनी मूर्खता फैलाता है । दुष्ट दूत
बुराई में पड़ता है परन्तु बिश्वस्त दूत कुशल है ।
८ कङ्गालपन और लाज उस के लिये हैं जो उपदेश को
नहीं मानता परन्तु जो दपट को मानता है सो प्रतिष्ठा

पावेगा। इच्छा का पूर्ण होना प्राण को मीठा है परन्तु बुराई को छोड़ना मूर्खों को घिन है। जो बुद्धिमानों के संग चलता सो बुद्धिमान होगा परन्तु मूर्खों का संगी चूर्ण होगा। बिपत्ति पापियों के पीछे दौड़ती है परन्तु धर्म्मियों को उत्तम प्रतिफल मिलेगा। उत्तम अपने पोतों के लिये अधिकार छोड़ जाता है परन्तु पापी का धन धर्म्मी के लिये धरा है। कङ्गालों के जोतने बोने से बहुत सा भोजन मिलता है परन्तु ऐसा भी होता है कि धन बिचार के न होने से उड़ाया जाता है। जो अपनी छड़ी को रोकता है सो अपने बेटे से बैर रखता है परन्तु जो उसे प्यार करता है सो उस को आगे से ताड़ना करता है। धर्म्मी अपने प्राण की सन्तुष्टता के लिये खाता है परन्तु दुष्टों का पेट नहीं भरता।

चौदहवां पर्ब्ब।

बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है परन्तु अज्ञान उसे अपने हाथों से ढाती है। जो अपनी खराई से चलता है सो परमेश्वर से डरता है परन्तु कुमार्गी उस की निन्दा करता है। मूर्खों के मुंह में घमण्ड की लाठी है परन्तु बुद्धिमानों के होंठ उन की रक्षा करेंगे। जहां बैल नहीं तहां चरनी छूछी हैं परन्तु अनाज की अधिकाई बैल के बल से है। बिश्वस्त साक्षी झूठ न बोलेगा परन्तु झूठा साक्षी झूठ उच्चारण करेगा। निन्दक बुद्धि की खोज करता है और नहीं पाता परन्तु ज्ञान समुझवैये के लिये सहज है। जब

तू ज्ञान के होंठ नहीं देखता है तब मूर्ख से अलग
हो जा। चतुर की बुद्धि यह है कि अपना मार्ग बूझे
परन्तु मूढ़ों की मूढ़ता कपट है। मूढ़ पाप को ठट्ठा
जानते हैं परन्तु धर्म्मियों में कृपा है। प्राण की कड़-
वाहट को प्राण ही जानता है और उपरी मनुष्य उस
की आनन्दता में हाथ नहीं डालता है। दुष्टों का घर
नष्ट हो जायगा परन्तु खरों का तम्बू लहलहावेगा।
१२ एक मार्ग है जो मनुष्य को ठीक दिखलाई देता है
१३ परन्तु उस का अन्त मृत्यु का मार्ग है। हंसने में भी
मन शोकित है और उस आनन्द का अन्त उदासी
१४ है। भटका हुआ मन अपने ही मार्गों से तृप्त हो
१५ जायगा और उत्तम मनुष्य आप ही से। भोला हर
एक वचन को प्रतीति करता है परन्तु चतुर देखके
१६ चलता है। बुद्धिमान डरता है और बुराई से भागता
१७ है परन्तु मूर्ख कोपित और निर्भय है। जो शीघ्र
क्रोध करता है सो मूर्खता से व्यवहार करता है और
१८ दुष्ट जुगती से बैर है। भकुए मूर्खता के अधिकारी हैं
१९ परन्तु चतुरों के सिर पर ज्ञान का मुकुट है। बुरे भलों
के आगे और दुष्ट धर्म्मी के फाटकों के आगे झुकते हैं।
२० कङ्गाल से उस का परोसी भी बैर रखता है परन्तु
२१ धनी के बहुत से मित्र हैं। जो अपने परोसी की निन्दा
करता है सो पाप करता है परन्तु जो कङ्गालों पर दया
२२ करता है सो धन्य है। जो बुरी युक्ति करते हैं क्या वे
चूक नहीं करते परन्तु दया और सत्य उन पर है जो भले
२३ युक्ती हैं। समस्त परिश्रम में लाभ होगा परन्तु होंठों

की बोली से केवल दरिद्रता है। बुद्धिमानों का धन उन का मुकुट है परन्तु मूर्खों की मूर्खता मूर्खता ही रहती है। सच्चा साक्षी प्राणों को बचाता है परन्तु छली झूठ बोलता है। परमेश्वर के डर में दृढ़ बिश्वास है और उस के बालकों को शरणस्थान मिलेगा। परमेश्वर का डर जीवन का सोता है जिसतें मृत्यु के फंदों से अलग होवे। लोगों की बहुताई में राजा की प्रतिष्ठा है परन्तु लोगों के न होने में राजपुत्र का नाश है। जो क्रोध में धीमा है बड़ा बुद्धिमान है परन्तु जो शीघ्र क्रोध करता मूर्खता प्रगट करता है। शरीर का जीवन शुद्ध मन है परन्तु डाह हड्डियों की सड़ाहट है। जो कङ्गाल पर अन्धेर करता है सो उस के कर्त्ता की निन्दा करता है परन्तु जो उस की प्रतिष्ठा करता है कङ्गाल पर दया करता है। दुष्ट अपनी दुष्टता में खदेड़ा जाता है परन्तु धर्म्मी अपनी मृत्यु में आशा रखता है। समुझवैये के मन में बुद्धि चुपचाप रहती है और मूढ़ों के मन की दशा प्रगट होती है। धर्म्म जातिगण को बढ़ाता है परन्तु पाप लोगों के लिये कलङ्क है। बुद्धिमान सेवक पर राजा की कृपा है परन्तु जो लाज दिलाता है उस का क्रोध उस पर है।

पन्द्रहवां पर्ब्ब।

कोमल उत्तर क्रोध को फेर देता है परन्तु कटुक बचन क्रोध को उभाड़ते हैं। बुद्धिमानों की जीभ ज्ञान को उत्तम रीति से काम में लाती है परन्तु मूर्खों का मुंह मूर्खता उगलता है। परमेश्वर की आंखें हर

स्थान में बुरों भलों को देखती हैं। कुशलता की जीभ जीवन का बृक्ष है परन्तु उस की चिकनी चुपड़ी बातें आत्मा के लिये हानि हैं। मूर्ख अपने पिता के उपदेश को तुच्छ जानता है परन्तु जो घुड़की को मान लेता है सो चतुर है। धर्म्मी के घर में बहुत धन है परन्तु दुष्ट की प्राप्ति में दुख है। बुद्धिमान के होंठ ज्ञान फैलाते हैं परन्तु मूर्ख का मन ऐसा नहीं है। दुष्ट के बलिदान से परमेश्वर को घिन है परन्तु खरे की प्रार्थना उस की प्रसन्नता है। दुष्ट की चाल से परमेश्वर को घिन है परन्तु जो धर्म्म का पीछा करता है वह उस्से प्रेम रखता है। जो मार्ग को छोड़ देता है ताड़ना उस के लिये भारी है और जो दपट से बैर रखता है सो मर जायगा। पाताल और नाश परमेश्वर के आगे हैं तो कितना अधिक मनुष्य के सन्तान के अन्तःकरण न होंगे। निन्दक अपने दपटनेहारे से प्रेम न करेगा और बुद्धिमानों के पास न जायगा। मगनमन रूप को आनन्द करता है परन्तु मन के शोक से मन टूट जाता है। समुझवैये का मन ज्ञान को खोजता है परन्तु मूर्खों का मुंह मूर्खता आहार करता है। दुखी के जीवन के दिन दुख हैं परन्तु जिस का मन मगन है उस के लिये सदा जेवनार है। थोड़ा सा जो परमेश्वर के भय के साथ हो उस बड़े भण्डार से जो क्लेश के संग हो भला है। साग पात का भोजन प्रेम के साथ उस्से भला है कि पाला हुआ बरद बैर के साथ। क्रोधी मनुष्य झगड़ा उभाड़ता

है परन्तु जो क्रोध में धीमा है सो झगड़े को मिटाता है। आलसी का मार्ग कांटों के बाड़े के समान है परन्तु धर्म्मियों का मार्ग ऊंचा मार्ग है। बुद्धिमान लड़का पिता को आनन्दित करता है परन्तु मूर्ख अपनी माता की निन्दा करता है। मूढ़ता निर्बुद्धि के लिये आनन्द है परन्तु समुझवैया मनुष्य खराई से चलता है। बिना परामर्श मनोरथ बृथा होते हैं परन्तु मंत्रियों की बहुताई से वे दृढ़ होते हैं। मनुष्य अपने मुंह के उत्तर से आनन्दित होता है और समय पर की बात कैसी अच्छी है। जीवन का मार्ग बुद्धिमान के लिये ऊंचा है जिसतें वह नीचे पाताल से निकल जाय। परमेश्वर घमण्डियों का घर ढा देगा परन्तु वह रांड़ के सिवाने को स्थिर करेगा। दुष्ट की चिन्ता से परमेश्वर को घिन है परन्तु पावनों की बातें मनोहर हैं। जो लाभ का लालच करता है सो अपने घराने को दुख देता है परन्त जो घूंस से बैर रखता है सोई जीयेगा। धर्म्मी का मन उत्तर देने को सोचता है परन्तु दुष्टों का मुंह बुराइयां उगलता है। परमेश्वर दुष्टों से दूर है परन्तु वह धर्म्मियों की प्रार्थना सुनता है। आंखों की ज्योति मन को आनन्द करती है और सुसन्देश हड्डियों को पुष्ट करता है। जो कान जीवन की झिड़की सुनता है सो बुद्धिमानों में रहेगा। जो उपदेश को नहीं मानता सो अपने ही प्राण को तुच्छ करता है परन्तु जो दपट को मानता है सो बुद्धि प्राप्त करता है।

परमेश्वर का भय बुद्धि का उपदेश है और प्रतिष्ठा के आगे दीनताई है ।

सोलहवां पर्ब्ब ।

मनुष्य के मन की उपाय और जीभ का उत्तर परमेश्वर की ओर से हैं । मनुष्य की सारी चालें उस की आंखों के आगे पवित्र हैं परन्तु परमेश्वर आत्माओं को तौलता है । अपने कार्य्यों को परमेश्वर को सौंप तो तेरी चिन्ताएं स्थिर किई जायेंगी । परमेश्वर ने सब कुछ अपने लिये बनाया है हां दुष्ट को भी बुराई के दिन के लिये । हर एक अहङ्कारी मन से परमेश्वर को घिन है यद्यपि हाथ हाथ में मिले तथापि वह बिना दण्ड न छूटेगा । दया और सत्य से बुराई ढांपी जाती है और लोग परमेश्वर के भय से बुराई से अलग रहते हैं । जब मनुष्य की चालें परमेश्वर को अच्छी लगती हैं तब वह उस के बैरियों को भी उस्से मेल कराता है । थोड़ा सा जो धर्म्म के साथ है बहुत प्राप्ति से जो अन्याय के साथ है अच्छा है । मनुष्य का मन अपना मार्ग ठहराता है परन्तु परमेश्वर उस की डग को दृढ़ करता है । दिव्य बचन राजा के होंठों से निकलता है और उस का मुंह न्याय में अपराध नहीं करता । खरी तौल और तुला परमेश्वर के हैं थैली के सारे बटखरे उस के कार्य्य हैं । दुष्टता के कर्म्म करने से राजाओं को घिन है क्योंकि सिंहासन धर्म्म से दृढ़ किया जाता है । धर्म्मी होंठ राजाओं को प्रसन्न हैं और वे उस को जो ठीक बोलता है प्यार करते हैं ।

राजा का क्रोध मृत्यु के दूतों के समान है परन्तु बुद्धिमान मनुष्य उसे धीमा करेगा। राजा के रूप की ज्योति में जीवन है और उस की कृपा पिछली बर्षा की एक बदली के समान है। बुद्धि को प्राप्त करना सोने से कितना भला है और समुझ को प्राप्त करना रूपे से कितना उत्तम है। खरों का राजमार्ग यह है कि बुराई से अलग रहें जो अपने मार्ग की चौकसी करता है सो अपने प्राण की रक्षा करता है। नाश से पहिले अहङ्कार और गिर पड़ने से आगे मन का घमण्ड है। दीनों के साथ दीन होना उस्से अच्छा है कि अहङ्कारियों के साथ लूट बांटे। जो बुद्धिमानी के साथ कार्य्य करता है सो भलाई देखेगा और जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है सो क्या ही धन्य है। जो मन में बुद्धिमान है वह चतुर कहलावेगा और होंठों की मीठाई बिद्या बढ़ाती है। समुझवैयों के लिये समुझ जीवन का सोता है परन्तु मूर्खों का उपदेश मूर्खता है। बुद्धिमान का अन्तःकरण उस के मुंह को बुद्धिमान करता है और उस के होंठों को बिद्या देता है। मनभावनी बातें मधु के छत्ते के समान प्राण को मीठी लगती हैं और वे हड्डियों के लिये चैन हैं। ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को सीधा समुझ पड़ता है परन्तु उस का अन्त मृत्यु के मार्ग हैं। जो परिश्रम करता है वह अपने लिये करता है क्योंकि उस का मुंह उस्से परिश्रम करवाता है। दुष्ट मनुष्य बुराई को खोदके निकालता है और उस के

होंठों में जलती आग की नाईं है। क्रूर मनुष्य झगड़ा उठाया करता है और फुसफुसहा मित्रों में बिभाग करता है। अन्धेरी मनुष्य अपने परोसी को फुसलाता है और उसे उस मार्ग से ले जाता है जो भला नहीं। वह आंखें मटकाता है जिसतें टेढ़ी बात की युक्ति करे और होंठ हिलाता है जिसतें बुराई उत्पन्न करे। उजला सिर बिभव का मुकुट है जो धर्म्म के मार्ग में पाया जाय। जो क्रोध में धीमा है सो सामर्थी से भला है और जो अपने मन को बश में रखता है उस्से जो नगर को लेता है। चिट्ठी गोद में डाली जाती है परन्तु उस का समस्त न्याय परमेश्वर से है।

सत्रहवां पर्ब्ब ।

रूखा ग्रास जो चैन के साथ हो उस घर से भला है जो झगड़े के बलिदानों से भरा हुआ हो। बुद्धिमान सेवक उस पुत्र पर जो लज्जित करता है प्रभुता करेगा और भाइयों में अधिकार का भाग पावेगा। चांदी के लिये घरिया है और सोने के लिये भट्ठी परन्तु परमेश्वर अन्तःकरणों को जांचता है। कुकर्म्मी झूठे होंठों की सुनता है और झूठा कुबचन का श्रोता है। जो कङ्गाल पर हंसता है सो उस के कर्त्ता को कलङ्क लगाता है और जो औरों की बिपत्ति से आनन्दित होता है सो निर्दोषी न ठहरेगा। बालकों के बालक अपने बृद्धों के मुकुट हैं और बालकों के बिभव उन के पिता हैं। होंठों की शोभा मूर्ख को नहीं सजती तो कितने अधिक झूठे होंठ राजपुत्र को।

दान उस की आंखों में जो उसे पाता है अनुग्रह का मणि है और वह जहां कहीं फिरता है सुफल होता है। जो अपराध को छिपाता है सो प्रेम का खोजी है परन्तु जो बात को दुहराता है सो मित्रों में बिभाग करता है। एक झिड़की बुद्धिमान को अधिक चिताती है कि सौ कोड़ा मूर्ख को। दुष्ट केवल दंगे का खोजी है सो उस पर कठोर दूत भेजा जायगा। मनुष्य को उस भालू से भेंट करना जिस के बच्चे छीन लिये गये उस्से भला है कि मूर्ख से उस की मूर्खता की दशा में भेंट करे। जो भलाई की सन्ती बुराई करता है बुराई उस के घर से अलग न होगी। झगड़े का आरम्भ पानी के बहि निकलने की नाईं है सो इस लिये झगड़े को उस्से पहिले कि बढ़ जाय त्याग करो। जो दुष्ट को निर्दोष और जो धर्म्मी को दोषी ठहराता है उन दोनों से परमेश्वर को घिन है। काहे को मूर्ख के हाथ में दाम है जिस्से कि वह बुद्धि मोल ले जब कि उस का मन उस की ओर नहीं है। जो मित्र है सो सदा प्रेम करता है और भाई बिपत्ति के दिन के लिये उत्पन्न हुआ है। निर्बुद्धि मनुष्य हाथ मारता है और अपने मित्र के आगे बिचवई होता है। जो झगड़े से प्रीति रखता है सो अपराध से प्रीति रखता है जो अपने फाटक को ऊंचा करता है सो नाश को ढूंढ़ता है। जिस के मन में हठ है सो भलाई प्राप्त नहीं करेगा और जो टेढ़ी जीभ रखता है सो बुराई में पड़ेगा। जो मूर्ख को उत्पन्न करता है सो अपने

ही शोक के लिये करता है और मूर्ख के पिता को आनन्द नहीं है । आनन्दित मन औषध की नाईं भला करता है परन्तु टूटा मन हड्डियों को सुखाता है। दुष्ट मनुष्य गोद में से घूंस लेता है कि न्याय के मार्ग फेर देवे । समुझवैया के आगे बुद्धि है परन्तु मूर्ख की आंखें पृथिवी के सिवानों लों हैं। मूढ़ पुत्र अपने पिता के लिये शोक है और अपनी मा के लिये बड़ी कड़वाहट । धर्म्मी को भी दण्ड देना अच्छा नहीं और कुंअरों को न्याय के लिये मारना भला नहीं । ज्ञानी संभालके बोलता है और समुझवैया शीतल मन है। मूर्ख भी जब वह चुपका रहता है बुद्धिमान गिना जाता है और समुझवैया अपने होंठों को बन्द कर रखता है ।

अठारहवां पर्ब्ब ।

१ जो आप को औरों से अलग करता है वह अपनी
इच्छा को ढूंढ़ता है और हर एक मनोरथ में छेड़ता
२ है । मूर्ख को समुझ प्रसन्न नहीं परन्तु जब कि उस
३ का मन आप को प्रगट करे । जब दुष्ट आता है तब
निन्दा भी आती है और दुर्गति के साथ अपयश आता
४ है । मनुष्य के मुंह की बातें गहिरे जल हैं और बुद्धि
५ का सोता बहता नाला है। धर्म्मी को न्याय में पलटने
६ को दुष्ट का पक्ष करना अच्छा नहीं है । मूर्ख के होंठ
बिवाद में पैठते हैं और उस का मुंह थपेड़ा मांगता
७ है । मूर्ख का मुंह उस का बिनाश है और उस के
८ होंठ उस के प्राण के लिये फन्दे । फुसफुसाहट की बातें

मीठे ग्रास की नाईं हैं और वे अन्तःकरण के भीतर पैठ जाती हैं। जो अपने कार्य्य में आलसी है सो बृथा उठान करवैये का भाई है। परमेश्वर का नाम एक दृढ़ गढ़ है धर्म्मी उस में दौड़के बच रहता है। धनी मनुष्य का धन उस का दृढ़ नगर और उसी की समुझ में एक ऊंची भीत की नाईं है। बिनाश के आगे मनुष्य का मन फूलता है और प्रतिष्ठा के आगे दीनताई है। जो बिन सुने बचन कह बैठता है उस के लिये मूर्खता और लाज है। मनुष्य का प्राण उस की निर्बलता को संभाल सक्ता है पर टूटे प्राण को कौन सह सक्ता है। चतुर का मन ज्ञान प्राप्त करता है और बुद्धिमानों के कान ज्ञान को ढूंढ़ते हैं। मनुष्य का दान उस के लिये ठिकाना कर लेता है और उसे महज्जनों के पास पहुंचाता है। जो अपने ही पद में पहिला है सो धर्म्मी जाना जाता है परन्तु उस का परोसी आके उसे जांचता है। चिट्ठी डालना झगड़ों को मिटा देता है और बलवानों को अलग करता है। उदास भाई को मिला लेना दृढ़ नगर को लेने से कठिन है और उन के झगड़े गढ़ के अड़ंगे की नाईं हैं। मनुष्य का पेट उस के मुंह के फल से तृप्त होता है वह अपने होंठों की प्राप्ति से सन्तुष्ट होता है। जीवन और मरण जीभ के बश में हैं और जो उस्से प्रीति रखते हैं वे उस का फल खाते हैं। जो पत्नी को प्राप्त करता है सो उत्तम बस्तु प्राप्त करता है और परमेश्वर से अनुग्रह पाता है। कङ्गाल बिन्ती

२४ किया करता है परन्तु धनी कड़ा उत्तर देता है। मनुष्य
के मित्र हानि के लिये हैं परन्तु एक जन जो प्रेम रखता
है सो भाई से अधिक सटा रहता है।

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

१ जो कङ्गाल अपनी सच्चाई में चलता है सो उस्से
अच्छा है जो टेढ़े होंठ से चलता है और मूढ़ है।
२ प्राण का अज्ञान रहना भी अच्छा नहीं और जो
पांवों से बेग करता है सो पाप करता है। मनुष्य
३ की मूर्खता उस के मार्ग बिगाड़ती है और उस का
मन परमेश्वर से उदास होता है। धन बहुत से
४ मित्र बनाता है परन्तु कङ्गाल अपने मित्र से अलग
किया जाता है। झूठा साक्षी निर्दोष न ठहरेगा और
५ मिथ्याबादी न बचेगा। बहुत से लोग राजपुत्र की
६ दया के लिये बिन्ती करेंगे और सब उस मनुष्य के
मित्र हैं जो दान देता है। कङ्गाल के तो सारे भाई
७ उस्से बैर रखते हैं सो कितना अधिक उस के मित्र उस्से
दूर जायेंगे वह गिड़गिड़ाके उन का पीछा करता है
८ परन्तु वे नहीं मानते। जो बुद्धि को प्राप्त करता है
सो अपने प्राण को प्यार करता है जो समुझ रखता
९ है सो भलाई पावेगा। झूठा साक्षी बिना दण्ड न
१० छूटेगा और मिथ्याबादी नाश हो जायगा। आनन्दता
मूर्ख को नहीं सजती तो कितना अधिक कि सेवक
११ कुंअर पर राज्य करे। मनुष्य की चतुराई उस के
क्रोध को टालती है और अपराध पर दृष्टि न करने
१२ में उस की प्रतिष्ठा है। राजा का कोप सिंह के गर्जने

की नाईं है परन्तु उस की कृपा घास पर की ओस की नाईं है। मूढ़ पुत्र अपने पिता की बिपत्ति है और पत्नी का झगड़ा रगड़ा नित्य का टपकना है। घर और धन पितरों का अधिकार है और बुद्धिमती पत्नी परमेश्वर से मिलती है। आलस भारी नींद में डाल देता है और आलसी प्राणी भूखा मरेगा। जो आज्ञा को पालन करता है सो अपने प्राण की रक्षा करता है और जो अपनी चालों को तुच्छ जानता है सो मारा जायगा। जो कङ्गाल पर दया करता है सो परमेश्वर को उधार देता है और जो उस ने दिया होगा वह उसे फेर देगा। जब लों कि आशा है तब लों अपने बेटे को ताड़ना किये जा और उस के मार डालने पर अपना मन मत लगा। अति कोपित मनुष्य दण्ड ही पावेगा क्योंकि यदि तू उसे छुड़ाये तो तुझे यह बारम्बार करना पड़ेगा। मन्त्र को सुन और उपदेश को ग्रहण कर जिसतें अपने अन्त में तू बुद्धिमान होवे। मनुष्य के मन में बहुत सी युक्ति हैं परन्तु परमेश्वर का मन्त्र वही ठहरेगा। मनुष्य की इच्छा उस की दया है और झूठे से कङ्गाल अच्छा है। परमेश्वर का भय जीवन के लिये है और जिस में वह है सो तृप्त रहेगा बुराई उस के पास न आवेगी। आलसी अपना हाथ भोजन पात्र में छिपाता है और इतना नहीं करता कि उसे अपने मुंह लों लावे। ठठ्ठू को मार तो भोला चतुर हो जायगा और समुझवैये को दपट तो वह ज्ञान को समुझेगा। जो अपने पिता को लूटता

है और अपनी माता को खदेड़ता है सो पुत्र लाज दिलाता है और कलङ्क लाता है । हे मेरे बेटे ऐसे उपदेश को मत मान जो ज्ञान की बातों से फिरता है । झूठा साक्षी न्याय की निन्दा करता है और दुष्ट का मुंह बुराई निगलता रहता है । ठठेलू के लिये दण्ड की आज्ञा धरी है और मूर्खों की पीठ के लिये कोड़े ।

बीसवां पर्ब्ब ।

मदिरा ठठेलू बनाती है और मद कोपित करता है और जो कोई इस में भ्रमित है सो बुद्धिमान नहीं है । राजा का भय सिंह के गर्ज्ज के समान है जो कोई उसे रिसियाता है सो अपने प्राण का घातक है । मनुष्य की प्रतिष्ठा इसी में है कि झगड़े से अलग रहे परन्तु हर एक मूढ़ छेड़ा करता है । आलसी मनुष्य जाड़े के मारे न जोतेगा इस कारण वह लवनी में भीख मांगेगा और न पावेगा । मनुष्य के मन का मंत्र गहिरे जल के समान है परन्तु समुझवैया मनुष्य उसे खींचेगा । बहुधा मनुष्य अपनी भलाई प्रचारते हैं परन्तु बिश्वस्त मनुष्य को कौन पा सक्ता है । धर्म्मी मनुष्य अपनी खराई पर चलता है उस के पीछे उस के बालक धन्य हैं । राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठता है सो अपनी आंखों से सारी बुराई को दूर करता है। कौन कह सक्ता कि मैं ने अपने मन को पावन किया है मैं अपने पाप से पवित्र हूं । नानाप्रकार के बटखरे और नानाप्रकार के तौल वे दोनों के दोनों परमेश्वर

को घिनित हैं। बालक भी अपनी चाल से जाना जाता है कि उस के कार्य्य पावन और सीधे होंगे। सुन्ने के कान और देखने की आंखें परमेश्वर ने दोनों को बनाया है। बहुत नींद से प्रीति मत कर न होवे कि कङ्गालपना तुझ पर आ जावे अपनी आंखें खोल तो तू रोटी से तृप्त होगा। गांहक कहता है कि यह बुरा है बुरा है परन्तु जब वह चल निकलता है तब बड़ाई करता है। सोना और बहुत से मणि हैं परन्तु ज्ञान के होंठ बहुमूल्य गहने हैं। जो परदेशी का बिचवई हो उस का कपड़ा छीन ले और ऊपरी के लिये उसे बन्धक रख। छल की रोटी मनुष्य को मीठी लगती है परन्तु पीछे उस का मुंह कङ्करों से भर जाता है। मनोरथ परामर्श से स्थिर होता है और सुमंत्र से युद्ध कर। लुतरा जो फिरा करता है सो अपने भेदों को प्रगट करता है और जो अपने होंठों से फुसलाता है उसे मत छेड़। जो कोई अपने पिता अथवा अपनी माता को स्राप देता है उस का दीपक महा अन्धकार में बुझाया जायगा। आरम्भ में शीघ्रता से अधिकार प्राप्त किया गया परन्तु उस का अन्त न फलेगा। मत कह कि मैं बुराई का पलटा लेऊंगा परन्तु परमेश्वर पर ठहर और वही तुझे बचावेगा। नानाप्रकार के बटखरों में परमेश्वर को घिन है और छल की तुला कुछ अच्छी नहीं। मनुष्य की चाल परमेश्वर से है फिर मनुष्य क्योंकर अपनी चाल को समुझ सके। यह मनुष्य के लिये फन्दा है कि पवित्र वस्तु को भक्षण

२६ करे और मनौती के पीछे सोच करे । बुद्धिमान राजा
दुष्टों को छिन्न भिन्न करता है और उन पर पहिया
२७ फिरवाता है । मनुष्य का आत्मा परमेश्वर का दीपक
है जो मनुष्य के उदर के अन्तर को ढूंढ़ा करता है ।
२८ दया और सत्य राजा की रक्षा करते हैं और उस
२९ का सिंहासन दया से उभड़ा हुआ है । तरुण मनुष्यों
का बिभव उन का बल है परन्तु बृद्धों की शोभा उन
३० के उजले बाल हैं । मार की चोट उस की बुराई
को दूर करती है और कोड़े उदर के अन्तर से शुद्ध
करते हैं ।

एक्कीसवां पर्ब्ब ।

राजा का मन परमेश्वर के हाथ में नदियों के
जल की नाईं है वह उसे जिधर चाहता है उधर फेरता
२ है । मनुष्य की हर एक चाल अपनी दृष्टि में ठीक है
३ परन्तु परमेश्वर मन को तौलता है । धर्म्म और
बिचार करना परमेश्वर को बलिदान से अधिक
४ प्रसन्न है । ऊंची दृष्टि और अभिमानी मन और दुष्टों
५ की ज्योति पाप है । चटकहों की चिन्ता केवल बहुताई
के लिये है परन्तु हर एक जो उतावली है केवल
६ कङ्गालता को पहुंचता है । झूठी बोली से भण्डार
प्राप्त करना एक उड़नेहारी बृथा है उन लोगों के लिये
७ जो मृत्यु के खोजी हैं । दुष्टों की बटमारी उन्हें भय
८ देगी क्योंकि उन्हों ने बिचार को न माना । मनुष्य
का मार्ग टेढ़ा और कुपन्थ है परन्तु जो पवित्र है
९ उस का कार्य्य ठीक है । घर के कोठे के एक कोने में

रहना झगड़ालू स्त्री के साथ संयोग के घर में रहने से अच्छा है। दुष्ट का प्राण बुराई चाहता है उस का परोसी उस की दृष्टि में कृपा नहीं पाता। जब निन्दक दण्ड पाता है तब भोला बुद्धिमान होता है और जब बुद्धिमान उपदेश पाता है तब वह समुझ प्राप्त करता है। धर्म्मी मनुष्य बुद्धि से दुष्ट के घर को सोचता है कि ईश्वर दुष्टों की दुष्टता के कारण से उन्हें गिरा देता है। जो कङ्गाल के रोने से अपने कान मूंदता है वह आप भी रोवेगा परन्तु उस का रोना सुना न जायेगा। गुप्त दान क्रोध को धीमा करता है और गोद में प्रतिफल देना महा कोप को ठंडा करता है। धर्म्मी के न्याय में आनन्द है परन्तु कुकर्म्मियों के लिये नाश है। जो मनुष्य समुझ के मार्ग से भटकता है सो मृतकों की मण्डली में पड़ा रहेगा। जो लीला से प्रीति रखता है सो कङ्गाल मनुष्य होगा जो मदिरा और चिकनाई से मन लगाता है सो धनी न होगा। धर्म्मी की सन्ती दुष्ट और खरों की सन्ती अपराधी पलटा दिये जायेंगे। अरण्य में रहना झगड़ालू और क्रोधी स्त्री के साथ रहने से और भी भला है। अच्छे भण्डार और तेल बुद्धिमानों के निवास में हैं परन्तु मूर्ख मनुष्य उसे उड़ा डालेगा। जो धर्म्म और दया का पीछा करता है सो जीवन और धर्म्म और प्रतिष्ठा पाता है। बुद्धिमान मनुष्य बलवानों के नगर पर चढ़ जाता है और उस बल को जिस पर उन का भरोसा है ढा देता है। जो अपने मुंह और अपनी

जीभ को वश में रखता है सो अपने प्राण को दुखों से
बचाता है। अहङ्कारी और अभिमानी निन्दक उस
का नाम है जो अहङ्कार और क्रोध से कार्य्य करता
है। आलसी की इच्छा उसे बधन करती है क्योंकि
उस के हाथ परिश्रम से नाह करते हैं। वह दिन भर
अत्यन्त लालच करता है परन्तु धर्म्मी दान करता है
और नहीं रख छोड़ता। दुष्टों का बलिदान घिनित
है तो कितना अधिक जब कि वह दुष्टता से लाता है।
झूठा साक्षी नाश होवेगा परन्तु जो जन सुनता है वह
बोलने के लिये नित्य लैस रहता है। दुष्ट मनुष्य अपने
मुंह को कठोर करता है परन्तु खरा वही अपने मार्गों
को सोचता है। कोई बुद्धि और कोई समुझ और कोई
परामर्श परमेश्वर के आगे न लहेगा। सङ्ग्राम के दिन
के लिये घोड़ा सिद्ध है परन्तु जय परमेश्वर से है।

बाईसवां पर्ब्ब।

शुभ नाम बड़े धन से अधिक चुने जाने के योग्य
२ है और कृपा सोने रूपे से अधिक अच्छी है। धनवान
और कङ्गाल एकट्ठे मिलते हैं परमेश्वर उन सभों का
३ कर्त्ता है। बुराई को आगे से देखके चतुर आप को
छिपाता है परन्तु भोले लोग उस में बढ़े जाते हैं
४ और दण्ड पाते हैं। दीनताई और परमेश्वर के भय
५ का फल धन और प्रतिष्ठा और जीवन है। हठीले के
मार्ग में कांटे और जाल हैं जो अपने प्राण की रक्षा
६ करता है सो उन से दूर रहेगा। जिस मार्ग में बालक
को चला चाहिये उस में उसे चला और जब बूढ़ा

हुआ वह उस्से न फिरेगा। कङ्गाल पर धनवान प्रभुता करता है और उधारनिक धनिक का सेवक है। जो बुराई बोता है सो बृथा लवेगा और उस के दण्ड की छड़ी नष्ट हो जायेगी। जिस की आंखें भली हैं सो आशीष पावेगा क्योंकि वह अपनी रोटी में से कङ्गालों को देता है। निन्दक को निकाल दे तो झगड़ा मिट जायेगा हां झगड़ा और कलङ्क जाते रहेंगे। जो मन की पवित्रताई से प्रेम रखता है उस के होंठों में अनुग्रह रहता है राजा उस का मित्र होगा। परमेश्वर की आंखें ज्ञान की रक्षा करती हैं और वह अपराधी के व्यवहारों को उलट देता है। आलसी कहता है कि बाहर सिंह है मैं गलियों में फाड़ा जाऊंगा। पराई स्त्रियों का मुंह एक गहिरा गड़हा है उस में वह गिरता है जिस्से परमेश्वर घिन करता है। मूढ़ता बालक के मन में बंधी हुई है परन्तु ताड़ना की छड़ी उसे उस में से दूर करेगी। जो कङ्गाल पर अन्धेर करता है कि अपना धन बढ़ावे और जो धनी को देता है वह निश्चय दरिद्र होगा।

अपना कान झुका और बुद्धिमानों के बचन सुन और मेरे ज्ञान पर अपना मन लगा। क्योंकि यह अच्छी बात है कि तू उन्हें अपने हृदय में धारण करे और वे तेरे होंठों में सजेंगे। जिसतें तेरा भरोसा परमेश्वर पर होवे मैं ने आज के दिन तुझे हां तुझी को जताया है। क्या मैं ने तुझे अच्छे अच्छे परामर्श और ज्ञान नहीं लिखे। जिसतें मैं सच्ची बातों को

निश्चय तुझे जनाऊं कि तू उन के उत्तर में जिन्हों
ने तुझे भेजा है सच्ची बातों का उत्तर दे सके ।
२२ कङ्गाल को मत लूट इस कारण से कि वह कङ्गाल
२३ है और फाटक में दुखी को मत सता । क्योंकि परमे-
श्वर उन के पद का बिवाद करेगा और उन के प्राणों
२४ को लूटेगा जिन्हों ने उन को लूटा है । क्रोधी मनुष्य
से मित्रता मत कर और अति कोपित के साथ मत
२५ जा । न हो कि तू उस की चालें सीखे और अपने
प्राण को फन्दे में फंसावे ।
२६ तू उन में मत हो जो हाथ मारते हैं अथवा उन
२७ में जो ऋण के कारण बिचवई होते हैं । यदि तुझ
पास कुछ भर देने को न हो तो किस लिये तेरे
२८ नीचे का बिछौना खींच ले जावे । पुराने सिवाने को
जो तेरे पितरों ने बांधे हैं मत तोड़ ।
२९ जिसे तू अपने काम में चतुर देखता है वह राजा-
ओं के आगे खड़ा होगा वह तुच्छ जनों के आगे खड़ा
न होगा ।

तेईसवां पर्ब्ब ।

१ जब तू आज्ञाकारी के साथ भोजन पर बैठे तो
२ चौकसी से सोच कि तेरे आगे क्या है । यदि तू पेटू
३ है तो अपने गले पर छूरी लगा । उस के स्वादित
भोजन का लालच मत कर क्योंकि वह छल का
भोजन है ।
४ धनी होने के लिये परिश्रम मत कर अपनी ही
५ बुद्धि से थम जा । क्या तू अपनी आंखें उस पर दौड़ावेगा

जो कुछ नहीं है क्योंकि धन निश्चय अपने लिये पंख
बनाता है और गिद्ध की नाईं आकाश की ओर उड़
जाता है। कुदृष्टि की रोटी मत खा और उस के स्वादित
भोजनों की लालसा मत कर। क्योंकि जैसा वह
अपने मन में चिन्ता करता है वह वैसा ही है वह
तुझे कहता है खा और पी परन्तु उस का मन तेरे
संग नहीं है। ग्रास जो तू ने खाया है उसे उगल
देगा और अपनी मीठी बातें गवांयेगा।

मूढ़ के कानों में अपनी बातें मत कह क्योंकि वह
तेरी बुद्धि के बचन की निन्दा करेगा।

पुराने सिवाने को मत टाल और अनाथों के खेत १
में मत पैठ। क्योंकि उन का मुक्तिदाता सामर्थी है १
वही तुझ से उन के पद का बिवाद करेगा।

उपदेश से अपना मन लगा और ज्ञान की बातों १
पर कान धर।

बालक से ताड़ना अलग मत रख क्योंकि यदि तू १
उसे छड़ी मारेगा तो वह मर न जायगा। तू उसे १
छड़ी से मार और उस के प्राण को समाधि से बचा।

हे मेरे बेटे यदि तेरा मन बुद्धिमान हो तो मैं ही १
हां मेरा मन ही आनन्दित होगा। और जब तेरे १
होंठों से सच्ची बातें निकलेंगी तब मेरा हृदय आनन्दित
होगा।

तेरा मन पापियों से डाह करने न पावे परन्तु तू १
सारे दिन परमेश्वर से डरता रह। क्योंकि निश्चय १
आगे एक प्रतिफल है और तेरी आस घट न जायेगी।

हे मेरे बेटे तू सुन और बुद्धिमान हो और मार्ग में अपने मन को चला । तू मद्यपों में और उन में जो अपने मांस गंवाते हैं मत जा । क्योंकि मद्यप और पेटू कङ्गाल हो जायेंगे और नींद चिथड़े पहिनावेगी। अपने पिता की बात जो तेरा जनक है सुन और जब तेरी माता बृद्ध होवे तब उस की निन्दा मत कर। सच्चाई को मोल ले और मत बेच बुद्धि और उपदेश और समुझ भी । धर्म्मी का पिता अत्यन्त आनन्दित होगा और जो बुद्धिमान पुत्र उत्पन्न करता है सो उस्से आनन्द पावेगा । तेरे माता पिता आनन्द होंगे और जो तुझे जनी सो आनन्दित होगी ।

हे मेरे बेटे अपना मन मुझे दे और तेरी आंखें मेरे मार्गों से प्रसन्न होवें । क्योंकि बेश्या एक गहिरी खाईं है और उपरी स्त्री सकेत कूआं है । वह बटमार की नाईं घात में लगी है और मनुष्यों में अपराधों को बढ़ाती है ।

किस पर सन्ताप है किस पर शोक है कौन झगड़े में पड़ता है किस को लुतड़ापन है और किस को घाव अकारण हैं और किस की आंखें लाल हैं । वे जो मदिरा के पास अबेर लों ठहरते हैं वे जो मिली हुई मदिरा की खोज में रहते हैं । जब मदिरा लाल होवे और उस का रङ्ग कटोरे में देख पड़े और जब वह अच्छी भांति से हिलती है तब उसे मत ताक। अन्त को वह नाग के समान काटेगी और सर्प्प के नाईं डंसेगी । तेरी आंखें पराई स्त्रियों को देखेंगी और तेरा

मन अनुचित बातें निकालेगा। और तू उस के समान हो जायेगा जो समुद्र के मध्य में पड़ा रहता है अथवा उस की नाईं जो गुनरखा की चोटी पर लेटता है। तू कहेगा कि उन्हों ने तो मुझे मारा है पर मैं तो पीड़ित न हुआ उन्हों ने मुझे पीटा मैं नहीं जानता कि कब उठूंगा मैं फिर उसे खोजूंगा।

चौबीसवां पर्ब्ब।

बुरे मनुष्यों से डाह मत कर और उन की सङ्गत की चाह मत रख। क्योंकि उन के मन बिनाश का सोच करते हैं और उन के होंठ बुराई बोलते हैं। बुद्धि से घर बनाया जाता है और समुझ से वह दृढ़ किया जाता है। और ज्ञान से कोठरियां बहुमूल्य और सुन्दर धन से भर जायेंगी।

बुद्धिमान मनुष्य बली है हां ज्ञानी मनुष्य बल बढ़ाता है। क्योंकि बुद्धि के मंत्र से तू अपना युद्ध करेगा और मंत्रियों की बहुताई से बचाव है।

बुद्धि मूर्खों के लिये अति ऊंची है वह फाटक पर अपना मुंह न खोलेगा।

जो बुराई की चिन्ता करता है सो बिगाड़ू जन कहलायेगा।

मूर्खता की चिन्ता पाप है और ठठेलू से मनुष्यों को घिन है।

यदि तू बिपत्ति के दिन मूर्च्छित हो जावे तो तेरा बल थोड़ा है।

यदि तू उन्हें जो मृत्यु के लिये खैंचे गये हों और

उन्हें जो मारे जाने पर लैस हैं अपना हाथ खींचे ।
यदि तू कहे कि देखे। हम जानते न थे तो क्या वह
जो अन्तःकरण को जांचता है यह नहीं सोचता और
जो तेरे प्राण का रक्षक है सो क्या नहीं जानता और
क्या मनुष्य को उस के कार्य्य के समान पलटा न देगा ।
हे मेरे बेटे तू मधु खा क्योंकि वह अच्छा है और
मधु का छत्ता जो तेरे तालू में मीठा है । सो बुद्धि का
ज्ञान तेरे प्राण को होगा जब तू उसे पावे उस का
प्रतिफल होगा और तेरी आशा बृथा न होगी ।
हे दुष्ट धर्म्मी के निवास की घात में मत लग उस
के चैन के स्थान को मत लूट । क्योंकि धर्म्मी सात
बार गिरता है और फिर उठता है परन्तु दुष्ट बुराई
में गिर जायेंगे । जब तेरा बैरी गिर पड़े तब आनन्दित
मत हो और जब वह ठोकर खाय तो तेरा मन मगन
न हो । जिसतें न हो कि परमेश्वर देखे और उस की
दृष्टि में बुरा लगे और अपना क्रोध उस पर से उठा
लेवे । दुष्टों के कारण से तू अपने तईं मत कुढ़ा और
दुष्टों से डाह मत कर । क्योंकि बुरे का अन्त सुफल न
होगा और दुष्टों का दीपक बुझ जायेगा ।
१ हे मेरे बेटे तू परमेश्वर से और राजा से डर और
२ दंगइतों के संग मत रह । क्योंकि उन की बिपत्ति
अचानक आ पड़ेगी और उन दोनों के बिनाश को
कौन जानता है ।
३ ये भी बुद्धिमानों की बातें हैं न्याय में पक्ष करना
४ भला नहीं । जो दुष्ट से कहता है कि तू धर्म्मी है लोग

उसे स्राप देंगे और जातिगण उस्से घिन करेंगे । परन्तु जो उसे दपटते हैं वे आनन्दित होंगे और उन पर अच्छी आशीष होगी ।

जो ठीक उत्तर देता है उस के होंठ चूमे जायेंगे ।

बाहर में अपना कार्य्य सिद्ध कर और अपने लिये खेत में उसे ठीक कर और उस के पीछे अपना घर बना ।

अपने परोसी पर अकारण साक्षी मत हो और अपने होंठों से मत छल । मत कह कि मैं उस्से ऐसा करूंगा जैसा उस ने मुझ से किया मैं मनुष्य को उस के काम के समान पलटा देऊंगा ।

मैं आलसी के खेत के पास से और असमुझ के दाख की बाटिका के पास से गया । और देखो वह कांटों से समस्त छा रहा था और भटकटैया उसे ढांपे हुए थीं और उस की पत्थर की भीत टूटी हुई थी । तब मैं ने देखा और मन से बूझा मैं ने उस पर दृष्टि किई और उपदेश पाया । थोड़ा सोना और थोड़ा ऊंघना और सोने के लिये हाथ को समेटना । सो तेरी दरिद्रता पथिक की नाईं और तेरी दीनता ढलैत मनुष्य के समान आवेगी ।

पच्चीसवां पर्ब्ब ।

ये भी सुलेमान के दृष्टान्त हैं जिन्हें यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह के लोगों ने उतारा ।

बात को छिपाना ईश्वर का बिभव है परन्तु राजा की प्रतिष्ठा बात को खोज लेने में है । जैसे स्वर्ग की ऊंचाई और पृथिवी की नीचाई वैसे राजाओं के मन

का भेद नहीं मिलता । रूपे का मैल छांट डाल तो
सुनार के लिये एक पात्र निकल आवेगा । दुष्ट को
राजा के पास से दूर कर तब उस का सिंहासन धर्म्म
से दृढ़ होगा । राजा के आगे अपना बिभव मत
दिखा और महानों के स्थान पर खड़ा मत हो ।
क्योंकि भला है कि तुझ से कहा जाय कि ऊपर आ
उस्से कि तू कुंअर के आगे जिसे तेरी आंखों ने देखा
है घटाया जाय । झगड़ने को शीघ्र मत निकल न हो
कि तू उस के अन्त को न जाने कि तू क्या करे जब
तेरा परोसी तुझे लज्जित करे । तू अपने परोसी से
अपने पद का बिवाद कर ले और दूसरे के गुप्त को
प्रगट न कर । न हो कि सुनवैया तुझे लज्जित करे
और तेरा अपयश किसी रीति से न मिटे । समय पर
कहा हुआ बचन सोने के आतों के समान है जो चांदी
२ के चित्र पर खुदे हों । जैसे सोने की बाली और
चोखे सोने का गहना वैसे ही बुद्धिमान घुड़कवैया
३ आधीन कान के लिये है । जैसे पाले का शीत लवनी
में वैसे ही बिश्वस्त दूत अपने भेजवैयों के लिये है
क्योंकि वह अपने स्वामियों के मन को शान्ति करता
४ है । जो कोई झुठाई के दान पर अपनी बड़ाई करता
है वह उन मेघों और पवनों के समान है जिन के साथ
५ बर्षा न हो । बड़े धीरज से कुंअर मान लेता है और
६ कोमल जीभ हड्डी को तोड़ती है । क्या तू ने मधु पाया
तू इतना खा जितना तेरे लिये बस है न होवे कि तू
७ अधिक खा जाय और उछाल डाले । अपने परोसी के

घर से अपने पांवों को रोक न हो कि वह तुझ से अघा जाय और तुझ से बैर रक्खे। जो मनुष्य अपने परोसी पर झूठी साक्षी देता है सो हथौड़ा और एक खड्ग और चोखा बाण है। दुख में अविश्वस्त मनुष्य का भरोसा रखना टूटे दांत और लंगड़े पांवों के समान है। जैसा जाड़े में बस्त्र उतार लेना और जवखार पर सिरका वैसा है जैसा राग गाना शोकार्त्त मन के आगे। यदि तेरा बैरी भूखा होवे तो उसे रोटी खाने को दे और यदि वह प्यासा होवे तो उसे पानी पीने को दे। क्योंकि तू उस के सिर पर आग के अङ्गारों का ढेर करेगा और परमेश्वर तुझे प्रतिफल देगा। जिस रीति से उतरहिया पवन मेंह को उड़ा ले जाती है वैसा ही क्रोधित रूप चवाई जीभ को। घर की छत के एक कोने में रहना और भी भला है कि झगड़ालू स्त्री के साथ चौड़े घर में। जैसे प्यासे के लिये ठंडा पानी वैसा ही वह मङ्गलसमाचार है जो दूर देश से आवे। धर्म्मी मनुष्य का दुष्ट के आगे झुकना ऐसा है जैसे गंदला सोता अथवा बिगड़ी धारा। जैसा बहुत मधु खाना अच्छा नहीं है वैसा अपना बिभव ढूंढ़ना ठीक नहीं है। जो अपने प्राण को बश में नहीं रखता सो एक नगर के समान है जो गिरा हुआ बिन भीत का हो।

छब्बीसवां पर्ब्ब।

जैसा तपन में पाला और लवनी में मेंह वैसा मूर्ख को प्रतिष्ठा नहीं सजती। जैसे चिड़ियों का भ्रमना और सुपाबीना का उड़ते फिरना वैसा अकारथ

साप न आवेगा । घोड़े के लिये कोड़ा और गदहे के
४ लिये दट्टी और मूर्ख की पीठ के लिये छड़ी । मूर्ख
को उस की मूर्खता के समान उत्तर मत दे न हो कि
५ तू भी उस के समान हो जाय । मूर्ख को उस की
मूर्खता के समान उत्तर दे न हो कि वह अपनी दृष्टि
६ में बुद्धिमान होवे । जो मूर्ख के हाथ से सन्देश भेजता
७ है सो पांव काटता है और अन्धेर पीता है । जैसा
लंगड़े की टांगें लटकती हैं वैसा मूर्खों के मुंह में
८ दृष्टान्त है । जैसे मणि की थैली पत्थरों के ढेर में
९ वैसा ही वह जो मूर्ख को प्रतिष्ठा देता है । जैसा
कांटा मद्यप के हाथ में गड़ जाता है वैसा मूर्खों के
१० मुंह में दृष्टान्त है । अति महान जो सब का सृष्टि-
कर्त्ता है वह मूर्खों और अपराधियों दोनों को प्रतिफल
११ देता है । जैसा कुत्ता अपने छांट को फिर खाता है
वैसा मूर्ख अपनी मूर्खता फिर फिर प्रगट करता है ।
१२ क्या तू मनुष्य को जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हो
देखता है तो उस के बिषय में मूर्ख से अधिक आशा
१३ है । आलसी कहता है कि मार्ग में सिंह है सिंह
१४ गलियों में है । जैसा द्वार अपनी चूलों पर फिरता है
१५ वैसा आलसी अपने बिछौने पर । आलसी अपना
हाथ पात्र में छिपाता है और उसे मुंह में फेर लाना
१६ बड़ा दुख है । आलसी अपनी समुझ में सात मनुष्यों
से जो बिचार ला सक्ते हैं आप को अधिक बुद्धिमान
जानता है ।

१७ जो चल निकलने में औरों के झगड़े से छेड़ता है

सो ऐसा है जैसा कोई कुत्ते का कान धर लेता है। जैसा बैाड़हा जो लवर को ग्रोर बाण ग्रोर मृत्यु को फेंकता है। वैसा ही वह मनुष्य है जो ग्रपने परोसी को छल देकर कहता है कि मैं ने तो ठट्ठा किया। ईंधन बिना ग्राग बुझ जाती है वैसे जहां लुतड़ा नहीं तहां झगड़ा मिट जाता है। जैसा ग्रङ्गारों पर कोइले ग्रोर ग्राग पर ईंधन वैसा झगड़ालू मनुष्य झगड़ा उठाने में। फुसफुसाऊ की बातें मीठे ग्रासों की नाईं हैं ग्रोर वे ग्रन्तःकरण के भीतर जाती हैं।

जलते होंठ ग्रोर दुष्ट मन चांदी के मैल से ढंपे हुए ठीकरे के समान हैं। जो बैर रखता है सो होंठों से कपट करता है कि मानो नहीं जानता पर मन में छल रख छोड़ता है। जब वह ग्रनुग्रह की बातें करता है तब उस की प्रतीति न कर क्योंकि उस के मन में सात घिन हैं। जिस की डाह गुप्त में छिपी है उस की दुष्टता मण्डली के ग्रागे दिखाई जायेगी। जो गड़हा खोदता है सो उस में गिरेगा ग्रोर जो पत्थर ढलकाता है वह पलटके उसी पर पड़ेगा। झूठी जीभ उन से डाह रखती है जो उसे ताड़ना करते हैं ग्रोर लुतड़े का मुंह बिनाश करता है।

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

घमण्ड मत कर कि कल यों करूंगा क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा। दूसरा तेरी बड़ाई करे ग्रोर न तेरा ही मुंह ऊपरी ग्रोर न तेरे ही होंठ। पत्थर भारी है ग्रोर बालू गरू परन्तु

मूढ़ का कोप दोनों से भारी है। क्रोध क्रूर है और रिस एक बढ़ियाल परन्तु कौन है जो डाह के आगे ठहर सक्ता है। प्रगट झिड़की गुप्त प्रेम से उत्तम है। स्नेही के घाव बिश्वस्त हैं परन्तु बैरी के चूमे छली हैं। अघाया मन मधु को लताड़ता है परन्तु भूखे प्राणी के लिये हर एक कड़वी बस्तु मीठी है। जो मनुष्य अपने स्थान से भ्रमता है वह चिड़िया के समान है जो अपने खोंते से भ्रमती है। सुगन्ध तेल और धूप मन को आनन्दित करते हैं वैसा मनुष्य के लिये उस के मित्र के प्राण के मंत्र मीठे हैं। अपने मित्र और अपने पिता के मित्र को त्याग मत कर और अपनी बिपत्ति के दिन अपने भाई के घर मत जा क्योंकि समीप का परोसी दूर के भाई से अच्छा है। हे मेरे बेटे बुद्धिमान हो और मेरे मन को आनन्दित कर जिसतें मैं उसे जो मुझे उलाहना देता है उत्तर दे सकूं। चतुर आगे से बुराई को देखता है और आप को छिपाता है परन्तु भोले बढ़े जाके दण्ड पाते हैं। जो परदेशी का बिचवई हो तू उस के कपड़े ले ले और उस्से जो उपरी स्त्री का हो बन्धक रख ले। जो बिहान को उठके अपने मित्र को बड़े शब्द से आशीष देता है सो उस के लिये एक स्राप गिना जायेगा। झड़ी के दिन का सदा टपकना और झगड़ालू स्त्री दोनों एक हैं। जो उसे छिपाता है सो पवन को छिपाता है और अपने दहिने हाथ की सुगन्ध जो आप को प्रगट करती है। जैसा लोहा लोहे को चोखा करता है वैसा मनुष्य अपने मित्र के रूप को चोखा करता है।

जो गूलर के बृक्ष की रक्षा करता है सो उस का फल खायगा और जो अपने स्वामी की रक्षा करता है सो प्रतिष्ठा पावेगा। जैसा पानी में मुंह मुंह के समान दिखाई देता है वैसा मनुष्य का मन मनुष्य के समान। पाताल और नाश नहीं भरते वैसा ही मनुष्य की आंखें तृप्त नहीं होतीं। जिस रीति से चांदी के लिये घड़िया और सोने के लिये भट्ठी है उसी रीति से मनुष्य की बड़ाई मनुष्य के लिये। यद्यपि तू मूढ़ को गेहूं के साथ ओखली में डालके मूसल से कूटे तथापि उस की मूढ़ता उस्से दूर न होगी। अपने झुण्डों की दशा को जान्ने में यत्न कर और अपने ढोरों पर मन लगा। क्योंकि सम्पत्ति सदा नहीं रहती और क्या मुकुट पीढ़ी से पीढ़ी लों। तृण हटाया जाता है और कोमल घास दिखाई देती है और पहाड़ों के साग पात बटोरे जाते हैं। मेम्ने तेरे पहिरावा के लिये हैं और बकरे तेरे खेत के मोल हैं। और बकरियों का दूध तेरे खाने के लिये और तेरे घराने के लिये और तेरी लौंडियों की जीविका के लिये है।

अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

दुष्ट जब कोई उन का पीछा नहीं करता तब भागते हैं परन्तु धर्म्मी सिंह के समान साहसी हैं। देश के अपराधों के कारण उस के बहुत से कुंअर होते हैं परन्तु समुझवैया और बुद्धिमान से वह स्थिर हो जायेगा। जो मनुष्य कङ्गाल है और कङ्गालों पर अन्धेर करता है सो बोछार की नाईं है जो अन्न को नाश करता है।

जो व्यवस्था को त्याग करते हैं सो दुष्ट की स्तुति करते
हैं परन्तु व्यवस्था के पालक उन से बिरुद्ध करते हैं।
बुरे मनुष्य न्याय को नहीं समुझते पर जो परमेश्वर के
खोजी हैं सो सब कुछ समुझते हैं। कङ्गाल जो अपनी
खराई पर चलता है उस्से भला है जो अपने मार्गों से
भटका हुआ और वह धनी है। जो व्यवस्था को पालन
करता है सो बुद्धिमान पुत्र है परन्तु जो खाऊ को
खिलाता है सो अपने पिता को लज्जित करता है। जो
ब्याज और अधर्म्म से अपनी सम्पत्ति को बढ़ाता है
सो उस के लिये जो कङ्गालों पर दया करेगा बटोरता
है। जो व्यवस्था के साम्ने से अपने कान को फेर देता
है उस की प्रार्थना भी घिनित है। जो धर्म्मियों को
भटकाके उन्हें बुरे मार्ग पर चलाता है सो अपने गड़हे
में आप ही गिरेगा परन्तु खरे अच्छी बस्तुन के अधि-
१ कारी होंगे। धनी मनुष्य अपनी दृष्टि में बुद्धिमान है
परन्तु कङ्गाल जो बुद्धिमान है उसे पहिचान लेता है।
२ जब धर्म्मी आनन्द करते हैं तब बड़ा बिभव है परन्तु
३ जब दुष्ट उभड़ते हैं तब मनुष्य ढूंढ़ा जाता है। जो अपने
पापों को ढांपता है सो भाग्यवान न होगा परन्तु जो
उन्हें मान लेता है और उन्हें छोड़ता है सो दया पावेगा।
४ क्या ही धन्य वह मनुष्य जो सदा डरा करता है परन्तु
जो अपने मन को कठोर करता है सो बुराई में गिरेगा।
५ जैसा गर्जता हुआ सिंह और भ्रमता हुआ रीछ वैसा
६ ही दुष्ट आज्ञाकारी कङ्गाल पर है। असमुझ प्रधान
भी महा अन्धेरी है परन्तु जो लोभ से बैर रखता है

सो अपनी बय बढ़ावेगा। जो मनुष्य किसी मनुष्य के लोहू से दबा हुआ है सो भागके गड़हे में गिरेगा उसे कोई न थांभेगा। जो खराई से चलता है सो बच जायेगा परन्तु जो कुचाली है सो अकस्मात गिर पड़ेगा। जो अपना खेत जोता बोया करता है सो बहुत भोजन प्राप्त करेगा परन्तु जो बृथा लोगों का पीछा करता है सो कङ्गालपन से पूर्ण होगा। बिश्वस्त मनुष्य आशीषों से उभड़ेगा परन्तु जो धनी होने के लिये उतावली करता है निर्दंण्ड न जायेगा। मनुष्यों का पक्ष करना अच्छा नहीं क्योंकि ऐसा मनुष्य रोटी के टुकड़े के लिये पाप करेगा। जो बुरी आंख रखता है सो धनी होने को उतावली करता है और नहीं सोचता कि दरिद्रता उस पर आ पड़ेगी। जो मनुष्य को दपटता है सो आगे को उस्से जो अपनी जीभ से फुसलाता है अधिक अनुग्रह पावेगा। जो अपनी माता अथवा पिता को लूटता है और कहता है कि यह अपराध नहीं सो बिनाशक का संगी है। जिस के मन में घमण्ड है सो झगड़ा उभाड़ता है परन्तु जिस का भरोसा परमेश्वर पर है सो पुष्ट किया जायेगा। जो अपने मन पर भरोसा रखता है सो मूर्ख है परन्तु जो बुद्धि से चलता है सोई छुड़ाया जायेगा। जो कङ्गाल को देता है उस की घटी न होगी परन्तु जो अपनी आंखें छिपाता है बहुत स्राप पावेगा। जब दुष्ट उभड़ते हैं तब मनुष्य आप को छिपाते हैं परन्तु जब वे नष्ट होते हैं तब धर्म्मी बढ़ते हैं।

उनतीसवां पर्ब्ब ।

१ दपटा हुआ मनुष्य जो अपने गले को कठोर करता
२ है सो बिना औषध अकस्मात मारा जायेगा । जब
धर्म्मी बढ़ते हैं तब लोग आनन्दित होते हैं परन्तु जब
३ दुष्ट प्रभुता करता है तब लोग शोक करते हैं । जो
मनुष्य बुद्धि से प्रेम रखता है सो अपने पिता को मगन
करता है परन्तु जो बेश्यों की सङ्गत करता है सो
४ अपनी सम्पत्ति उड़ाता है । राजा न्याय से अपने देश
को स्थिर करता है परन्तु भेंटों का जन उसे बिगाड़ता
५ है । जो मनुष्य अपने परोसी से मिथ्या प्रशंसा करता
६ है सो उस के डगों के लिये जाल बिछाता है । दुष्ट
मनुष्य के अपराध में एक जाल है परन्तु धर्म्मी गाता
७ है और मगन होता है । धर्म्मी मनुष्य कङ्गालों के
पद को बूझता है परन्तु दुष्ट जान्ने की चिन्ता नहीं
८ करता । निन्दक नगर में आग लगाते हैं परन्तु
९ बुद्धिमान क्रोध को फेर देते हैं । यदि बुद्धिमान मूर्ख
से बिवाद करे चाहे कोप से चाहे हंसी से तो वहां
१० चैन नहीं । घातक खरे से बैर रखते हैं परन्तु सज्जन
११ उस का प्राण बचाता है । मूर्ख अपना सारा मन
उच्चारता है परन्तु बुद्धिमान आगे के लिये रोकता
१२ है । यदि आज्ञाकारक झूठी बात को सुना करे तो
१३ उस के समस्त सेवक दुष्ट हो जाते हैं । कङ्गाल और
ब्याजग्राहक एकट्ठे होते हैं परमेश्वर उन दोनों की
१४ आंखें उंजियाली करता है । जो राजा धर्म्म से कङ्गालों
का न्याय करता है उस का सिंहासन सदा स्थिर

रहेगा। छड़ी और दपट बुद्धि देती हैं परन्तु छोड़ा १
हुआ बालक अपनी माता को लज्जित करता है।
जब दुष्ट बढ़ जाते हैं तब अपराध बढ़ता है परन्तु १
धर्म्मी उन का गिरना देखेंगे। अपने बेटे को ताड़ना १
कर और वह तुझे चैन देगा हां वह तेरे आत्मा को
आनन्दित करेगा। जहां दर्शन नहीं तहां लोग बिना १
बिचार हो जाते हैं परन्तु जो व्यवस्था को पालन
करता है सो धन्य है। सेवक बचन से ताड़ना न १
पावेगा क्योंकि यद्यपि वह समझे तथापि वह न
मानेगा। तू देखता है कि मनुष्य अपनी बातों से २
शीघ्रता करता है तो मूर्ख से उस्से अधिक आशा है।
जो लड़काई से अपने सेवक को सुकुआरी से पालता २
है अन्त को वह उस का बेटा हुआ चाहेगा। क्रोधी २
मनुष्य झगड़ा उभाड़ता है और कोपित मनुष्य अपराध
में घोर नहीं। मनुष्य का अहङ्कार उसे नीचा करेगा २
परन्तु प्रतिष्ठा दीनात्मा को संभालेगी। जो चोर २
का साझी है सो अपने ही प्राण का बैरी है वह स्राप
सुनता है और उसे प्रगट नहीं करता। मनुष्य का २
डर जाल लाता है परन्तु जो परमेश्वर पर भरोसा
रखता है सो रक्षित होगा। बहुत हैं जो आज्ञाकारक २
का रूप ढूंढ़ते हैं परन्तु मनुष्य का न्याय परमेश्वर
से है। अधर्म्मी मनुष्य धर्म्मियों के लिये घिन है और २
खरा दुष्ट के लिये घिन।

तीसवां पर्ब्ब।

याकीह के बेटे आगुर के बचन अर्थात् भविष्य-

वाणी जो उस ने एतियाल हां एतियाल और ऊकाल
से कही।
२ निश्चय मैं मनुष्य से अधिक पशुवत हूं और मनुष्य
३ की सी बुद्धि मुझ में नहीं। और मैं ने न बुद्धि सीखी
४ न धर्म्मियों की पहिचान प्राप्त किई। कौन स्वर्ग पर
चढ़ गया और उतरा किस ने पवन को अपनी मुट्ठी
में एकट्ठा किया किस ने पानियों को वस्त्र में बांधा
किस ने पृथिवी के सारे सिवानों को दृढ़ किया यदि
तू कह सके उस का नाम क्या और उस के बेटे का
५ नाम क्या। ईश्वर का हर एक बचन शुद्ध किया गया
है जिन का भरोसा उस पर है वह उन के लिये ढाल
६ है। तू उस के बचन में कुछ मत मिला न हो कि वह
तुझे दपटे और तू झूठा ठहरे।
७ मैं ने तुझ से दो बातें चाही हैं सो जीते जी मुझ
८ से अलग मत रख। बृथा और झूठ को मुझ से अलग
कर और मुझे न कङ्गालपन न धन दे मेरे योग्य मुझे
९ भोजन दे। न होवे कि मैं तृप्त हो जाऊं और मुकरके
कहूं कि परमेश्वर कौन अथवा कङ्गाल होके चोरी करूं
और अपने ईश्वर का नाम अकारथ लेऊं।
१० सेवक को उस के स्वामी के आगे कलङ्क मत लगा
११ न हो कि वह तुझे स्राप दे और तू दोषी ठहरे। एक
पीढ़ी ऐसी है जो अपने पिता को स्राप देती है और
१२ अपनी माता को धन्य नहीं कहती। एक पीढ़ी अपनी
ही दृष्टि में पवित्र है परन्तु अपनी मलीनता से धोई
१३ नहीं गई। एक पीढ़ी है हाय उस की आंखें उभड़ी

हुई हैं और उस की पलकें उठी हुई हैं। एक पीढ़ी १४
ऐसी है जिस के दांत खड्ग हैं और उस की डाढ़ें छुरियां
जिसतें कङ्गालों को पृथिवी पर से और दरिद्रों को
मनुष्यों में से भक्षण करे। भैंसिया जोंक की दो बेटियां १५
हैं जो दे दे पुकारती हैं तीन हैं जो कभी तृप्त नहीं
होतीं चार नहीं कहतीं कि बस। समाधि और बांझ १६
और पृथिवी जो जल से पूर्ण नहीं और आग नहीं
कहती है कि बस।

वह आंख जो अपने पिता को चिढ़ाती है और १७
अपनी माता को माना तुच्छ जानती है तराई के कौवे
उसे निकाल लेंगे और गिद्ध के चिंगने उसे खा लेंगे।
मेरे लिये तीन अति अचम्भित हैं हां चार जो मैं नहीं १८
समुझता। गिद्ध का मार्ग आकाश में और सांप की १९
चाल चटान पर और समुद्र के मध्य में जहाज़ की चाल
और मनुष्य की चाल कन्या के साथ। ब्यभिचारिणी २०
का मार्ग ऐसा है कि वह खाती है और अपना मुंह
पोंछती है और कहती है मैं ने कुछ दुष्टता नहीं
किई।

तीन बस्तुन से पृथिवी दुखित है हां चार का २१
भार उठा नहीं सक्ती। सेवक जब वह राजा हो २२
जाय और मूढ़ जब वह भोजन से तृप्त हो। निर्लज्ज २३
से जब वह ब्याही जावे और दासी से जो अपनी
स्वामिनी की अधिकारिणी होवे। चार हैं जो पृथिवी २४
पर छोटी हैं परन्तु अति बुद्धिमान हैं। चिउंटी बलवान २५
नहीं तथापि वे अपने लिये भोजन तपन में बटोरती

६ हैं । खरहा निर्बल है तथापि पहाड़ियों में अपनी मांद
७ बनाता है । टिड्डियों का राजा नहीं तथापि वे एकट्ठी
८ होके निकलती हैं । और मकड़ी जो अपने हाथों से
पकड़ती है और राजाओं के भवनों में है ।
९ तीन हैं जो सुरीति से चलती हैं हां चार की चाल
० सुन्दर है । सिंह जो पशुन में प्रबल है और किसी के
१ साम्ने से फिरता नहीं । पराक्रमी अश्व और बकरा
भी और राजा जिस के साथ लोग हैं ।
२ यदि तू ने मूढ़ता से आप को उभाड़ा अथवा यदि
तू ने बुरी चिन्ता किई तो हाथ अपने मुंह पर रख।
३ निश्चय दूध मथने से मक्खन निकलता है और नाक
मरोड़ने से लोहू निकलता है वैसा कोप को छेड़ने से
झगड़ा उठता है ।

एकतीसवां पर्ब्ब ।

१ लमूएल राजा के बचन अर्थात् वह भविष्यवाणी
जो उस की माता ने उसे सिखाई ।
२ हे मेरे बेटे क्या और हे मेरी कोख के बेटे क्या
३ और हे मेरी मनौतियों के बेटे क्या कहूं । अपना
बल स्त्रियों को मत दे और अपनी चाल उसे जो
राजाओं को नष्ट करती है ।
४ हे लमूएल राजाओं को मद्यपान करना ठीक नहीं
५ और तीक्ष्ण पान राजपुत्रों को उचित नहीं । न होवे
कि वे पीवें और व्यवस्था को भूल जायें और दुखित
६ के समस्त पुत्र के न्याय को पलट डालें । तीक्ष्ण पान
उसे देओ जो नाश होने पर है और दाखरस उन्हें जिन

का मन उदास है। जिसतें वह उसे पीये और अपने कङ्गालपन को भूल जाये और अपनी बिपत्ति को फिर चेत न करे।

अपना मुंह गूंगे के लिये खोल और उन के पुत्रों के पद के लिये जो नाश होने पर हैं। अपना मुंह खोलके धर्म्मन्याय कर और दीन और कङ्गाल के पद के लिये बिचार कर।

धर्म्मी स्त्री को कौन पा सक्ता है क्योंकि उस का मोल मोतियों से अधिक है। उस के पति का मन चैन से उस की प्रतीति करता है कि वह लाभ का आधीन न होगा। वह अपने जीवन भर उस्से भलाई करेगी और बुराई नहीं। वह ऊन और सन ढूंढ़ती है और अपने हाथों से बाञ्छा के साथ कार्य्य करती है। वह ब्योपारियों के जहाज़ों के समान है अपना भोजन दूर से ले आती है। और वह रात रहते हुए उठती है और अपने घराने को भोजन देती है और अपनी कन्याओं को भाग देती है। वह एक खेत की चिन्ता करती है और उसे ले लेती है अपने हाथों के फल से दाख की बाटिका लगाती है। वह अपनी कटि को बल से कसती है और अपनी भुजाओं को पोढ़ करती है। उस को जान पड़ता है कि मेरा ब्योपार भला है रात को उस का दीपक नहीं बुझता। वह तकले पर अपने हाथ चलाती है और उस के हाथ अटेरन पकड़ते हैं। वह कङ्गाल की ओर अपना हाथ बढ़ाती है हां वह अपना हाथ आधीन की ओर फैलाती है।

२१ वह अपने घराने के लिये पाला से नहीं डरती क्योंकि
२२ उस के समस्त घराने लाल बस्त्र पहिने हैं । वह अपने
लिये बूटा काढ़े हुए का ओढ़ना बनाती है उस का
२३ बस्त्र पीताम्बर और बैंजनी है । उस का पति प्रसिद्ध
है जब वह फाटकों में देश के प्राचीनों के सङ्ग बैठता
२४ है । वह झीना कपड़ा बनाती है और बेचती है और
२५ कटिबन्ध ब्योपारियों को सौंपती है। बल और प्रतिष्ठा
उस का पहिराव है और आनेवाले दिनों में आनन्दित
२६ होगी । वह अपना मुंह बुद्धि से खोलती है और उस
२७ की जीभ में दया की व्यवस्था है । वह अपने घराने
की चाल को अच्छी रीति से देखती है और आलस
२८ की रोटी नहीं खाती । उस के बालक उठते हैं और
उसे धन्य कहते हैं उस का पति भी उठता है और उसे
२९ सराहता है । बहुतेरी बेटियों ने अच्छे कार्य्य किये हैं
३० परन्तु तू उन सब से उत्तम है । सुशीलता छली है
और सुन्दरता बृथा परन्तु वह स्त्री जो परमेश्वर से
३१ डरती है सराही जायेगी । उसे उस के हाथों का फल
देओ और उसी के कार्य्य फाटकों में उसे सराहें ॥